अवेस्ता हओम यश्त एवं बेहिस्तन

शिलालेखीय प्राचीन फ़ारसी

लेखिका एवं सम्पादिका

डॉ० शारदा चतुर्वेदी

कुलपति डॉ० मण्डन मिश्र की प्रस्तावना से अलङ्कृत

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

विश्वविद्यालय-रजतजयन्ती-ग्रन्थमाला

[२५]

अवेस्ता ह्वोम यश्त एवं बेहिस्तून शिलालेखीय प्राचीन फ़ारसी

कुलपति डॉ० मण्डन मिश्र की प्रस्तावना से अलङ्कृत

लेखिका एवं सम्पादिका

डॉ० शारदा चतुर्वेदी

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

UNIVERSITY-SILVERJUBILEE-GRANTHAMĀLĀ

[Vol. 25]

AVESTĀ HAOMA YAŚTA EVAṀ BEHISTANA ŚILĀLEKHĪYA PRĀCĪNA FĀRASĪ

FOREWORD BY

DR. MANDAN MISHRA

VICE-CHANCELLOR

Written & Edited by

DR. SHARDA CHATURVEDI

Reader in the Bhāṣāvijñāna Department

Sampurnanand Sanskrit University

Varanasi

VARANASI

1997

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi.

o

Published by—
Dr. Harish Chandra Mani Tripathi
Publication Officer,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221 002.

o

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221 002.

o

First Edition, 500 Copies
Price Rs. 100. 00

o

Printed by—
VIJAYA PRESS,
Sarasauli, Bhojubeer
Varanasi.

विश्वविद्यालय–रजतजयन्ती–ग्रन्थमाला

[२५]

अवेस्ता हओम यश्त एवं बेहिस्तन शिलालेखीय प्राचीन फ़ारसी

कुलपति डॉ० मण्डन मिश्र की प्रस्तावना से अलङ्कृत

लेखिका एवं सम्पादिका

डॉ० शारदा चतुर्वेदी

उपाचार्या, भाषाविज्ञान-विभाग

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

वाराणसी

२०५४ वैक्रमाब्द १९१९ शकाब्द १९९७ ख्रैस्ताब्द

अनुसन्धान-प्रकाशन-पर्यवेक्षक —
निदेशक, अनुसन्धान-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी ।

□

प्रकाशक —
डॉ० हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी
प्रकाशनाधिकारी,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी–२२१ ००२.

□

प्राप्ति-स्थान —
विक्रय-विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी–२२१ ००२.

□

प्रथम संस्करण, ५०० प्रतियाँ
मूल्य—१००=०० रूपये

□

मुद्रक —
विजय-प्रेस
सरसौली, भोजूबीर
वाराणसी

समर्पित

डॉ० मण्डन मिश्र

कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

प्रस्तावना

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की विभिन्न धाराओं का अध्ययन-अध्यापन रहा है। आज भी यहाँ एक ओर वेद और उसके अङ्गों, आस्तिक और नास्तिक दर्शनों, तन्त्र, आगम, व्याकरण, ज्यौतिष, साहित्य, धर्मशास्त्र, पौरोहित्य, तुलनात्मक धर्मदर्शन, भाषाविज्ञान, शिक्षाशास्त्र आदि शास्त्रों का अध्यापन होता है, साथ ही फ्रेंच, जर्मन, रसियन, चीनी, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं तथा श्रमण-विद्याओं का अध्ययन / अध्यापन भी होता है। अवेस्ता का वैदिक वाङ्मय और संस्कृत-भाषा के साथ सम्बन्ध सर्वथा स्वीकृत है। वैदिक भाषा का प्रत्यक्ष प्रभाव इस पर देखा जा सकता है। बहुत कम विद्वानों ने इस विषय में काम किया है और अभी बहुत काम करना शेष है।

ये प्रसन्नता का विषय है कि इस विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान विभाग की उपाचार्या **डॉ० शारदा चतुर्वेदी** ने एक संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर इस उपेक्षित क्षेत्र की ओर अध्येताओं का ध्यान आकृष्ट किया है। हिन्दी और संस्कृत अर्थों के साथ अवेस्ता के अध्ययन को प्रस्तुत कर लेखिका ने इसको सर्वजन-सुलभ बनाने का प्रयास किया है। **श्रद्धेय आचार्य श्री करुणापति त्रिपाठी, श्री भोलाशंकर व्यास, श्री भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी** 'वागीश शास्त्री' ने अपने संक्षिप्त वक्तव्यों में विषय का संक्षिप्त दिग्दर्शन कर पाठकों का उपकार किया है। इसके लिए मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ और इसकी लेखिका **डॉ० शारदा चतुर्वेदी** को बधाई देता हूँ। पुस्तक के उत्कृष्ट प्रकाशन में विश्वविद्यालय के प्रकाशनाधिकारी **डॉ० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी** तथा 'विजय-प्रेस' के सञ्चालक **श्री गिरीश चन्द्र** ने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है, वे धन्यवाद के पात्र हैं।

वाराणसी
मार्गशीष-पूर्णिमा
वि० सं० २०५४

मण्डन मिश्र
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

अवेस्ता

हओम यश्त

एवं

बेहिस्तन शिलालेखीय

प्राचीन फ़ारसी

भूमिका

सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति का साधन वाणी मानव को पशुपक्षियों से व्यावृत्त करती है। प्रकृति का यह महनीय एवं मननीय अवदान मानवीय बुद्धि को विशद बनाने के साथ-साथ विवेक-शक्ति को जागरित करता है। संभाषण से गुजरते हुए ध्वनिसंकेतों के समुदाय ने कालान्तर में भाषा का स्वरूप धारण किया। सांसारिक भाषाएँ अनेक वर्गों में विभाजित हैं। भारतीय, ईरानी, स्लावोनिक और यूरप देश की भाषाएँ समान परिवार की मानी गई हैं। ईरान भूभाग भारत और यूरप के मध्य अवस्थित है। उसकी पूर्वी (आग्नेय) सीमा हिंगलाज तीर्थ से संसक्त है, ऐशानी सीमा गन्धार है। दोनों देशों की प्राचीन भाषाओं में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। परस्पर आदान-प्रदान और संक्रमण की संभावनाओं का अपलाप नहीं किया जा सकता। भारतीय वाङ्मय में इसके स्पष्ट संकेत मिलते हैं। भारतवर्ष के पश्चिम भाग में आर्यों की अनेक शाखाएँ फैली थीं। भारत देश के निवासी यदि भारत को 'आर्यावर्त' कहते थे, तो गन्धार (अफगानिस्तान) के पश्चिम भाग के निवासी अपने देश को '···· ऐर्यो' (आर्यों का देश) कहते थे। इसी से अद्यतन 'ईरान' नाम विकसित हुआ है। महाभारत और पाणिनीय काल में वल्ख या वाह्लीक 'कपिश गान्धार' के नाम से प्रसिद्ध था। यह भारतवर्ष का 'बफर स्टेट' स्कन्धावार या रक्षाकवच बनता था। यद्यपि भारतीय पश्चिमी सीमाओं पर आज भारत का कोई 'बफर स्टेट' अवशिष्ट नहीं रह गया है, तथापि आर्यभाषाओं की संबन्धशृङ्खला अद्यावधि अविच्छिन्न बनी है।

प्राचीन काल में ईरान के १. पर्शु, पार्स या पारस (ईरानी खाड़ी के समीप), २. पर्थिया, पारत (पारद), पार्थव या पह्लव तथा ३. बैक्ट्रिया, वाह्लीक या बलख (पूर्वी भाग) नामक प्रान्त मुख्य थे। जिस प्रान्त के वीरों की मुख्यता रहती थी, उसी प्रान्त के नाम से संपूर्ण देश की ख्याति होने लगती थी। उसी प्रान्त की भाषा शीर्षण्य बनकर राष्ट्रभाषा कहाती थी। जब

पर्शु, पार्स या पारस के वीरों की वीरता के कारण पारस के नाम से संपूर्ण ईरान 'फारस' कहा जाने लगा, तब उसकी 'फारसी भाषा' राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित हो गई। सासानीय सम्राटों के समय पर्थिया (पह्लव) की मुख्यता के कारण ईरान की राष्ट्रभाषा और लिपि का नाम 'पहलवी' पड़ गया था। पह्लवों ने ई० पू० द्वितीय शताब्दी में सीसतान की तरफ से बिलोचिस्तान होकर बोलन की घाटी से शकों और पर्थिया वालों के साथ ही साथ सिन्ध और पंजाब पर आक्रमण किया था। भारत में पह्लवों का राज्य सन् ४५ में समाप्त हुआ माना जाता है। पारसियों की मूल धर्मपुस्तक 'अवेस्ता' की टीका और अनुवाद के रूप में जितने प्राचीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, वे अधिकांश पहलवी भाषा में ही निबद्ध हैं। सासानीय सम्राटों के समय यही राज्यभाषा थी।

अवेस्ता को भाषा ईरान के पूर्वी प्रान्त बेक्ट्रिया, वाह्लीक या बल्ख की भाषा थी, जो तदानीन्तन भारतवर्ष को पश्चिमी सीमा पर अवस्थित उसके स्कन्धावार गन्धार से सटा था। प्राचीन भारत से दो बार निष्क्रमण कर भारतीयों का भारत से सटे पश्चिमी भूभाग में निवास हुआ था। इसके दो प्रमाण भारतीय वाङ्मय में प्राप्त होते हैं। पुराणों में वर्णित है कि प्रजापति दक्ष की संततियों को भारत से बाहर भेजने में देवर्षि नारद का हाथ रहा आया है। वेदाभ्यासी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों का उपवीत संस्कार यदि यथासमय नहीं किया जाता था, तो प्राचीन भारत में ऐसी सन्ततियों को समाजबहिष्कृत करने का नियम था। मनुस्मृति में संकेत मिलता है कि संस्कारलोप के कारण भारतीय क्षत्रियजातियाँ पश्चिम जाकर 'पारद' और 'पहलव' बन गईं। पारसियों में उपवीत संस्कार की प्रथा विद्यमान है। किन्तु उपवीतसूत्र वामस्कन्ध पर धारण न कर मौञ्जोबन्ध की भाँति कटि में परिवेष्टित किया जाता है (द्रष्टव्य-अवेस्ता २६ तथा उसकी टिप्पणी)। अवेस्ता में सोम, सवन, यजन, अग्निसंस्कार, स्तोत्र आदि का वर्णन पढ़कर ऋग्वेद-संहिता के सूक्तों का स्मरण हो आता है। भारतीयों की तरह वे यज्ञकर्ता तो नहीं हैं पर अग्निपूजक अवश्य हैं। कैस्पियन सागर के निकट अजरबैजान में 'बाकू' नामक स्थान पारसियों की अग्निपूजास्थली है। वहाँ ज्वालादेवी के मन्दिर की भाँति स्वतः प्रकट अग्निज्वाला विद्यमान है। वहाँ हिन्दू व्यापारियों के शिलालेख भी उत्कीर्ण हैं।

पूर्वी ईरान या भारत के पश्चिमी भाग की भाषाओं का वैदिक संस्कृत से उसी प्रकार का संबन्ध रहा आया है, जैसा वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का। भारेनीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रहस्यों के उद्घाटक भाषिक संबन्धों की दृढ़मूलता हमें 'अवेस्ता' और प्राचीन फारसी के अतिरिक्त पश्चिमोत्तर भारत की आधुनिक ईरानी बोलियों में भी परिलक्षित होती है।

ध्वनिपरिवर्तन के नियमों को अनुगत कर लेने पर अवेस्ता भाषा की वैदिक संस्कृतच्छाया स्पष्ट होने लगती है। इस प्रकृत पुस्तक 'अवेस्ता' हओम यस्न ९ की सम्पादिका श्रीमती डॉ० शारदा चतुर्वेदी ने संस्कृत से अवेस्ता में ध्वनिपरिवर्तन के कुछ विशिष्ट नियमों का उल्लेख षष्ठ पृष्ठ पर किया है। परिवर्तन के तृतीय प्रकार में बताया गया है कि संस्कृतभाषा का 'स' अवेस्ता में 'ह' के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यथा संस्कृत–सिन्धु > अवे० हिन्दु; सं० शर्व > अवे० हर्व > आधुनिक फारसी–हर (प्रत्येक या सब)। सकार से हकार की ओर जाने वाली यह प्रवृत्ति ग्रीकभाषा में भी पाई जाती है। यथा–सप्त > हप्त। सम्प्रति हिन्दी भाषा में प्रयुक्त हप्ता, माह, हमराज इत्यादि शब्द यद्यपि संस्कृतभाषा के सप्ताह, मास, समरहस्य इत्यादि शब्दों के अपभ्रष्ट फारसी शब्द हैं, तथा भारतीय जनसामान्य में संस्कृत शब्दों की अपेक्षा हप्ता, माह और हमराज का ही अधिक प्रचलन है।

आज के लगभग चौबीस वर्ष पूर्व पाकिस्तान में नियुक्त ईरान के सांस्कृतिक विद्वान् (Cultural Attachy) अली ए० जाफरी ने उनके द्वारा सम्पादित और फारसी लिपि में मुद्रित 'अवेस्ता' की एक पुस्तिका मुझे भेंट की थी। वे ऋग्वेदसंहिता के मन्त्रों के साथ 'अवेस्ता' की गाथाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते थे। उनका कथन था कि भारतीयों को 'हिन्दु' बनाने का श्रेय ईरान को ही है। उन्होंने यह भी प्रतिपादित किया कि हरोयू < सरयू और हरहुती > सरस्वती नदियाँ भी मूलतः उनके देश में प्रवाहित हो रही हैं। आर्यसंस्कृति ईरान से प्रवाहित होकर भारत आई है। भारतीयों ने ईरानी हकार के स्थान पर सकार का उच्चारण गृहीत किया है। ईरान के धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता' में सर्वप्रथम 'हप्तहिन्दवः' प्रयुक्त हुआ है, जिसको ऋग्वेदसंहिता में 'सप्तसिन्धवः' के रूप में गृहीत कर लिया गया है।

श्रीजाफरी पाश्चात्त्य विद्वानों की 'भारतीय आर्यों का बाहर से आकर भारत में प्रवेश' की घिसीपिटी मान्यता के परिप्रेक्ष्य में ईरान से ऋग्वेदिक आर्यों के भारत में प्रविष्ट होने की पुष्टि मुझसे कराना चाहते थे। वैदिक यज्ञों में सवन और उपवीत आदि का सांस्कृतिक प्रभाव ईरान के पश्चिमभागीय या पार्श्व-वर्ती देशों तक नहीं फैल पाया। केवल खत्ती भाषा में कुछ वैदिक देवताओं के नाम ही उपलब्ध हुए हैं।

यह सत्य नहीं है कि सकार की हकार में परिवर्तित होने की प्रवृत्ति ईरानी भाषाओं की अपनी मौलिक विशिष्टता है। यह प्रवृत्ति वैदिक और लौकिक संस्कृत में उपलब्ध होने के साथ-साथ भारत के मरुस्थलीय भूभागों में यथावत् प्रतिष्ठित है। श्रौतसूत्रों में सरितः>हरितः पाठभेद मिलता है। स्वपिषि>स्वपिहि, सेवितासे>सेविताहे, असम्>अहम् इत्यादि उदाहरण संस्कृत में द्रष्टव्य हैं, जहाँ सकार के स्थान पर हकार उपलब्ध होता है। पश्चिमी मारवाड़ एवं पुंछ में पैसा को आज भी पैहा और साथी को हाथी बोला जाता है। अनधीतव्याकरण मरुस्थलनिवासी पुरोहितों के विषय में एक मनोरञ्जनपूर्ण उपहास प्रसिद्ध है कि ऐसे पुरोहितों से आशीर्वाद ग्रहण करने में सावधानी बरतनी चाहिए, जिनके मुख से 'शतायुः' के स्थान पर 'हतायुः' उच्चरित होने पर अर्थ का अनर्थ हो सकता है—

आशीर्वादं न गृह्णीयान्मरुस्थलनिवासिनाम्।
शतायुरिति वक्तव्ये हतायुरिति कथ्यते॥

हकार के सकार में परिवर्तित होने का एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं होता। इसलिए यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि अवेस्ता की भाषा वेदकालिक संस्कृत का अपभ्रष्ट रूप है। यह भी यथार्थ नहीं है कि संस्कृत का सकार अवेस्ता में सदा हकार में ही परिवर्तित होता है। पद का मध्यवर्ती 'स' कभी-कभी 'ह' में परिवर्तित नहीं होता। यथा—

संस्कृतच्छाया—'खिन्नम् अस्य मनः कृणुधि'
अवेस्तागाथा—'स्कॅन्दम् षे मनो कॅरॅनूइधि' (२८ गाथा)

उक्त गाथा में 'अस्य' का परिवर्तन 'षे' के रूप में हुआ, 'अहे' या 'हे' के रूप में नहीं। इसके अतिरिक्त आवेस्तिक भाषा की पूर्ववर्तिता के विपक्ष में

उक्त गाथा का 'अस्य' शब्द उत्तम निदर्शन है। अवेस्ता का 'षे' विकसित होकर 'अस्य' का रूप धारण नहीं कर सकता। किन्तु संस्कृत का 'अस्य' विकसित होकर सहजतः 'षे' में परिवर्तित हो सकता है।

वैदिक वाङ्मय, अवेस्ता, प्राचीन और नवीन फारसी का तुलनात्मक अध्ययन निस्सन्देह दोनों संस्कृतियों के छिपे रहस्यों को उद्घाटित करने में सहायक बनेगा। यद्यपि दोनों संस्कृतियों के धर्म का तुलनात्मक अनुशीलन लम्बे समय से होता आ रहा है, तथापि इस दिशा में अभी ऐसे अनेक अछूते, अननुसंहित और रहस्यमय पक्ष अनुद्घाटित पड़े हैं जो अनुसन्धायकों का आह्वान कर रहे हैं।

ईरान से भागकर पारसी समुदाय ने भारत के पश्चिमी भाग गुजरात और महाराष्ट्र में शरण ली। उसके पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'जेन्द-अवेस्ता' नामक ग्रन्थ जर्मनी से सन् १८५२-५४ ई० में प्रोफेसर एन्० एल्० वेस्टरगार्ड के सम्पादकत्व में आवेस्तिक लिपि में मुद्रित और प्रकाशित हुआ था। उसके पश्चात् सन् १८५३ ई० में डॉ० फ्रीड्रिश स्पीगल ने जर्मन भाषा में 'अवेस्ता दी हाइलिगेन श्रिफ्तेन देर् पर्सियन्' नामक पुस्तक जर्मनी के लाइप्त्सिश् नगर से प्रकाशित कराई। इसमें अवेस्ता मूल को आवेस्तिक तथा व्याख्या को पहलवी (मध्य ईरानी) लिपि में मुद्रित कराया गया था। सन् १८८८ ई० में तेहमुरस् दिनशाव जी अंकलेसरिया द्वारा संपादित 'अवेस्ता' मूल (यस्न, वीस्परत् और यश्त भाग मात्र) बंबई से अवेस्ता लिपि में प्रकाशित हुआ था। सन् १८८९-९६ ई० में प्रोफेसर कार्ल एफ्० गेल्डनर ने 'अवेस्ता द सेक्रेड् बुक्स् ऑव द पार्सीस्' पुस्तक को संपादित कर अवेस्ता लिपि में स्टुटगार्ट से प्रकाशित कराया। सन् १८९४ ई० में डॉ० लारेंस् एच्० मिल्स् द्वारा अनूदित मूल 'अवेस्ता' इसकी अपनी लिपि में प्रकाशित हुआ, जिसका नाम था—'गाथास् विद टेक्स्ट्स एंड ट्रांस्लेशन्'। सन् १८९६ में के० ई० कांगा के 'अवेस्ता टेक्स्ट्स् इन् गुजराती स्क्रिप्ट विद् गुजराती ट्रांस्लेशन्' का चतुर्थ संस्करण बंबई से प्रकाशित हुआ था। गुजरात में शरणार्थी बने पारसियों की गुजराती मातृभाषा हो गई थी। इसलिए इसके अनेक संस्करण निकले।

अवेस्ता के कुछ संस्करण रोमन् लिपि में प्रकाशित हुए। उनमें हेरमान् वेलर (१९३६ ई०), स्तिग् विकान्दर् (१९४१ ई०) आई० जे० एस्० तारापोरेवाला (१९५१ ई०) तथा इल्या गेर्शेविच् के संस्करण प्रसिद्ध हैं। इनमें पारसी महानुभाव श्री जहाँगीर सोराब जी द्वारा संपादित 'सिलेक्शंस् फ्राम अवेस्ता' ग्रन्थ प्रशंसनीय है। सोराब जी कलकत्ता में बैरिस्टर एँट लॉ तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में तुलनात्मक भाषाविज्ञान के प्रोफेसर थे। इनके द्वारा रचित अवेस्ता और संस्कृत शब्दों की वैदुष्यपूर्ण टिप्पणियों ने आवेस्तिक अनुशीलन को अग्रगामिता प्रदान की। संस्कृत के साथ तुलनात्मक 'अवेस्ता ग्रामर' इस दिशा में निश्चयतः एक महनीय प्रयास है।

आवेस्तिक, पहलवी, गुजराती और रोमन् लिपियों में जिस समय पारसियों के धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता' को प्रकाशित किया जा रहा था, उसी के उत्तरार्ध में सन् १९३४ ई० में डी० ए० वी० कालेज, लाहौर के प्राफेसर पण्डित राजाराम ने प्रथम बार पारसियों की धर्मपुस्तक 'अवेस्ता' का नागरी लिपि में संस्कृतच्छाया और हिन्दी अनुवाद के साथ विद्वत्तापूर्ण संपादन किया, जिसे दयानन्द एँग्लो-वैदिक कालेज, लाहौर ने प्रकाशित किया था। किन्तु निदर्शनार्थ इसमें केवल हओम यश्त-यस्न नामक नवम अध्याय पर ही कार्य किया गया था, जिसमें केवल बत्तीस गाथाएँ निबद्ध हैं। सैंतीस पृष्ठों के उपोद्घात में राजाराम ने अवेस्तो भाषानियमों और संस्कृत के साथ उसके तुलनात्मक व्याकरण पर पाण्डित्यपूर्ण विवेचन किया है। इसके ठीक बत्तीस वर्षों के पश्चात् सन् १९६२ ई० में वैदिक संशोधन मण्डल पूना ने संपूर्ण अवेस्ता के नागरीलिप्यन्तरण और उसके प्रकाशन द्वारा इस दिशा में स्तुत्य कार्य किया है। किन्तु कार्य यहीं पर समाप्त नहीं हो जाता। अब नागरो-लिप्यन्तरण संस्कृतच्छायाकार की प्रतोक्षा कर रहा है।

मैं जब सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में अनुसन्धान संस्थान का निदेशक था, तब उक्त विश्वविद्यालय के फारसा विभाग को अध्यापिका श्रीमती डॉ० शारदा चतुर्वेदी प्राचीन फारसी व्याकरण पर पुस्तक रचना के प्रसंग में समय-समय पर मुझसे परामर्श लेती रहती थीं। उक्त विश्वविद्यालय से प्रकाशित उनकी 'फारसी व्याकरण' पुस्तक पर मुझे प्रस्तावना लिखने का अवसर भी मिला। डॉ० चतुर्वेदी के उत्साह एवम् अध्यवसाय को परख कर

मैंने उन्हें संपूर्ण अवेस्ता पर संस्कृतच्छाया लिख देने का परामर्श दिया। उसके उत्तर में श्रीमती डॉ० चतुर्वेदी ने इस लघु पुस्तिका को जिज्ञासु पाठकों के समक्ष निदर्शनार्थ प्रस्तुत किया है। इसे श्लाघनीय रूप से उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में स्वरूप भेदों की चर्चा की गई है। हिन्दी अनुवाद के साथ अंग्रेजी अनुवाद इसकी विशेषता है। श्रीमती चतुर्वेदी ने शाब्दिक टिप्पणियों में अपने वैदुष्य का सफल प्रयोग किया है। वे बहुत-ही उपयोगी बन पड़ी हैं। मूल अवेस्ता की शब्दानुक्रमणी ग्रन्थाध्ययन में सहायक बनेगी।

ग्रन्थ के द्वितीय भाग के रूप में प्राचीन फारसी में लिखे बेहिस्तन शिलालेख (प्रथम) का नागरी लिपि में मूलपाठ, वाक्यानुसारी पाठ, उसकी संस्कृतच्छाया, व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ, अंग्रेजी-अनुवाद और प्राचीन फारसी शब्दानुक्रमणिका ने ग्रन्थ की उपयोगिता बढ़ा दी है। मुझे विश्वास है कि श्रीमती चतुर्वेदी 'अवेस्ता' के संपूर्ण यस्न (<यज्ञ) और वीस्परत् नामक प्रकरणों पर संस्कृतच्छाया प्रस्तुत करने के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाएँगी जो संस्कृत विश्वविद्यालय के स्वरूपानुरूप एवं गौरव संवर्धन में सहायक बनेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिज्ञासुजनों में यह पुस्तक अधिकाधिक समादृत होगी।

माघकृष्णाष्टमी,
२०५३ वै०
वाग्योगचेतनापीठम्
शिवाला, वाराणसी

भा० प्र० त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

भूमिका

प्राचीन भारतीय संस्कृति, इतिहास और भाषा-विज्ञान के अध्ययन में पारसी धर्मग्रन्थ अवेस्ता, प्राचीन फारसी के शिलालेखीय साहित्य और पहलवी साहित्य का अध्ययन आवश्यक जान पड़ता है। इस अध्ययन के बिना न तो प्रागैतिहासिक भारतीय इतिहास और संस्कृति की कुछ कड़ियाँ ही स्पष्ट हो पाती हैं और न प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (वैदिक) का ही पूरा परिज्ञान हो पाता है। इतना ही नहीं प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का जो विकास मध्य भारतीय आर्य भाषा या प्राकृत में मिलता है उसको समझने में भी प्राचीन ईरानी भाषा और विभाषा की जानकारी अतिरिक्त लाभदायक सिद्ध होती है। इस दृष्टि से भारतीय आर्य एवं भारोपीय के अध्येताओं के लिए अवेस्ता और प्राचीन ईरानी की जानकारी अनिवार्य बन जाती है। अवेस्ता धर्मग्रन्थ की भाषा जिसे भाषावैज्ञानिक अवेस्ता भाषा नाम देते हैं, वैदिक संस्कृत के इतने अधिक नजदीक जान पड़ती है कि कतिपय ध्वन्यात्मक या पद रचनात्मक परिवर्तन कर वैदिक मंत्र को मजे से अवेस्ता भाषा में और अवेस्ता गाथा को इसी तरह वैदिक मंत्र में परिवर्तित किया जा सकता है। यहाँ तक कहा जाता है कि अवेस्ता भाषा वेदों की भाषा के, कालिदास की भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक निकट है। पारसी संत ऋषि जरथुस्त्र ने अपनी गाथाओं में जिन प्राकृतिक शक्तियों की उपासना की है वे शक्तियाँ थोड़े परिवर्तन के साथ वैदिक ऋषियों की उपासना का भी विषय रही हैं। वहाँ के अहुरमज्दा वेदों में असुरो मेधावी रूप में उपलब्ध हैं जो वैदिक देवशक्ति इन्द्र का विशेषण है। अवेस्ता का हओम वेदों में सोम देवता के रूप में मिलता है। यह सर्वज्ञात है। इतना ही नहीं वृत्र नामक सर्परूपधारी दैत्य की इन्द्र द्वारा हत्या किये जाने का प्रसिद्ध रूपक अवेस्ता में भी उपलब्ध है और वेदों का विवस्वत पुत्र यम अवेस्ता में विवङ्हव का पुत्र यिम के रूप में मिलता है। इस तरह सांस्कृतिक पुराकथा शास्त्र और प्रतीक शास्त्र के अध्ययन की दृष्टि से भी वैदिक संस्कृत के अध्येता के लिए अवेस्ता का अध्ययन हो जाता है।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अवेस्ता भाषा छान्दस भाषा के इतनी समीप है कि स का ह, श का स, ष का श, ख, थ, फ का ख़ थ़, फ़, घ, ध, भ का ग, द, ब और ह का ज़ जैसे कतिपय ध्वन्यात्मक परिवर्तन कर देने मात्र से वैदिक संस्कृत शब्द प्राचीन फारसी शब्द बन जाते हैं। इतना ही नहीं, शब्द रूपों और धातु रूपों में वेदिक संस्कृत तथा अवेस्ता भाषा में इतनी अधिक समानता है कि इन्हें एक ही भाषा की दो बोलियाँ माना जा सकता है। इसीलिए तुलनात्मक भाषा-शास्त्रियों ने भारतीय आर्य और ईरानी की अलग-अलग शाखा न मानकर एक ही शाखा से निकली दो अलग-अलग टहनियाँ माना है।

अवेस्ता भाषा ईरान के पूर्वी प्रदेश की वह विभाषा है जिससे जरथुश्त्र (८०० ईसा पूर्व) ने अपने धार्मिक सूक्तों की रचना की है किन्तु इन पूर्वी विभाषा के अतिरिक्त प्राचीन ईरानी को पश्चिमी विभाषा भी थी जो कुछ बाद के (ईसा पूर्व ६०० के आस-पास) ईरानी शहंशाहों के शिलालेखों में मिलते हैं जिनमें दारिउश का बेहिस्तुन शिलालेख अधिक प्रसिद्ध है। आगे चलकर ईरानी भाषा का मध्ययुगीन स्वरूप तीन विभाषाओं में उपलब्ध है। पहलवी जिसमें अवेस्ता का टीका ग्रन्थ .जेन्द उपलब्ध है और शोगदियाना तथा ट्रान्सओक्सीयाना की बोलियाँ क्रमशः शोरदी तथा शक जिनमें छिटपुट बौद्ध साहित्य मिला। भाषा वैज्ञानिकों का यह सब साहित्य प्रायः रोमनलिपि द्वारा उपलब्ध है। पूना से प्रकाशित अवेस्ता की तीन खण्डों में नागरीलिपि में यह धर्मग्रन्थ उपलब्ध है किन्तु उसमें संस्कृत छाया, व्याख्या तथा भाषा-वैज्ञानिक टिप्पणियाँ न होने के कारण वह दुरूह बन गया है। श्री राजाराम शास्त्री द्वारा अवेस्ता के नवम यस्न का संस्कृत छाया के साथ प्रकाशन किया गया था किन्तु वह अत्यधिक पुराना पड़ चुका है और उसका सम्पादन तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक दृष्टि से नहीं किया गया है। ऐसी स्थिति में

तुलनात्मक भारत-ईरानी तथा भारतीय भाषा-विज्ञान के भारतीय छात्रों के लिए बड़े दिनों से अवेस्ता के इस प्रसिद्ध सूक्त नवम यस्न (हओम यश्त) के वैज्ञानिक पद्धति पर संपादित संस्करण की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। मुझे हर्ष है कि डॉ० शारदा चतुर्वेदी ने बड़े परिश्रम से इस कार्य को पूरा किया। मैं एतदर्थ इन्हें बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि ये भारत-ईरानी भाषाशास्त्र की और दिशाओं में भी हिन्दी के माध्यम से अपना अध्ययन प्रस्तुत करेंगी, जिससे इस विषय के अध्यापकों और छात्रों का समान लाभ होगा।

डॉ० भोला शंकर व्यास
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी–५

विजयादशमी
२०५३ वै०

दो शब्द

भारत-ईरानी भाषा आर्य परिवारोय 'शतम्' वर्ग की एक प्रमुख भाषा है। इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं—(१) भारतीय आर्य-भाषाएँ और (२) ईरानी भाषा। इसी ईरानी भाषा के अंतर्गत अवेस्ता का स्थान आता है। भारत-ईरानी-आर्य-परिवार का आर्य-भाषा-परिवार में कदाचित् सर्वाधिक महत्त्व है। इसका कारण यह है कि इसी परिवार की भाषाओं में आर्य भाषा परिवार का सबसे पुरातन वाङ्मय सुरक्षित है। ऋग्वेद-संहिता ही प्राचीन आर्य-भाषा-परिवार का सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ है। यह भी कहा जा सकता है कि भारत-एशिया-योरप-महाद्वीप में बिखरी हुई आर्यभाषा के पारिवारिक संबन्ध तथा एक परिवारता की परिकल्पना भो ऋग्वेद-संहिता मूल से संभव हुई।

इस परिवार की दो प्रमुख शाखाओं में ईरानी शाखा भी कम महत्त्व-शाली नहीं है। प्राचोन भारतीय प्रागैतिहासिक इतिवृत्त, संस्कृत और भाषा-शास्त्रीय अध्ययन-ानुशीलन में अवेस्ता, प्राचीन फारसी की शिलालेखीय सामग्री और पहलवी वाङ्मय का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक लगता है और सहायक भी जान पड़ता है।

प्राचीन अवेस्ता का संस्कृत भाषा की प्राचीनतम भाषा अर्थात् वैदिक (मुख्यतः ऋग्वेदीय) भाषा के साथ निकट का संबन्ध दिखाई देता है। दोनों भाषाओं का तुलनात्मक और भाषाशास्त्रीय अनुशीलन अत्यन्त रोचक और महत्त्व का सिद्ध होता है। कुछ ध्वन्यात्मक और पद-रचनात्मक पारस्परिक परिवर्त्तन करते हुए प्राचीन अवेस्ता और वैदिक भाषा के छन्दों या वाक्यों को आपस में रूपांतरित किया जा सकता है।

आर्य भाषा की भारत-ईरानो शाखा में ईरानी भाषाओं का उद्भव पहले हुआ अथवा भारतोय वैदिक भाषा का, यह मतभेद का विषय आज तक बना हुआ है। अधिकांश भाषावैज्ञानिक मानते हैं कि ईरानी शाखा की भाषाओं का जन्म अपेक्षाकृत प्राचीनतर है। पर व्यक्तिगत रूप से मुझे ऐसा

लगता है कि ऋग्वैदिक संस्कृत प्राचीनतम भाषा का स्वरूप है। उस रूप के वैकासिक ध्वनिविषयक एवं रूपविषयक (पदरचनात्मक) विकासपरक भौगोलिक कारणों से प्रभावित परिवर्तनों के होने पर अवेस्ता का विकास हुआ है।

दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि अवेस्ता भाषा—वैदिक संस्कृत की ईरानी प्राकृत या ईरानी अपभ्रंश है। 'ईरान' शब्द भी 'आर्याणाम्' से समुद्भूत हो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। ईरानी भाषा–छान्दस भाषा के जितनी निकट है—उस अवस्था में यह कल्पना संभव हो सकती है। हो सकता है कि यह मेरा भाषाविकासबोध पूर्णतः भ्रान्त ही हो। पर इस दिशा में भी अध्ययन अपेक्षित है। 'जिन्द' शब्द भी 'छन्दस्' का ईरानी-प्राकृतरूप हो सकता है और 'अवेस्ता' भी 'अभ्यास' का।

डॉ० शारदा चतुर्वेदी ने 'अवेस्ता' का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने 'अवेस्ता का व्याकरण' नामक लघु पर अत्यन्त महत्त्व का ग्रंथ भी हिन्दी में लिखा है।

'भारत-ईरानी' भाषाशाखाओं के छात्रों के लिए यह वर्त्तमान तुलनात्मक अध्ययन-पाठान्तरीकरण-मंडित-अवेस्ता के प्रसिद्ध सूक्त 'नवम यस्न' (हओम यश्त) का भाषावैज्ञानिक पद्धति के आधार पर सुसंपादित संस्करण निश्चय ही प्रशंसनीय है।

डॉ० शारदा चतुर्वेदी को इसके लिए साधुवाद है। मेरा विश्वास है कि अपने इस पथ के अनुशीलन को आगे बढ़ातो हुई डॉ० शारदा निश्चय इस दिशा में और भी महनीय ग्रन्थ लिखेंगी।

करुणापति त्रिपाठी
भूतपूर्व कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

माघकृष्णाष्टमी,
२०५३ वै०

लेखकीय

"फारसी धर्मग्रन्थ की मूल भाषा यूरोपीय विद्वानों के अनुसार 'जेन्द' नाम से पुकारी जाती है, लेकिन फारसी विद्वानों को यह मान्य नहीं। .... इस समय फारसी किताबों में फारसी धर्मग्रन्थ की भाषा के लिये कोई नाम नहीं पाया जाता है। लेकिन जब कभी .जेन्द शब्द का प्रयोग होता है तो यह पहलवी अनुवाद, टीका या व्याख्या के लिये प्रयुक्त होता है। और जब कभी केवल अवेस्ता (आविस्तक्) शब्द का प्रयोग किया जाता है तो फारसी धर्मग्रन्थ की मौलिक भाषा के लिये प्रयुक्त होता है। .जेन्द की भाषा पहलवी है, इसी कारण यह शब्द दूसरी भाषा के लिये प्रयुक्त नहीं हो सकता है। .... उचित शब्द न मिलने के कारण अवेस्ता भाषा के लिये अवेस्ता शब्द ही प्रयोग में लाया जा रहा है। भ्रम को दूर करने के लिये भाषा को बोलते समय हम .जेन्द शब्द को अलग कर देते हैं। इन कारणों के बावजूद भी हम फारसी-धर्मग्रन्थ के लिये .जेन्द अवेस्ता शब्द का ही प्रयोग करते हैं[1]।'

आर्य शाखा के दो प्रधान भेद हैं—ईरानी और भारतीय। ईरानी जाति एक आर्य जाति है और ईरान की प्रधान भाषा फारसी है जो कि एक आर्य भाषा है। उसके शब्दों एवं रूपों का संस्कृत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।

ईरानियों की मूल धर्म-पुस्तक 'अवेस्ता' है। वैसे कुछ साहित्य प्राचीन शिलालेखों के रूप में भी मिलता है। अवेस्ता भारोपीय परिवार के शतम्-वर्ग

1, The Parsis Essays on their sacred Language, Writings and Religion—Martin Haug. Page 67-68.

की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह पहलवी Abistak से निकला है। इस भाषा में संस्कृत के समान दो अवस्थाएँ पाई जाती हैं। पहली गाथा की अवेस्ता जो वैदिक संस्कृत की तरह आर्ष है और दूसरी परवर्ती (younger) अवेस्ता। परवर्ती (younger) अवेस्ता लौकिक संस्कृत के समान कम आर्ष मानी जा सकती है। अवेस्ता का महत्त्व केवल नृवंशविद्या, पौराणिक कथा एवं आदि साहित्य में ही नहीं है वरन् तुलनात्मक भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण से इसका विशेष महत्त्व भी है।

सम्पूर्ण अवेस्ता को निम्न भागों में बाँटा गया है। यस्न, विस्पर्द, यश्त, छोटे मूल सूत्र (Minor Texts), वेन्दिदाद् और ह्दो.ख्त नस्क से उद्धृत अंश इत्यादि। यस्न, विस्पर्द और वेन्दिदाद् भाग ही मुख्य अवेस्ता को रूप देते हैं।

यस्न में गाथा भाग सबसे पुराना है। गाथाएँ छन्दों में हैं और येपारसी ऋषि जरथुश्त्र का श्रीमुख वाक्य मानी जाती हैं।

विस्पर्द या विस्प्रत शब्द अवेस्ता वीस्पे रतवो शब्द से आया है जिसका अर्थ 'सभी देवताओं' से है। इसमें २४ अध्याय हैं जिसे कर्द (Karde) कहा जाता है और यह यस्न से सात गुना बड़ा है। इसमें सभी देवों का आह्वान एवं उपासना की गई है। इसी से इसका नाम विस्परद् पड़ा।

वेन्दिदाद् शब्द विदेव्दात् शब्द का भ्रष्ट रूप है जिसका अर्थ है 'देव-विरुद्ध नियम'। यह प्राचीन ईरानियों की धार्मिक, राजनैतिक और दण्ड-संहिता की धर्म-पुस्तक है। इसमें २२ अध्याय हैं जो फर्गर्ड्स (fargards) अर्थात् परिच्छेद कहलाते हैं। इसके मौलिक अंशों की प्रणाली में इतनी भिन्नता है कि इसे एक लेखक का मानना कठिन लगता है। कुछ भाग इसके बहुत

प्राचीन हैं जिन्हें १५०० ईसा पूर्व[1], ऋषि जरथुश्त्र के समय का माना जा सकता है। वेन्दिदाद् को एक प्रार्थना की पुस्तक के रूप में नहीं पढ़ते हैं। इसकी विषय-सूची कई तरह की है।

प्रथम फर्गर्द (परिच्छेद) में पृथ्वी की सृष्टि और विभिन्न देशों का वर्णन है। द्वितीय यिम के विषय में है। तृतीय परिच्छेद पृथ्वी की अच्छाई दिखाने वाले विषय से सम्बद्ध है और अन्य २१ फर्गर्द्स धार्मिक नियम एवं आदेश से सम्बद्ध हैं। बाईसवें फर्गर्द (परिच्छेद) में अहिमन के द्वारा लाई गई असंख्य बीमारियों का वर्णन एवं देवताओं के सन्देश से उनके उपचार का वर्णन है।

इस तरह से जरथुस्त्रियन्स (जरथुश्त्र द्वारा चलाये हुए धर्म को मानने वालों) की पवित्र धर्म-पुस्तक **'अवेस्ता'** है।

●

---

1. World Civilization, Page 90

डॉ० एस० वी० समदी के अनुसार जरथुश्त्र का समय ८वीं शताब्दी माना गया है। उर्मिया झील के पास इसी नाम की एक जगह भी है, जहाँ जरथुश्त्र का जन्म हुआ था।

—'ईरान का सांस्कृतिक इतिहास,' पृ० १२।

आत्म-निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड **अवेस्ता** एवं द्वितीय खण्ड **प्राचीन फारसी** (शिलालेखीय) से सम्बद्ध है। इस पुस्तक में अवेस्ता की संस्कृत छाया, उसका हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनुवाद एवं तुलनात्मक टिप्पणियाँ दी गई हैं। इस ग्रन्थ के पूर्व अवेस्ता का नागरी लिपि में तीन खण्डों में 'वैदिक संशोधन मण्डल, पूना' से प्रकाशन हुआ है, पर उसमें अवेस्ता की संस्कृत छाया नहीं दी गई है। नागरी लिपि में संस्कृत छाया के साथ अवेस्ता पर एक पुस्तक राजाराम शास्त्री ने लिखी थी, जो १९३४ में लाहौर से प्रकाशित हुई थी। परन्तु उसमें अवेस्ता का केवल संस्कृत छाया व अनुवाद ही दिया गया है। संस्कृत व अन्य भारोपीय भाषाओं की तुलनात्मक टिप्पणियों का उसमें भी अभाव है। प्रस्तुत पुस्तक में उसकी पूर्ति का प्रयत्न किया गया है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक की सहायता से विद्यार्थी एवं जिज्ञासु जन अवश्य कुछ लाभ उठा सकेंगे।

पुस्तक के द्वितीय खण्ड (बेहिस्तन शिलालेखीय प्राचीन फारसी) में बेहिस्तन शिलालेख प्रथम का वाक्यानुसारी पाठ, संस्कृत-छाया एवं शिलालेख प्रथम में आये हुए सभी शब्दों पर संस्कृत एवं अन्य सभी भारोपीय परिवार की भाषाओं के साथ तुलनात्मक एवं भाषावैज्ञानिक टिप्पणियाँ प्रस्तुत की गई हैं। साथ में स्थान-स्थान पर प्राचीन फारसी के इस कीलाक्षरी लिपि (Cuneiform Script) के गुण-दोष के विषय में भी निर्देश किया गया है।

पुस्तक के प्रथम खण्ड एवं द्वितीय-खण्ड के अन्त में वर्णवार क्रम में शब्द-सूची भी प्रस्तुत की गई है। प्रथम खण्ड में अवेस्ता में आये हुए सभी शब्दों की अवेस्ता-संस्कृत एवं संस्कृत-अवेस्ता दोनों रूपों में वर्णवार शब्द-सूची प्रस्तुत की गई है। यह विद्यार्थियों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखकर किया गया है। पुस्तक के द्वितीय-खण्ड के साथ बेहिस्तन शिलालेखीय भाग एक में आये सभी शब्दों की वर्णवार सूची प्रस्तुत की गई है।

इस पुस्तक के रचना प्रसङ्ग में संस्कृत विश्वविद्यालय के अनुसन्धान संस्थान के भूतपूर्व निदेशक **डॉ० भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी** 'वागीश शास्त्री' के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनके परामर्श एवं सहयोग के फलस्वरूप यह पुस्तिका परिष्कृत रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ। उन्होंने अवेस्ता के विषय में प्रकाशित साहित्य से परिचय कराया, 'ईरान का सांस्कृतिक इतिहास' (डा० एस० बी० समदी) उपलब्ध कराया तथा अन्य पुस्तकों की सहायता प्रदान की एवं पाण्डुलिपि का संशोधन किया।

मैं **डॉ० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी** प्रकाशनाधिकारी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन में पूरा सहयोग किया। साथ-साथ मुद्रणकर्ता विजय-प्रेस के संचालक **श्री गिरीशचन्द्र जी** को धन्यवाद प्रदर्शित करती हूँ, जिन्होंने बड़े धैर्य के साथ छोटे-छोटे भाषावैज्ञानिक चिह्नों को ध्यान में रखते हुए सतर्कता से मुद्रण कार्य को सम्पन्न किया।

शारदा चतुर्वेदी

अवेस्ता का महत्त्व

भाषा समाज की सम्पत्ति है, सम्पूर्ण अभिव्यक्ति चेतना एवं गति है। भाषा का प्रत्येक पद समाज के चरित्र का मापक है, मानसिक स्तर का मानदण्ड है। शब्द किसी न किसी भाव का द्योतक होता है, कर्म का वाचक होता है। भाषायी अध्ययन सामाजिक अध्ययन का मूल है।

विश्व की प्राचीन भाषाओं में अवेस्ता एवं प्राचीन फारसी अन्यतम हैं। अवेस्ता भाषा वैदिकी-भाषा की समरूपा सहोदरा है। दोनों के शरीर दो पर प्राण एक है, अभिन्न है। दोनों का इतिहास, भूगोल एक है, धर्म एक है या एक जैसा है। दोनों एक ही मानववर्ग आर्यजन की दो भिन्न शाखायें हैं। मूलतः ये दोनों हो शाखाएँ प्रथमतः एक थीं। उपासना पद्धतियों के अन्तर ने दोनों को दो वर्गों में विभाजित किया, परन्तु यह भेद कोई भेद नहीं होता है। अविस्तीय तथा वैदिक दोनों का देवशास्त्र लगभग समान है। देवशास्त्रीय दृष्टि से दोनों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। वैदिक ऐतिहासिक अध्ययन में, भाषायी अध्ययन में, दार्शनिक-चिन्तन मनन-क्षेत्र में, नैतिक मूल्यों में सर्वत्र अविस्तीय अध्ययन एक नये प्राण का संचार कर सकता है।

अविस्त साहित्य का ज्ञान मूल की ही पहचान है। मूल का ज्ञान एवं पहचान हो इसीलिये अवेस्ता का अध्ययन अपेक्षित है। वैदिक भाषा में ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनके अर्थ भारतीय परम्परा के माध्यम से निःसृत नहीं किये जा सके तब यूरोपीय विद्वानों की दृष्टि अवेस्ता एवं प्राचीन फारसी की ओर गई जिनमें वैदिक शब्दों के सदृश शब्द मिलते थे, यथा =अवे० देवाः, देवासः; अवे० नाम, प्रा० फा० नाम=सं० नाम; अवे० अस्पे=सं० अश्वे; अवे० दाइति=सं० दिति=अदिति (i. e. other than Diti); अवे०= नाङ्हइथ्य=सं० नासत्यौ; अवे० नाम, प्रा० फा० नाम=सं० नाम, लै० नामेन्, ग्रीक ओनोम्।

तुलनात्मक अर्थ के अनुशीलन के प्रसंग में अवेस्ता एवं पुरानी फारसी भाषाएँ बीच की महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं, यथा—अवे० पुथ्रो, प्रा० फारसी पुस्र

(पुस्स); सं० पुत्रः; अवे० मश्य, प्रा० फारसी मर्तिय, तु० सं० मर्त्य। गाथिक अवे० दवित्य, यंगर अवे० वित्य, तु० प्रा० फारसी दुवितीय, सं० द्वितीय। गाथिक अवे० इदी, यंग० अवे० इदि, तु० प्रा० फारसी इदिय्, सं० इहि, ग्रीक इथि। अवे० खुम्ब तु० सं० कुम्भ; अवे० हकॅरॅत् = सं० सकृत; प्रा० फारसी हकरम् चित् इत्यादि।

इसी को दृष्टि में रखकर इन दोनों प्राचीन भाषाओं का, जो वैदिक संस्कृत/संस्कृत के समकक्ष हैं, विश्व की अन्य भाषाओं से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इसी महत्त्व को दृष्टिगत करके ही सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में उक्त भाषाओं के विभाग को स्थापित करने का संकल्प लिया गया।

शारदा चतुर्वेदी

सङ्केत-सूची

अ० पु०	=	अन्य पुरुष
अवे०	=	अवेस्ता
आत्म०	=	आत्मनेपद
आ० पह०	=	आधुनिक पहलवी
आ० फा०	=	आधुनिक फारसी
अं०	=	अंग्रेजी
ऋ० सं०	=	ऋग्वेद-संहिता
गा० अवे०	=	गॉथिक अवेस्ता
गुज०	=	गुजराती
च०	=	चतुर्थी
तुल०	=	तुलना करो
तृ०	=	तृतीया विभक्ति
द्वि० वि०	=	द्वितीया विभक्ति
नपुं०	=	नपुंसकलिंग
पं० वि०	=	पंचमी विभक्ति
परस्मै०	=	परस्मैपद
पह०	=	पहलवी
पु०	=	पुंलिंग
प्र०	=	प्रचलित रूप
प्र० वि०	=	प्रथमा विभक्ति
प्र० पु०	=	प्रथम पुरुष
प्रा० फा०	=	प्राचीन फारसी
प्रा० भा० आ० भा०	=	प्राचीन भारतीय आर्य भाषा
प्रा० उ० जर्मन	=	प्राचीन उच्च जर्मन

फ्रें०	=	फ्रेंच
बं०	=	बंगाली
भारो०	=	भारोपीय
म० पु०	=	मध्यम पुरुष
म० भार० आर्य०	=	मध्य भारतीय आर्यभाषा
यंग० अवे०	=	यंगर अवेस्ता
लै०	=	लैटिन
लौ०	=	लौकिक संस्कृत
व०	=	वचन
ब० व०	=	बहुवचन
विशे०	=	विशेषण
वै०	=	वैदिक
ष० वि०	=	षष्ठी विभक्ति
स० वि०	=	सप्तमी विभक्ति
सं०	=	संबोधन, संस्कृत
सर्व०	=	सर्वनाम
सा० सं०	=	साहित्य संस्कृत
भारे०	=	भारेनीय (हिन्द ईरानियन)
भारो०	=	भारोपीय (हिन्द यूरोपीय)
*	=	काल्पनिक शब्दों का संकेत (hypothetical mark)
√	=	धातु (root) चिह्न
>	=	(becomes) हो जाता है (अर्थात् अमुक शब्द का अमुक भाषा से अमुक भाषा में अमुक रूप हो जाता है) इसके लिये यह चिह्न प्रयुक्त है
<	=	(comes from) आया है

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

प्राचीन-फारसी

प्रथम भाग

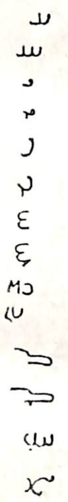
अवेस्ता

हओम यश्त–यस्न–१

प्राचीन ईरानियन भाषा

अवेस्ता और प्राचीन फारसी प्राचीन ईरानियन के अन्तर्गत आते हैं। अवेस्ता पूर्वी ईरान की भाषा है, जो कि पारसियों की पवित्र पुस्तक "अवेस्ता" में अवेस्तन लिपि में लिखी हुई है। प्राचीन फारसी पश्चिम या दक्षिण पश्चिम ईरान की भाषा है जो अखाइमेनियन राजाओं के कीलाक्षर शिलालेखों में है।

अवेस्ता में १४ स्वर हैं, जो नीचे अवेस्ता, नागरी एवं रोमन लिपि (Roman Script) में दिये जा रहे हैं।

अवेस्ता लिपि	नागरी लिपि	रोमन लिपि
	अ	*a*
	आ	*ā*
	इ	*i*
	ई	*ī*
	उ	*u*
	ऊ	*ū*
	अॅ	*ə*
	अॅ १	*ə̄*
	अे	*e*
	अे	*ē*
	ओ	*o*
	ओ	*ō*
	आो २	*å*
	आँ अर ३	*ą*

१. अॅ स्वर अधिकतर गाँथिक अवेस्ता में पाया जाता है।

२. आो स्वर अवेस्ता में एक विशिष्ट प्रकार का स्वर है। इसका उच्चारण आओ (āo) किया जाता है। अवेस्ता में प्रत्येक स्वर का उच्चारण अलग-अलग किया जाता है, (मिलाकर नहीं)।

३. अॅरॅ स्वर संस्कृत ऋ के समान है। यह सदैव एकाक्षर होता है।

व्यञ्जन

अवेस्ता में ३४ व्यञ्जन हैं। इन्हें नीचे अवेस्ता, नागरी एवं रोमन लिपि में लिखा जा रहा है।

अवेस्ता लिपि	नागरी लिपि	रोमन लिपि
𐬐	क्	k
𐬑	ख्[1]	x
𐬔	ग्	g
𐬖	घ्	γ
𐬢	ङ्	ŋ
𐬗	च्	c
𐬘	ज्	j
𐬦	ञ्	ṅ
𐬙	त्	t
𐬝	त्[2]	ṭ
𐬚	थ्	θ
𐬛	द्	d
𐬜	ध्	δ
𐬥	न्	n
𐬧	ट(न्)[3]	ṇ

१. ख्, (परसियन) फारसी ख (kh) के समान है।

२. त् सदैव पदान्त में आता है।

३. इस चिह्न के स्थान पर प्रस्तुत पुस्तक में न् का प्रयोग किया गया है।

अवेस्ता लिपि	नागरी लिपि	रोमन लिपि
𐬞	प्	p
𐬟	फ्	f
𐬠	ब्	b
𐬡	व़्	w
𐬨	म्	m
𐬪	य् ४	y
𐬫	य् ५	y
𐬭	र्	r
𐬬	व् ६	v
𐬎𐬎	व् ७	v
𐬱	श्	š
𐬴	ष्	ṣ̌
𐬳	श्	ś
𐬯	स्	s
𐬰	ज़् ८	z
𐬲	ज़् ९	ž

४. य्, अवेस्ता में पदादि में आता है।

५. य्, अवेस्ता में पद के मध्य में प्रयुक्त होता है।

६. व्, अवेस्ता में पदादि में आता है।

७. व्, अवेस्ता में पद के मध्य में आता है।

८. ९. मुद्रण में कठिनाई होने के कारण प्रस्तुत दोनों चिन्हों के लिये ज़् का ही प्रयोग यहाँ किया गया है।

अवेस्ता लिपि	नागरी लिपि	रोमन लिपि
𐬵	ह्	h
𐬓	ख़्व [१०]	x^v
𐬑	ख़्	x

अवेस्ता में स्वर पूर्ण रूप से अलग लिखे जाते हैं मात्रा रूप में नहीं (जैसे संस्कृत-हिन्दी में) ।

अवेस्ता पाठ में स्वराघात नहीं लिखे गये हैं जैसा कि वैदिक संस्कृत एवं ग्रीक में लिखे जाते हैं ।

अवेस्ता में व्यञ्जन संयुक्त होते हैं पर उनका रूप पूर्ण रहता है। अवेस्ता लिपि दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जाती है ।

---

१०. अवेस्ता का यह व्यञ्जन संस्कृत स्व के समान है ।
यथा अवेस्ता दख़्यु, संस्कृत दस्यु ।

विशेष—अवेस्ता स्वर एवं व्यञ्जन लिपि में पृष्ठ १ तथा २ पर मुद्रित वर्णों को कृपया निम्न प्रकार से समझें—

१. अवेस्ता स्वर अर३ को अॅरॅ पढ़ें ।

२, अवेस्ता के चतुर्थ व्यञ्जन (घ्) को रोमन लिपि में ग्रीक गामा (γ) की तरह समझें ।

३. अवेस्ता के दशम व्यञ्जन त् को नागरी लिपि में त्. समझें ।

संस्कृत एवं अवेस्ता के स्वरों में स्वरूप भेद

(१) संस्कृत अ अवेस्ता में चार रूपों में मिलता है—अ, अॅ, ए, ओ।

(२) संस्कृत ए का अवेस्ता में अए (aē), ओइ (ōi), ए (ē) रूप मिलता है और संस्कृत ओ का अओ (aō), ओ (ō), अॉउ (əu) अवेस्ता में हो जाता है।

(३) स्वरभक्ति अवेस्ता की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

(४) अवेस्ता में शब्दों के अन्त में दीर्घ ओ को छोड़कर अन्य कोई दीर्घ अक्षर नहीं आता है।

(५) अवेस्ता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें संयुक्ताक्षर संस्कृत की अपेक्षा बहुत अधिक होते हैं। इनमें से कुछ तो स्वर-संकोचन, स्वर-विस्तार (अर्थात् प्लुतीकरण) अपनिहिति आदि से बन जाते हैं और कुछ वास्तविक सन्ध्यक्षर होते हैं।

(६) अवेस्ता का आओ (ā̊) संयुक्ताक्षर संस्कृत के आस् और आन्त् के स्थान पर आता है। जैसे अवेस्ता daevā̊nghe = सं० देवासः; अवे० mazā̊ntəm = सं० महांतम्; अवे० pā̊tntō = सं० पांतः।

(७) अवेस्ता में आदि-विस्तार (अथवा आदि आगम) अक्षरापिनिहित (Prothesis), स्वरभक्ति (Epenthesis) और युक्त-विकर्ष (Anaptyxis) की भी प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे—

सं०	रिणक्ति	=	अवे०	^{i}rinaXti
सं०	अश्वेभ्यः	=	अवे०	aspaē^{i}byo
सं०	भरति	=	अवे०	bara^{i}ti
सं०	कृणोति	=	अवे०	kərənao^{i}ti

व्यञ्जनों की तुलना

(१) संस्कृत के क्, त्, प् (अल्पवर्ण श्वास वर्ण) अवेस्ता में X, θ, f ख्, थ, फ हो जाते हैं। ये ख, थ, फ कभी घर्षक होते हैं और कभी महाप्राण नादरहित अर्थात् श्वास वर्ण। जैसे सं० सत्य: = अवे० haiθyō; सं० स्वप्नम् = अवे० Xafnəm; सं० सखा (sakhā) = अवे० haXa; सं० गाथा (gāthā) = अवे० gaθa इत्यादि।

(२) संस्कृत के महाप्राण घ्, ध्, भ् अवेस्ता में अल्पप्राण ग्, द्, ब् हो जाते हैं और परवर्ती गाथा में कभी-कभी घर्षक वर्ण ग्, द्, व् (γ, δ, ω) भी मिलते हैं। जैसे—सं० जंघा = अवे० zanga; सं० धारयत् = अवे० dārayat; सं० भूमि = अवे० būmi; सं० दीर्घ: = अवे० δarəγō; सं० अभ्रम् = अवे० awrəm.

(३) संस्कृत स का सदा ह हो जाता है; जैसे सिन्धु, सर्व, सकृत् आदि का हिंदु, हौर्व, हकरत् आदि।

(४) संस्कृत अस् और आस् के स्थान पर अवेस्ता में कभी h और ngh पाया जाता है। जैसे सं० असु का अवेस्ता में अहु और अंघ्रु दो रूप होते हैं। पर यही अस् और आस् जब पदान्त में आते हैं तो अवेस्ता में ओ (ō) अथवा आओ (å) हो जाते हैं। जैसे सं० असुर: = अवे० Ahurō; सं० अश्व: = अवे० aspo; सं० गाथा: = अवे० gāθå; सं० सेनाया: = अवे० haēnayå इत्यादि।

(५) सघोष ऊष्म z और ź अवेस्ता में ही पाये जाते हैं, संस्कृत में नहीं। जैसे—सं० हस्त: = अवेस्ता zasto; सं० अहम् = अवे० azəm; सं० अहि: = अवे० azis इत्यादि।

(६) संस्कृत व्यञ्जनों के पाँच वर्गों में से टवर्ग (मूर्धन्य) अवेस्ता में नहीं होता है।

(७) तालव्य वर्ग में केवल च् और ज् होते हैं।

(८) अनुनासिक वर्ण पाँच होते हैं पर सब संस्कृत के समान नहीं होते हैं।

(९) जिस तरह प्राचीनतर वैदिक में ल का अभाव है उसी प्रकार अवेस्ता में भी ल बिलकुल नहीं मिलता है।

(१०) संस्कृत की तरह अवेस्ता सस्वर नहीं है। अवेस्ता में उदात्त बल का प्रयोग होता है।

(११) रूप-संपत्ति वैदिक और अवेस्ता में एक समान ही पाई जाती है।

(१२) संस्कृत एवं अवेस्ता दोनों में तीन वचन, तीन लिंग और आठ विभक्तियाँ होती हैं।

(१३) संस्कृत पंचमी विभक्ति का-आत् केवल अकारान्त शब्दों में लगता है पर अवेस्ता में यह विभक्ति अधिक व्यापक हो गई है। जैसे = सं० क्षत्रात् = अवे० Xsaθrat; सं० विशः = अवे० visat; सं० द्विषतः = अवे० tbisyantat.

(१४) अवेस्ता धातुएँ भी संस्कृत की तरह एकाक्षर होती हैं और उनमें सभी रूप पाये जाते हैं।

(१५) द्वित्व-जन्य (periphrastic) रूप अवेस्ता में नहीं पाये जाते।

(१६) अवेस्ता में तद्धित, कृदन्त समास आदि सब संस्कृत जैसे ही होते हैं। केवल वाक्य संधि का अभाव पाया जाता है। इसीलिये अवेस्ता में प्रत्येक शब्द दूसरे शब्द से बिन्दु के द्वारा पृथक् लिखा जाता है।

(१७) छन्द भी वैदिक छन्दों से मिलते हैं।

(१८) वाक्य रचना में भी बहुत कम भेद पाया जाता है।

हओम यश्त—यस्न ९

१. अवेस्ता—हावनीम् आ रतूम् आ

हओमो उपाइत् ज़रथुश्त्रॅम्

आत्रॅम् पइरि-यओज्दथॅन्तॅम् गा.थोस्च स्रावयन्तॅम्।

आ-दिम् पॅरॅसत् जरथुश्त्रो को नरॅ अही

यिम् अज़॑म् वीस्पहे अङ्हॅउश्
अस्त्वतो स्रअेश्तॅम् दादरॅस
ख्व्हे गयेहे ख्व्न्वतो अमॅषहे।

संस्कृत—सावनम् आ ऋतुम् आ, सोमः उपैत् जरथुश्त्रम्
अत्रिम् परियोर्दधन्तम् गाथाश्च श्रावयन्तम् ।
आ तम् पृच्छत् जरथुश्त्रः को नर असि
यमहं विश्वस्य असोः अस्थिवतः श्रेष्ठं ददर्श
स्वस्य गयस्य स्वन्वतो अमृतस्य ।

अर्थ—(सोम) सवन के समुचित समय पर सोम जरथुश्त्र के पास आया (जो) यजन के लिये अग्नि का संस्कार कर रहा था और गाथाओं को सुना रहा था। जरथुश्त्र ने उससे पूछा, हे नर! तू कौन है ? जिसको मैं समस्त शरीरधारियों से श्रेष्ठ, अपने अमर जीवन से देदीप्यमान देख रहा हूँ।

English Translation : Once at the time of oblation Soma came up to Zarthustra, who was preparing for worshiping the fire and who was chanting hymns. Zarthustra asked him—O hero! who art thou, whom I find the best of all corporeal beings and who is shining by his own immortal Vitality,

२. **अवे०**—आअत् मे अअेम पइत्यओख्त हओमो अषव दूरओषो
अजम् अह्मि जरथुश्त्र, हओमो अषव दूरओषो
आ माँम् यासङ्ह स्पितम फ्रा माँम् हुन्वङ्ह ख्वरॅतॅअे
अओइ माँम् स्तओमइने स्तूइधि
यथ मा अपरचित् सओश्यन्तो स्तवाँन् ।

सं०— आत् मे अयं प्रत्यवोचत् सोमो ऋतावा दुरोषः
अहमस्मि जरथुश्त्र सोमः ऋतावा दुरोषः
आ मां याचस्व स्पितम प्र मां सुनुष्व* स्वृतयै (अश्नवै)
अभि मां स्तोमनि स्तुहि
यथा मां अपरेचित् सोष्यन्तः स्तुवन् ।

अर्थ—तब मुझे (इस सोम ने) दिव्य नियमों वाले और दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ने उत्तर दिया। मैं हूँ हे जरथुश्त्र ! दिव्य नियमों वाला और दूर तक फैले हुए तेज वाला सोम। मुझसे (अपनी कामनाओं को) माँग। हे स्पित ! मुझे पीने के लिये बहा। मेरी स्तोत्रों में स्तुति कर, जिस प्रकार (पूर्व काल में) दूसरे सोष्यन्तों ने मेरी स्तुति की है।

English Tr. : Then Haoma, the righteous one and of far spreading radiance replied me, O Zarthustra ! I am Haoma, the righteous one and of far spreading radiance. O Śvetatam ! (O holy one) please earnestly desire me and press me for drinking Please praise me for worshiping just iike the other holy ones praised me.

३. **अवे०**—आअ.त् अओरु.त् जरथुश्त्रो। नमो हओमाइ

कसॅ थ्.वाँम् पओइर्यो हओम मश्यो

अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ

का अह्माइ अषिश् अॅरॅनावि

चि.त् अह्माइ जस.त् आयप्तॅम्।

सं०— आत् अवोचत् जरथुश्त्रः। नमः सोमाय।

कस्त्वां पूर्व्यः सोम मर्त्यः

अस्थिवत्यै सुनुत गेथायै

का अस्मै आशीः ऋणावि

किम् अस्मै गच्छत् आप्तम्।

अर्थ—तब जरथुश्त्र ने कहा—सोम को नमस्कार। हे सोम ! कौन (वह) पहला मनुष्य था (जिसने) शरीरधारी जीवलोक के लिये तुझे बहाया। इसकी कौन (सी) कामना पूर्ण हुई, इसको क्या लाभ मिला।

Eng. Tr. : Then Zarathustra told Salutation to Haoma, who was the first mortal worshipped you for the

sake of the corporeal world. What was the boon granted for him ? And what was the profit went to him ?

४. **अवे०**—आअत् मे अएम् पइत्यओख़्त
हओमो अषव दूरओषो
वीवङ्हाो माँम् पओइर्यो मश्यो
अस्त्वइथ्याइ हुनुत गएथ्याइ ।
हा अह्माइ आषिश् अॅरॅनावि
त.त् अहमाइ जस.त् आयप्तॅम्
य.त् हे पुथ्रो उस्-जयत
यो यिमो क्षएतो ह्वाँथ्.वो
ख़्वरॅनङ्हस्तॅमो जातनाँम्, ह्वरॅ–दरॅसो मश्यानाँम् ।
यत् कॅरॅनओत् अङ्हे क्षथ्राध अमर्षन्त पसुवीर
अङ्हओषॅम्ने आप उर्वइरे,
ख़्.वइर्याँन् ख़्.वरॅथॅम् अजयम्नॅम् ।

सं०—आत् मे अयं प्रत्यवोचत्
सोमः ऋतावा दुरोषः
विवस्वान् मां पूर्व्यो मर्त्यः
अस्थिवत्यै सुनुत गेथायै
सा अस्मै आशीः ऋणावि
तदस्मै गच्छत् आप्तम्
यदस्य पुत्र उज् जायत
यो यमः क्षित् सुवन्ता
स्वर्णवत्तमो जातानाम्, स्वर्दृशो मर्त्यानाम् ।
यत् कृणोत् अस्य क्षत्रादा अमरिष्यन्ता पशुवीरा
अशुष्यमाणे अबुर्वरे,
स्वरितवे स्वृतम् अजीयमानम्

अर्थ—तब मुझे दिव्य नियमों वाले और दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ने उत्तर दिया। विवस्वान् पहला मनुष्य था, जिसने मुझे शरीरधारी जीवलोक के लिये बहाया। इसकी यह कामना पूर्ण हुई, इसको यह लाभ हुआ कि इसके पुत्र उत्पन्न हुआ, जो यम (जनों का) शासक, बड़ा विजयी, उत्पन्न हुए लोगो में बड़ा तेजस्वी, मनुष्यों में सूर्य के समान था। जिसने अपने शासन काल में पशु और मनुष्यों को न मरने वाला, और जल तथा ओषधियों को न सूखने वाला बनाया, और प्रजाओं को खाने के लिये अक्षय (अखुट्ट) आहार बनाया।

Eng. Tr. : Then Haoma, righteous and of far spreading radiance told me this. Vivasvān was the first mortal who worshipped me for the sake of the corporeal world. That was the boon went to him and that was the profit granted to him. A son was born to him who was Yima, the ruler and possesser of great prosperity. He was most resplendent of created beings and he was just like sun among the mortals who made immortal men and animals in his kingdom and who made ever fresh water and vegitation. There was inexhaustible food to eat (in his kingdom).

५. अवे०—यिमहे क्ष.थ्रे अउर्वहे

नोइ.त् अओतॅम् आोङ्ह नोइ.त् गरॅमॅम्
नोइ.त् जउर्व आोङ्ह नोइ.त् मॅरॅथ्युश्
नोइ.त् अरस्को दअेवोदातो।
पन्चदस .फ्रचरोइथे
पित पुथ्रस्च रओधअेष्व कतरस् चि.त्
यवत .क्षयोइ.त् ह्वाँथ.वो
यिमो वीवङ्हतो पुथ्रो।

सं०—यमस्य क्षत्रे उर्वियस्य
नेत् ओद्म आस नेत् घर्मम्
नेत् जरा आस नेत् मृत्युः
नेत् रेषको देवधितः ।
पञ्चदश प्रचरेते
पिता पुत्रश्च रोहेष्वा कतरश्चित्
यावत् क्षयेत् सुवन्ता
यमो विवस्वतः पुत्रः ।

अर्थ—तेजस्वी यम के राज्य में न ही (अति) शीत था, न ही (अति) गर्मी, न ही बुढ़ापा था, न ही मृत्यु । न ही देवों को रची ईर्ष्या थी । पिता और पुत्र अपने चेहरों से हर एक पन्द्रह वर्ष के (प्रतीत होते हुए) फिरते थे, जब तक विवस्वान के पुत्र बड़े विजयी यम ने राज्य किया ।

Eng. Tr : In the kingdom of renowned Yima there was neither cold nor heat, neither old age nor death, and there was no enemy created by demons. When Yima, the son of Vivasvān, the, great victorious, ruled over (the world), at that time father and son both appeared just like fifteen.

६. **अवे०**—कर्स्-थ्वाँम् बित्यो हओम मश्यो
अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ
का अह्माइ अषिश् अॅरॅनावि
चि.त् अह्माइ जस.त् आयप्तॅम् ।

सं०—कस्त्वां द्वितीयः सोम मर्त्यः
अस्थिवत्यै सुनुत *गेथायै
का अस्मै आशीः ऋणावि
किम् अस्मै गच्छत आप्तम् ।

अर्थ—हे सोम ! कौन वह दूसरा मनुष्य हुआ जिसने जीव लोक के लिये तुझे बहाया। कौन सी उसकी कामना पूर्ण हुई। उसको क्या लाभ हुआ।

Eng. Tr. : O Soma ! who was the second man worshipped you for the sake of the material world ? What was the boon granted for him ? And what was the profit went to him ?

७. **अवे०**—आअत् मे अअेम् पइत्यओख़्त

हओमो अषव दूरओषो।

आथ्व्यो माँम् बित्यो मश्यो

अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ।

हा अह्माइ अषिश् अरनावि

हा अह्माइ जस.त् आयप्तॅम्।

यत हे पुथ्रो उस्-जयत

वीसो सूरयाो थ्रअेतओनो।

सं०—आत् मे अयम् प्रत्यवोचत् सोमः ऋतावा दुरोषः।

आप्त्यो मां द्वितीयो मर्त्यः अस्थिवत्यै सुनुत* गेथायै।

सा अस्मै आशीः ऋणावि तत् अस्मै गच्छत् आप्तम्।

यदस्य पुत्रः उज् जायत विशः शूरायाः त्रैतानः।

अर्थ—तब इस दिव्य नियमों वाले और दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ने मुझे उत्तर दिया। आप्त्य दूसरा मनुष्य था जिसने मुझे जीवलोक के लिये बहाया। यह उसकी कामना पूरी हुई। यह उसको लाभ पहुँचा। जो इसके घर शूर वीर वैश्य का पुत्र त्रैतान हुआ।

Eng. Tr. : Then Haoma the righteous one and of far spreading radiance told me. This Athwa is the second man who worshipped me for tha sake of the material world. That was the boon granted to him and that was the profit went to him,

that a son was born to him, named Thrayatamn, who belong to the family of brave ones or valiant ones.

८. अवे०—यो जन.त् अजीम् दहाकॅम्

थ्रिज.फनॅम् थ्रिकमॅरॅधम्

क्ष्वश्-अषीम् हजङ्र-यओक्ष्तीम्

अशओजङ्हॅम् दअेवीम् द्रुजम्

अघॅम् गअेथाव्यो द्व्रन्तॅम्

.फ्रच कॅरॅन्त.त् अङ्रो मइन्युश्

अओइ यॉम् अस्त्वइतीम् गअेथॉम्

मह्.र्काइ अषहे गअेथनॉम् ।

सं०—यो अहन् अहिम् दंशकम्

त्रिजम्भनं त्रिकमूर्धानम्

षडक्षम् सहस्रयुक्तिम् अत्यौजसं दैवीम् द्रुहम्

अघं जगतीभ्यो द्रवन्तम्

प्राक् कृन्तत् अङ्रोमन्युः

अभि याम् अस्थिवतीम् *गेथाम्

मरकाय ऋतस्य जगतीनाम् ।

अर्थ—जिसने डसने वाले साँप को मारा जो तीन जबड़ों वाला, तीन खोपड़ियों वाला, छः आँखों वाला, हजार युक्तियों वाला बड़ा बलवन्त देओ द्रोह था, प्रजाओं के लिये पापमय और श्रद्धाहीन था। जिस बड़े बलवन्त देओ द्रोह को अङ्रोमन्यु ने काट गिराया, जो कि शरीरधारी सृष्टि के प्रतिकूल था, जो ऋत की सृष्टि का विनाशक था।

Eng. Tr. Who smote Azj Dahāka who was with three jaws, three skulls, six eyes and with thousand wiles and who was an opponent devilish power possessing great strength and who was harmful for the world being far from the righteousness. And

whose mightiest opponent power was hewed out by Angro-Mainyu which was towards the corporeal world for the destruction of the creation of Aṣa (truthfulness).

९. **अवे०**—कसॅ-थ्वाँम थ्रित्यो हओम मश्यो
अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ ।
का अह्माइ अषिश् अॅरॅनावि
चि.त् अह्माइ जस.त् आयप्तॅम् ।

सं०—कस्त्वां तृतीयः सोम मर्त्यः
अस्थिवत्यै सुनुत *गेथायै ।
का अस्मै आशीः ऋणावि
किम् अस्मै गच्छत् आप्तम् ।

अर्थ—हे सोम ! वह कौन तीसरा मर्त्य हुआ जिसने जीवलोक के लिये तुझे बहाया । उसकी क्या कामना पूर्ण हुई । उसको क्या लाभ पहुंचा ।

Eng. Tr. O Soma ! who was the second man worshipped you for the sake of the material world ? What was the boon granted for him ? And what was the profit went to him.

१०. अवे०—आअ.त् मे अअेम् पइत्यआख.त
हओमो अषव दूरओषो
थ्रित सामानाँम् सॅविश्तो थ्रित्यो माँम् मश्यो
अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ ।
हा अह्माइ अषिश् अॅरॅनावि
त.त् अह्माइ जस.त् आयप्तॅम्
य.त् हे पुथ्र उस्–जयोइथे उर्वाक्षयो कॅरॅसास्पश्च ।
त्कअेषो अन्यो दातो–राजो
आअत् अन्यो उपरो–कइर्यो
यव गअेसुश् गधवरो ।

सं०—आत् मे अयं प्रत्यवोचत् सोमः ऋतावा दुरोषः

त्रितः सामानां शविष्ठः तृतीयो मां मर्त्यः

अस्थिवत्यै सुनुत *गेथायै ।

सा अस्मै आशीः ऋगावि

तत् अस्मै गच्छत् आप्तम्

यदस्य पुत्रा उज् जायेते

उर्वाक्षः कृशाश्वश्च अतिचक्षा अन्यो धातराजः

आत् अन्य उपरिकार्यः युवा केशवो गदाभरः ।

अर्थ—तब इस दिव्य नियमों वाले और दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ने मुझे उत्तर दिया। त्रित सामवंशियों का महाबली तीसरा मनुष्य था, जिसने मुझे शरीरधारी जीवलोक के लिये बहाया। इसकी यह कामना पूरी हुई इसको यह लाभ पहुँचा कि इसको दो पुत्र जन्मे उर्वाक्ष और कृशाश्व। उनमें से एक दूरदर्शी धर्मशास्त्रकार हुआ और दूसरा ऊँचे कार्यों वाला, युवा, घुँघराले बालों वाला गदाधारी हुआ।

Eng. Tr. Then Homa of far spreading radiance told me this Trita was the third man worshipped me for the sake of the material world. That was the boon went to him and that was the profit granted to him that two sons were born to him namely Urvākṣaya and Karasaspa, one is teacher as well as law giver, another is a young man with supreme activity and with curly hair as well as club-bearer.

११. **अवे०**—यो जन.त् अजीम् स्र्वरॅम्

यिम् अस्पो-गरॅम् नॅरॅ-गरॅम्

यिम् वीषवन्तॅम् जइरितॅम् यिम् उपइरि वीश् अरओध.त्

आरश्त्यो-बरॅज जइरितॅम् ।

यिम् उपइरि कॅरॅसास्पो

अयङ्ह पितूम् पचत
आरपिथ्वि.वनॅम् .ज्र्वानॅम् ।
त.फ्स.त् च हो मइर्यो रु.वास.त् च
.फ्राँश् अयङ्हो .फ्रस्परत्
यअेश्यन्तीम् आपॅम् परोङ्हात् ।
पराँश् तरश्तो अपतचत्
नइरे-मनाो कॅरॅसास्पो ।

सं०—यो अहन् अहिम् शृङ्गभरम्

यम अश्व-गरम्	नृ-गरम्
यम् विषवन्तम् हरितम्	यम् उपरिविषम अरोहत्
ऋष्टि बर्हः हरितम्	यम् उपरि कृशाश्वः
अयसा पितुम् पचत	आरपिथ्वनं त्र्ययाणम् ।
तप्सत् च स मर्यः स्विद्यत् च	
प्राक् अयसा प्रास्फुरत्	यस्यन्तीः अपः परास्यत्
प्राङ् त्रस्तो अपातश्चत्	नरमनाः कृशाश्वः ।

अर्थ—जिस (कृशाश्व) ने सींगों वाले नाग को मारा । जो घोड़ों को निगलने वाला और मनुष्यों को निगलने वाला था, बड़ा जहरीला और हरा था और जिस पर कृशाश्व ने दोपहर के समय लोहे (के बर्तन) से अपना अन्न पकाया ।

तब वह नाग ज्यों ही गर्म हुआ और उससे पसीना बहने लगा, वह उस लोहे (के बर्तन के नीचे) से सरक गया और उबले हुए जलों को फेंक दिया । कृशाश्व डर गया और पीछे को भाग गया । यद्यपि वह बड़ा मनस्वी था ।

Eng. Tr. Karesaspa who was of heroic heart killed the horned serpent who was a horse devourer as well as men-devourer, who was poisonous and of yellow colour, and upon

whom yellow poison arose up to the height of a spear and upon whom Kersaspa cooked food by an iron pot through out the midday. That serpant became hot and began to sweat and sprang up before the iron pot and up set the boiling water and fled away out of fear.

१२. अवे०—कसॅ-थ.वॉम् तूइर्यो हओम मश्यो
अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ ।
का अह्माइ अषिश् अॅरॅनावि
चि.त् अह्माइ जस.त् आयप्तॅम् ।

सं०— कस्त्वां तुरीयः सोम मर्त्यः
अस्थिवत्यै सुनुत *गेथायै ।
का अस्मै आशीः ऋणावि
किम् अस्मै गच्छत् आप्तम् ।

अर्थ—हे सोम ! वह चौथा मनुष्य कौन था जिसने तुझे शरीरधारी जीवलोक के लिये बहाया । इसकी क्या कामना पूरी हुई इसको क्या लाभ पहुँचा ।

Eng. Tr. ; O Soma ! who was the fourth mortal who worshipped you for the sake of the material world. What was the boon granted for him ? And what was the profit went to him ?

१३. अवे०—आअ.त् मे अअेम् पइत्यओरु.त
हओमो अषव दूरओषो ।
पोउरुषस्पो माँम् तूइर्यो मश्यो
अस्त्वइथ्याइ हुनूत गअेथ्याइ ।
हा अह्माइ अषिश् अॅरॅनावि
त.त् अह्माइ जस.त् आयप्तॅम्

य.त् हे तूम उस्-जयङ्ह
तूम् अॅरॅज.वो जरथुश्त्र
न्मानहे पोउरुषस्पहे वीदअेवो अहुर-त्कअेषो ।

सं०—आत् मे अयं प्रत्यवोचत्
सोमः ऋतावा दूरोषः
पूर्वश्वो मां तूर्या मर्त्यः
अस्थिवत्यै सुनुत *गेथायै
सा अस्मै आशीः ऋणावि
तत् अस्मै गच्छत् आप्तम्
यत् अस्य त्वं उज्जायथाः
त्वं ऋजो जरथुश्त्र
दमस्य पुर्वश्वस्य विदेवो असुराति चक्षाः ।

अर्थ—तब इस दिव्य नियमों वाले और बड़े तेजस्वी सोम ने मुझे उत्तर दिया। पुर्वश्व चौथा मनुष्य था, जिसने शरीरधारी जीवलोक के लिये मुझे बहाया। यह उसकी कामना पूरी हुई यह उसको फल प्राप्त हुआ जो उसके तुम उत्पन्न हुए। तू जो, हे सरल जरथुश्त्र! पुर्वँश्व के घर में देओं का विरोधी और अहुर के धर्म का द्रष्टा है।

Eng. Tr. ; Then Haoma of far spreading ardiance told me. Purusaspa was the fourth mortal, worshipped me for the sake of the material world. That was the boon granted to me and that was the profit went to him. That, O Zarthustra, the righteous one ! You were born to him in the house of Purusaspa, who was hostile to demons and who was the follower of the doctrine of Ahurmazda.

१४. अवे० —स्र.तो अइर्येने वअेजहि
तूम् पओइर्यो जरथुश्त्र

अहुनॅम् वइरीम् .फ्स्रावयो

वीबॅरॅथ्.वन्तॅम् आख्.तूइरीम्

अपरॅम् .ख़्रओ.ज्येह्य .फ्स्रूइति ।

सं०—श्रुतः आर्यायने बीजे त्वं पूर्व्यः जरथुश्त्र

अहुनम् वइर्यम् प्रश्रावयः विभृतवन्तम् आतूर्यम्

अपरम् क्रुष्टतरा प्रश्रुती ।

अर्थ—विख्यात सारे आर्यायन बीज (आर्यों के मूल घर) में तू पहला है। हे जरथुन्त्र ! जिसने अहुनवइर्य का विभाग युक्त चार बार उच्चारण किया और फिर एक बार बहुत ऊँची श्रुति के साथ उच्चारण किया।

Eng. Tr. ; O Zarthustra ¡ You have chanted the prayer of Ahunam-vairyam four times in Airyan Vaijangh observing pausing as well as loudly.

१५. अवे०—तूम ज़ॅमर् - गूजो आकॅरॅनवो

वीस्पे दअेव जरथुश्त्र

योइ पर अह्मा.त् वीरो-रओध

अपतयॅन् पइति आय जॅमा ।

यो अओजिश्तो यो तन्चिश्तो

यो थ्.वक्षिश्तो यो आसिश्तो

यो अस् वॅरॅथ्रजाँस्तमो

अबव.त् मइनिवो दामाँन्

सं०—त्वं ज्मागुहः आकृणोः

विश्वान् देवान् जरथुश्त्र

ये परा अस्मात् वीररोहाः

अपतयन् प्रति अयाज्मा ।

य ओजिष्ठः यस्ते त्वञ्चिष्ठः

यष् त्वक्षिष्टः यः आशिष्ठः
यो अतिवृत्रहन्तमः
अभवत् मन्य्वोः धामानि।

अर्थ—हे जरथुश्त्र ! तुमने सारे देवों को भूमि के नीचे छिप जाने के लिये विवश किया। जो इससे (तेरे आने से) पहले मनुष्यों के आकार में इस पृथ्वी पर सर्वत्र फिर रहे थे। तू बड़ा बलवन्त, बड़ा मनस्वी, बड़ा कारीगर और बड़ा फुर्तीला है। जो दोनों आत्माओं के लोक में शत्रुओं को मार हटाने वाले में सबको पीछे छोड़ गया है।

Eng. Tr. : You, O Zarthustra ! made all the demons to hide beneath the earth who were running upon this earth in human shape and who was strongest, bravest as well as most active and swift, and also victorious among the creation of Mainyus.

१६. **अवे०**—आअत् अओरु.त जरथुश्त्र
नॅमो हओमाइ वङ्हुश हओमो
हुधातो हओमो अरश्दातो
वङ्हुश् दातो बअेषज.यो
हुकॅरॅ.फश् ह्वरॅश् वॅरॅथ्रजाो
जइरि-गओनो नाँम्याँशुस्
यथ रु.वरॅन्ते वहिश्तो
उरुनअेच पाथ्मइन्योतॅमो।

सं०—आत् अवोचत् जरथुश्त्रः
नमः सोमाय वसुः सोमः
सुधितः सोमः ऋतधितः
वसुधितः भैषज्यः

सुकृप् सुवृक् वृत्रहा
हरिगुणो नम्रांशुः
यथा स्वर्तवे वसिष्ठः
उर्वाणे च पथिमत्तमः ।

अर्थ–तब जरथुश्त्र ने कहा, सोम को नमस्कार, जो बड़ा उत्तम, उत्तम रचना वाला, ऋत से उत्पन्न हुआ, उत्तम शक्तियों से रचा हुआ, स्वास्थ्य देने वाला, सुन्दर आकृति वाला, उत्तम कर्मों वाला, शत्रुओं को मारने वाला, सुनहरे रंग वाला, झुकी हुई डालियों वाला, पीने वाले के (शरीर के) लिये बड़ा उत्तम और आत्मा के विषय में सीधे रास्ते पर ले जाने वाला है ।

Eng. Tr. : Then Zarathustra told salutation to Haoma ! Haoma is beneficient, well-built, truth-created, created by excellence, health-giving, beautiful, active, victorious, of yellow-colour, as well as with bending twigs. As it is good for drinking so also it is a good guide for soul.

१७. अवे०—नी ते ज़ाइरे मधॅम् म्रुये
नी अमॅम् नी वॅरॅथ्रध्नॅम्
नी दस्वरॅं नी वऍषज़ॅम्
नी .फ्रदथॅम् नी वरॅदथॅम्
नी अओजो वीस्पो-तनूम्
नी मस्तीम् वीस्पो-पऍसङ्हॅम् ।
नी त.त् यथ गऍथाह् वसो-.क्षथ्रो .फ्रचराने
त्बऍषो-तउर्वाो द्रुजॅम्–वनो ।

सं०—नि ते हरे मदं ब्रुवे
नि अमं नि वृत्रघ्नम्

नि दस्वरं नि भेषजम्
नि प्रदधम् नि वर्धम्
नि ओजो विश्वतनुम्
नि मतिं विश्वपेशाम्
नि तत् यथा गेथास्वा वशक्षत्र: प्रचराणि
द्विष्टुर्वाण: द्रुहंवन: ।

अर्थ—हे सुनहरे रंग वाले ! मैं तुझसे माँगता हूँ, मस्ती, शक्ति, शत्रुओं का वध, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य के उपाय, आगे रहना, वृद्धि, सारे शरीर में भर जाने वाला उत्साह और सब प्रकार की मति (सर्वतोमुखी मति), जिससे कि मैं सब लोकों में स्वाधीन वीरों वाला, द्वेषियों को दबा लेने और द्रोहियों को जीतने वाला होकर विचरण करूँ ।

Eng. Tr. : I request of thee O Golden one ! to grant me fervour, power, victory, health, curative power, prosperity, growth, strength for entire body as well as wisdom possessing all kinds of brilliance so that I can move out on earth having unlimited power overcoming enemity and conquering unbelievers.

१८. अवे०—नी तत् यथ तउर्वयेनि,
वीस्पनाँम् त्बिष्वताँम् त्बअेषाो
दअेवनाँम् मश्यानाँम्च
याथ्वाँम् पइरिकनाँम् च
साथ्राँम् कओयाँम् कर.फ्नाँमच्
मइर्यनाँम् च चथ्वरॅ-जन्ग्रनाँम्
हअेन्याोस्च पॅरॅथु-अइनिकयाो
दवाँइथ्याो पताँइथ्याो ।

सं०—नि तत् यथा तूर्वयाणि
विश्वेषां द्विष्वतां द्विषाम्
देवानां मर्त्यानां च
यातूनां परिकाणां च
शास्तृणां कवानां कृपणानां च
मर्याणां च द्विजङ्घानाम्
वृकाणां च चतुर्जङ्घानाम्
सेनायाश्च पृथ्वनीकायाः
दवन्त्याः पतन्त्याः ।

अर्थ—और मैं यह माँगता हूँ कि सारे द्वेषियों के द्वेषों के, देवों के और मनुष्यों के, जादूगरों के और जादूगरनियों के, दुष्ट शासकों के, कवों और कृपणों के, दो जंघाओं वाले सांपों के और दो जंघाओं वाले धर्मध्वजियों के, चार जंघाओं वाले भेड़ियों के, और बहुत बड़े अग्रभाग वाली, दौड़ती और उड़कर आ पड़ती हुई सेना के ऊपर मैं सदा विजयी होऊँ ।

Eng. Tr. : So that I may overcome all types of enemities of demons, of mortals, magicians, witches, tyrants, of wise persons (who never sees the truth) of that person who never hears the truth, of two footed serpents, of two creatures who violate truth, of four footed wolves, of armies having extensive front those are deceiving and in swift motion.

१९. अवे०—इमॅम् थ्वाँम् पओइरीम् यानॅम्
हओम जइध्येमि दूरओष ।
वहिश्तॅम् अहूम् अषओनाॅम्
रओचङ्हॅम् वीस्पो-ख़्वाथ्रॅम् ।
इमॅम् थ्वाम् बितीम् यानॅम्

हओम जइध्येमि दूरओष
द्वतातॅम् अत्र्हाोसॅ तन्वो
इमॅम् थ्वाँम् थ्रितीम् यानॅम्
हओम् जइध्येमि दूरओष
दरॅघो-जीतीम् उश्तानहे ।

सं०—इमं त्वां पूर्व्यं यानम्
सोम गद्यामि दुरोष
वसिष्ठम् असुम् ऋतान्वाम्
रोचसं विश्वस्वनित्रम्
इमं त्वां द्वितीयं यानम्
सोम गद्यामि दुरोष
ध्रुवतातिमस्याः तनोः
इमं त्वां तृतीयं यानम्
सोम गद्यामि दुरोष
दीर्घ जीतीम् उश्तानस्य

अर्थ—हे दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ! यह मैं तुझसे पहली दात माँगता हूँ । ऋत (सत्य) पर चलने वालों का जीवन सबसे उत्तम, चमकता हुआ, सम्पूर्ण तेज से परिपूर्ण हो । हे दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ! यह मैं तुझसे दूसरी दात माँगता हूँ । (मेरे) इस शरीर के लिए स्वास्थ्य हो । हे दूर तक फैले हुए तेज वाले सोम ! यह मैं तुझसे तीसरी दात माँगता हूँ । (मेरे) आध्यात्म बल का दीर्घ जीवन हो ।

Eng. Tr. : This is the first boon O Haoma ! which I request you (to grant me) that the best and shining world full of happiness for the righteous persons. This is the second boon O Haoma ! which I request you (to grant me) that the sound health of this body.

This is the third boon O Haoma ! which I request you (to grant me) that longivity of this life.

२०. अवे०—इमॅम् थ्वाँम् तूइरीम् यानॅम्
हओम जइध्येमि दूरओष
यथ अअेषो अमवाो
थ्राँफ़्घो .फ्रक्ष्ताने ज़्ॅमा पइति
त्बअेषो-तउर्वाो द्रुजॅम्-वनो
इमॅम् थ्.वाँम् पु.ख्धॅम् यानॅम्
हओम जइध्येमि दूरओष
यथ वॅरॅथ्रजाो वनत् पॅषनो
.फ्रक्ष्ताने ज़्ॅमा पइति
त्बअेषो-तउर्वाो द्रुजॅम् वनो ।

सं०— इमं त्वां तुरीयं यानम् सोम गद्यामि दुरोष
यथैषः अमवान् तृप्तः प्रतिष्ठानि ज्मयाप्रति
द्विष्टुर्वाणो द्रुहंवनः इमं त्वां पञ्चथं यानम्
सोम गद्यामि दुरोष यथा वृत्रहा वनत् पृतनः
प्रतिष्ठानि ज्मया प्रति द्विष्टुर्वाणो द्रुहंवनः ।

अर्थ—हे तेजस्वी सोम ! यह मैं तुझसे चौथी दात माँगता हूँ । मैं अपनी इच्छानुसार शक्तियों से पूर्ण और (लोगों को सन्मार्ग पर लाता हुआ अपने आप में) तृप्त हुआ, द्वेषियों को दबाता हुआ और द्रोहियों को जीतता हुआ भूमि पर प्रतिष्ठा पाऊँ ।

हे महातेजस्वी सोम ! यह मैं तुझसे पाँचवीं दात माँगता हूँ कि रुकावटों को दूर करता हुआ मैं शत्रुओं की सेनाओं को जीतूँ और द्वेषियों को दबाता हुआ और द्रोहियों को जीतता हुआ पृथ्वी पर प्रतिष्ठा पाऊँ ।

Eg . Tr. : This is the fourth boon O Haoma, of far spreading radiance ! which I request you to grant me that I may move out on this world being vigourously powerful and satisfied, overcoming enemity and conquering unbelievers,

This is the fifth boon O Haoma, of far spreading radiance ! which I request you to grant me that I may move out on the earth being victorious and winning the battle as well as overcoming enemity and conquering unbelievers.

२१. **अवे०**—इमॅम् थ्वाँम् क्ष्तूम् यानॅम्
हओम जइध्येमि दूरओष ।
पउर्व तायूम् पउर्व गधॅम्
पउर्व वॅह्.र्कॅम् बूइध्योइमइधे ।
मा-चिश् पउर्वो बूइध्यओत नो
वीस्पे पउर्व बूइध्योइमइधे ।

सं०— इमं त्वां षष्ठं यानम् सोम गद्यामि दुरोष
पूर्वम् तायुम् पूर्वम् गधम् पूर्वम् वृकं बुध्येमहि
माकिः पूर्वो बुध्येतनो विश्वे पूर्वम् बुध्येमहि ।

अर्थ—हे महातेजस्वी सोम ! यह मैं तुझसे छठी दात माँगता हूँ कि हम चोर से पहले, घातक से पहले, भेड़िये से पहले जागें अर्थात् सावधान हो जायें । हमसे पहले कोई न जागे, किन्तु हम सबसे पहले जागें ।

Eng. Tr. : This is the sixth boon O Haoma, of far spreading radiance ! which I request you (to grant me) that we may become aware of the robber, murderer and wolf beforehand, but nobody may become aware of us beforehand we may become aware of all beforehand.

२२. अवे०—हओमो अऐइबिश् योइ अउर्वन्तो
हित त.क्षॅन्ति अरनाउम्
ज़ावरॅ अओजोस्च व.क्षइति ।
हओमो आज़ीज़नाइतिबिश्
दधाइति .क्षअेतो-पुथ्रीम्
उत अषव-.फ़्रज़इन्तीम् ।
हओमो तअेचि.त् योइ कतयो
नस्को-.फ़्रसाोङ्हो आोङ्हन्ते
स्पानो मस्तीम्च ब.क्षइति ।

सं०— सोमः एभ्यो ये अर्वन्तः
सितः तक्षन्ति अरणम्
जवः ओजश्च भक्षति
सोमः आजीजनन्तीभ्यः
दधाति क्षयत्पुत्रम्
उत ऋतावत् प्रजातिम्
सोमः ते चित् ये कतयः
नस्कप्रशासाः आसते
शुनमति च भक्षयति ।

अर्थ—सोम इनको बल और पराक्रम देता है, जो शूरवीर, सुशिक्षित घोड़ों को, संग्राम (जीत) की ओर बढ़ाते हैं। सोम मर्यादानुसार गर्भ धारण करने वाली स्त्रियों को, शासन करने वाले वीर पुत्र और धर्म पर चलने वाली संतति देता है। सोम इनको कल्याण और प्रज्ञा देता है जो नस्कों का प्रशासन (उपदेश) करते रहते हैं।

Eng. Tr. : Haoma allows the well trained horses to run to the battle and he grants them power and strength. Haoma

grants brilliant as well as righteous sons to those who bear children. Haoma grants spiritual wisdom to those house holders who are engaged with studying the scriptures.

२३. **अवे—** हओमो ताोस्चित्. याो कइनीनो

आोङ्हइरे दरॅघॅम् अङ,वो
हइथीम् राधॅमूच बक्षइति
मोषु जइध्यम्नो हु.खतुश् ।

सं०— सोमः ताश्चित् याः कनीनाः

आसिरे दीर्घम् अग्रुवः
सत्यं राधं च भक्षयति
मक्षु गद्यमानः सुक्रतुः ।

अर्थ—सोम उन सबको जो युवतियाँ दीर्घ काल तक कुवाँरी रहती हैं एक सच्चा कान्त देता है, ज्यों ही वह (उत्तम) अच्छे कर्मों वाला, याचना किया जाता है ।

English Tr. : Haoma, the powerful one, grants truthful husbands quickly to those girls who remain maiden for a long time when he is requested,

२४. **अवे०—**हओमो तम्ॅ चि.त् यिम् कॅरॅसानीम्

अप.क्षथ्रॅम् निषाधयत्.
यो रओस्त .क्षथ्रां-काम्य
यो दवत नोइ.त् मे अपाँम्
आथ्रव अइ.वश्तिश् वॅरॅध्ये दञ्हव चरा.त् ।
हो वीस्पे वॅरॅधिनाँम् वना.त् ।
नों वीस्पे वॅरॅधिनाँम् जनात्

सं०— सोमः तं चित् यं कृशानिम्
अपक्षत्रं निषादयत्
यो अरुद्ध क्षत्रकाम्यया
यो धवत नो इत् मे अपाम्
अथर्वा अभ्यस्तिः वृद्धये देशेष्वा चरात्
स विश्व-वृद्धीनां वनात्
नि विश्व-वृद्धीनां हनात्।

अर्थ—सोम ने निःसन्देह उस कृसानि को राज्यबल से हटाकर नीचे बिठा दिया (सिंहासन से उतार दिया), जो कि राज्यबल कामना में बढ़ा हुआ था, जिसने (धर्माचार्यों को) धमकाया कि कोई अभ्यासी (शास्त्र वेत्ता) पुरोहित इससे आगे मेरे देश में लोगों की वृद्धि के लिए मत फिरे। (चाहे) वह हमारी सारी वृद्धियों को जीत ले, हमारी सारी वृद्धियों को नष्ट कर देवे।

Eng. Tr. : Haoma dethroned Karasāni, who arose with a desire for sovereignty and proclaimed "hereafter no priest should move out in the country for propogation of religious doctrines." He is the conquerer of all the prosperity. He is the destroyer of all the prosperity.

२५. **अवे०**—उश्त-ते यो ख़्.वा अओजङ्ह
वसो.क्षथ्रो अहि हओम
उश्त-ते अपिवतहे पोउरु-वचाँम् ॲरॅज़ुख़्.धनाँम्।
उश्त ते नोइ.त् पइरि-.फ्रास
ॲरॅज़ुख़्.धॅम् परसहे वाचिम्

सं०— वषट् ते यः स्वा ओजसा
वश-क्षत्रः असि सोम

वषट् ते अपिवित्से पुरुवचसाम् ऋजूक्तानाम् ।
वषट् ते नेत् परिप्राशा
ऋजूक्तां पृच्छसि वाचम् ।

अर्थ—हे सोम ! तेरे लिये भलाई हो, जो तुम अपने बल से वशवर्ती शासन वाला है । तेरे लिए भलाई हो, जो तुम सीधे कहे हुए बहुत बड़े वचनों को अपना लेता है । तेरे लिए भलाई हो, जो तुम सरलता से कहे हुए को परिप्रश्न से कभी नहीं पूछता है ।

Eng. Tr. : Hail to thee O Haoma ! thou by thine own strength have become thine own master. Hail to thee ! thou understand full spoken words uttered truthfully. Hail to thee ! thou never cross-question the truthfully uttered words.

२६. **अवे०** .फ्रा-ते म.ज्दाो बरत्
पउर्वनीम् अइव्याोङ्हनॅम्
स्तॅह्.पॅअेसङ्हॅम् मइन्युताश्तॅम्
वङ्हीम् दअेनाँम् माज्दयस्नीम् ।
आअ.त् अऩ्हे अहि अइव्यास्तो
वरॅष्नुश् पइति गइरिनाँम्
द्राजङ्हे अइविधाइतीश्च ग्रवस्च माँथ्रहे ।

सं०— प्र ते मद्धा भरत्
पूर्वाणम् अभियासन्
स्तृपेशसम् मन्यु-तष्टम्
वस्वीम् ध्यानम् मद्धायज्ञीम्
आत् अस्याः असि अभियस्तः
बर्हणुं प्रति गिरीणाम्
द्राघीयसे अभिधातेश्च गृभश्च मन्त्रस्य ।

अर्थ—तेरे लिए विधाता पहली मेखला लाया, जो ताराःरूपी मोतियों वाली, दो आत्माओं से बनाई गई थी। जो मज्द की पूजा की बड़ी उत्तम भक्ति भावना है। इसके बाद तुम उस मेखला से युक्त हुआ पर्वतों की ऊँचाई पर रहने लगा, मन्त्र के उच्चारण और तात्पर्य की लम्बी रक्षा के लिए।

Eng. Tr.: Mazdā (the supreme God) granted you the sacred girdle first which was adorned with stars and woven by Mainyus. It was an excellent religion (i-e. religious symbol) for Mazdayasnians. Then you are growing on the mountain for a long time and entrusted with words and meanings as well as scriptures.

२७. **अवे०**—हओम न्मानो-पइते वीस्पइते
ज़न्तुपइते दञ्हुपइते
स्पनङ्ह वअेध्यापइते।
आमाइ च थ्.वा वॅरॅथ्रध्नाइच
मावोय उप-स्रुये तनुये
थ्रिमाइ च य.त् पोउरु बओ.क्ष्नहे।

सं०— सोम दम्पते विश्पते
जन्तुपते दस्युपते
श्वनसा विद्यापते।
अमाय च त्वा वृत्रघ्नाय च
मह्यम् उपब्रुवे तन्वे
त्रिमाय च यत् पुरुभोजसे।

अर्थ—हे सोम! घर के मालिक, ग्राम के मालिक, प्रान्त के मालिक, देश के मालिक और अपनी पवित्रता से विद्या के मालिक; मैं तुम्हें शक्ति के लिये, शत्रुओं को मारने के लिये, अपने आप के लिये, और उस रक्षा के लिये जो बहुतों को बचाने वाली है, बुलाता हूँ।

Eng. Tr.: O Haoma! the lord of house, the lord of village, the lord of province, the lord of country, the lord of wisdom by holiness I invoke you for strength and victory and for nourishment for me and salvation for all.

२८. अवे०—वी नो त्बिष्वताँम् त्बअेषबीश्
वी अनो बर ग्रमॅन्ताँम्।
यो चिश्च अह्मि न्माने
यो अव्हे वीसि यो अह्मि जन्त्वो
यो अव्हे दव्ह्वो
अअेनङ्हाो अस्ति मश्यो
गॅउर्वय हे पाधवे ज़ावरॅ
पइरि-षे उषि वॅरॅनूइधि
स्कॅन्दॅम् षे मनो कॅरॅनूइधि।

सं०— वि नो द्विष्वतां द्वेषेभ्यः
वि मनो भर घर्मवताम्
यः कश्च अस्मिन् दमे
यो अस्यां विशि यो अस्मिन् जन्तौ
यो अस्यां दस्यौ
एनस्वानस्ति मर्त्यः
गृभाय अस्य पद्भ्याम् जवः
परि अस्य उषि वृणुधि
खिन्नम् अस्य मनः कृणुधि

अर्थ—हमें द्वेषियों के दोषों से दूर, (और) क्रोध से भरे हुए लोगों से परे (हमारे) मन को ले जा। जो कोई इस घर में, जो कोई इस ग्राम में, जो

कोई इस प्रान्त में, जो कोई इस देश में पापी मनुष्य हैं उसके पैरों को वेग से ले लो। इसके दिमाग (मन) को (परिश्रान्त) उलट-पलट कर दे, इसके मन को थका हुआ बना दे।

Eng. Tr. : Please take away the wicked anger from the mind of our enemies, who is in the house, who is in the village, who is in the province and who is in the country. The man who is harmful please take away the strength from his feet and destroy his capacity of hearing as well as destroy his capacity of thinking.

२९. **अवे०**—मा ज़्.बरॅथअेइब्य .फ्रतुयो
मा गवअेइब्य अइ.्व—तूतुयो
मा ज़ाँम् वअेनोइत् अषिब्य
मा गाँम् वअेनोइ.त् अषिब्य
यो अअेनङ्हइति नो मनो
यो अअेनङ्हइति नो कॅह्.र्पॅम्।

सं०— मा ह्.वृताभ्यां प्रतुयाः
मा ग्राभाभ्याम् अभितूतुयाः
मा ज्मां वेनात् अक्षिभ्याम्
मा गां वेनात् अक्षिभ्याम्
यः एनस्यति नो मनः
यः एनस्यति नः कृपम्।

अर्थ—(उसकी) दोनों टागों के लिये बल मत दे, उसको दोनों पकड़ने वाले पंजों से शक्ति वाला मत बना, वह इस पृथ्वी को आँखों से मत देखे, वह इस सृष्टि को आँखों से मत देखे। जो हमारे मन के प्रति पाप का भाव रखता है, जो हमारे शरीर के प्रति पाप का भाव रखता है।

Eng. Tr. : Please do not grant strength to the crooked feet and hands (of our enemies) and let him not see the world and creation with his eyes who injures our body and mind.

३०. अवे०—पइति अज़ोइश् जइरितहे
सिमहे वीषो–वअेपहे
कॅहर्पॅम् नाषॅम्नाइ अषओने
हओम ज़ाइरे वदरॅ जइधि ।
पइति गधहे वीवरॅज़्दवतो
.ख़्वीश्यतो ज़ज़रानो
कॅह्र्पॅम् नाषॅम्नाइ अषओने
हओम ज़ाइरे वदरॅ जइधि ।

सं०— प्रति अहेः हरितस्य
शिमस्य विष-वापस्य
क्रृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधर् (*जधि) जहि ।
प्रति गधस्य विवृक्तवतः
क्रविष्यतः जाहृणानस्य
क्रृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधर् (*जधि) जहि ।

अर्थ—हे सुनहरे रंग वाले सोम ! तू यज्ञ करने वाले के शरीर की रक्षा के लिए, भयानक, विष उगलने वाले सर्प के विरुद्ध, अपना शस्त्र मार। हे सुनहरे रंग वाले सोम ! धर्म पर चलने वाले के शरीर की रक्षा के लिये, घातक, अधर्मी, लहू के प्यासे, क्रोध से भरे हुए के विरुद्ध अपना शस्त्र मार।

Eng. Tr. : O Haoma, of golden colour ! please smite your weapon towards the yellow-coloured serpent who is dreadful and poisonous and who is active for the destruction of the body of the righteous person. Please smite your weapon towards the murderer who is cruel and angry.

३१. **अवे०**—पइति मश्येहे द्व्रतो सास्तर्श्
अइवि.-वोइज्.दय॑॰तहे कमॅरॅधम्
कॅह्.र्पॅम् नाषॅम्नाइ अषओने
हओम ज़ाइरे वदरॅ जइधि ।
पइति अषॅमओघहे अनषओनो
अहूम्-मॅरॅ॰.चो अञ्.हाो दअेनयाो
माँस् वच दथानहे
नोइ.त् श्यओथ्नाइश् अपयन्तहे
कॅह्र्पॅम् नाषॅम्नाइ अषओने
हओम ज़ाइरे वदरॅ जइधि ।

सं०— प्रति मर्त्यस्य द्रवतः शास्तुः
अभिवेजयतः कमूर्धानम्
कृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधर् जहि ।
प्रति ऋतमोघस्य अनृतवतः
असुंमृचः अस्याः ध्यानायाः
मनो वचो दधानस्य
नेत् च्यौत्नैः आपयतः
कृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधरॅ जहि ।

अर्थ—(धर्म से) विचलित होते हुए, (घमण्ड से) अपनी खोपड़ी को ऊँचा किये हुए, दुष्ट शासक के विरुद्ध अपना शस्त्र मार। हे सुनहरे रंग वाले सोम ! यजमान के शरीर की रक्षा के लिए, सच्चाई को झुठलाने वाले, झूठ से प्यार करने वाले, आत्मा का हनन करने वाले के विरुद्ध अपना शस्त्र मार। हे सुनहरे रंग के सोम ! यजमान के शरीर की रक्षा के लिए, जो इस धर्म को मन वाणी से प्यार करता है, भले ही वह अनुष्ठान में पूरा नहीं उतरा है।

Eng. Tr. : O Haoma, of golden colour ! please smite your weapon against wicked and tyrant mortal raising his head for the distruction of the righteous one. Please smite your weapon against the person who is far from the truth and who disobeys truth, who destroys the souls of the religious creations, who bears mind and word but never applies them for action.

३२. **अवे०**—पइति जहिकयाइ यातुमइत्याइ
मओदनो-कइर्याइ उपश्ता-बइर्याइ
येञ्हे .फ्रफ्रवइति मनो
यथ अ.व्रॅम् वातो-षूतॅम्
कॅह्र्पॅम् नार्षॅम्नाइ अषओने
हओम .जाइरे वदरॅ जइधि।

सं०— प्रति हस्त्रिकायै यातुमत्यै
मोदनकर्यै उपस्थभर्यै
यस्याः प्रप्रवति मनो
यथा अभ्रं वातसूतम्
कृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधर् (*जधि) जहि

यत् अस्याः कृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधर् (*जधि) जहि
यत् अस्याः कृपम् नश्मने ऋतान्वे
सोम हरे वधर् (*जधि) जहि ।

अर्थ—त्यागी हुई जादूगरनी के (और) मोद मनाने वाली व्यभिचारिणी के विरुद्ध, जिसका मन वायु से धकेले गये मेघ की तरह आगे दौड़ता (बहता) है, हे सुनहरे रंग के सोम ! यज्ञ करने वाले के शरीर की रक्षा के लिए तुम अपना शस्त्र मारो । हे सुनहरे रंग वाले सोम ! यज्ञ करने वाले के शरीर की रक्षा के लिए तुम अपना शस्त्र मारो ।

Eng. Tr. : O Haoma, of golden colour ! please smite your weapon towards the lustful wicked woman full of wiles who gives sensual pleasure and whose mind tosses like a cloud with wind and who is active for the destruction of the righteous one. Indeed you strike your weapon towards her who is active for the destruction of a righteous person.

शाब्दिक टिप्पणी

१— हओम (Haoma) शब्द (लैटिन प्सोरेलिया (Psoralea), मज्दा धर्म का एक पवित्र पौधा है) वेदिक सोमः शब्द का परिचायक है। अवेस्ता में इसका प्रयोग दो अर्थों में होता है। प्रथमतः यह अवेस्ता में एक देवता का नाम है; और दूसरे यह एक पौधे का नाम है जिसे यज्ञादि में प्रयोग किया जाता है। शाहनामा में भी हओम (Haoma) शब्द का प्रयोग आया है।

ह्वावनीम्—द्वि० एक व० 'सुबह' हओम यज्ञ का समय; अवे० √ हु, सं० √ सु (षु अभिषवे) यज्ञ विधान करना (सोम यज्ञ का); सं० सवनिम्। जरथुस्त्र धर्मानुयायियों ने दिन को पाँच भागों में बाँट रखा है। प्रत्येक समय की अलग-अलग प्रार्थनाएँ होती हैं जो विशेष शक्तियों से सम्बद्ध हैं। वे निम्न हैं—

(क) उसनिह—अर्धरात्रि से पौ फटने तक, यह समय बरज्य और न्मान्य शक्तियों से सम्बद्ध है जो क्रमशः फसल में वृद्धि करने वाले एवं गृहपति हैं।

(ख) ह्वावनि—पौ फटने से लेकर दोपहर तक; यह समय सावङ्हि और वीस्य शक्तियों से सम्बद्ध है जो क्रमशः सफलता देने वाले और ग्राम देवता हैं।

(ग) रपि.थ्वन—दोपहर से ३ बजे तक का समय; यह समय प्रादत्षु (Frādat-fšu) और जन्तुम शक्तियों से सम्बद्ध है जो क्रमशः पशुओं की वृद्धि करने वाले एवं प्रान्त के देवता हैं।

(घ) उ.जयैरिन—३ बजे दोपहर से सूर्यास्त तक का समय; यह समय प्रादत्-वीर और दख्युम (Daxyuma) से सम्बद्ध है जो क्रमशः मानव जाति की वृद्धि करने वाले और देश के (रक्षक) स्वामी हैं।

(ङ) ऐविस्रुत्रम् (aiwisrūθrəma)—सूर्यास्त से अर्धरात्रि तक का समय, यह प्रादत्-सुज्याति (Frādat-hujyāiti) (सृष्टि की वृद्धि करने वाले)

एवं जरथुश्त्रम् (जरथुश्त्र ईरानियों का ऋषि, जिसने ईरानियों को धर्म का मार्ग दिखलाया) शक्ति से सम्बद्ध है ।

आ—निपात 'पर'; आ निपात के योग में अवे० में द्वितीया का प्रयोग होता है। यह अवेस्ता की विशेषता है।

रतूम—द्वि० एक व०, √अर्, सं० √ऋ 'जाने के अर्थ में', 'समय', तु सं० *ऋतुम् । अवे० में म् के पहले यदि इ उ आता है तो उसका दीर्घ हो जाता है। यह अवेस्ता की विशेषता है।

हओमो—प्र० एक व० पु०, एक पौधे का नाम; सं० सोमः, पह० होम् (hōm), आ० फा० होम् / हओम् ।

उपाइत्—तृ० एक व० भूतकाल √इ तु० सं०√इ 'जाना'; उप उपसर्ग 'पास आया', सं० उपैत्, तु० भा० ईरानियन उपाइत् (upāit)

जरथुश्त्रॅम्—द्वि० एक व० पु०, प्रा० ईरान के एक ऋषि का नाम है। .जरथ √.जर्-, सं० √जॄ (जॄ ९।२३ वयोहानौ) 'बूढ़ा होना', मुर्झाना, क्षय होना; उश्त्र (<सं० उष्ट्र) अर्थात् बूढ़े ऊँटों को रखने वाला या भूरे रंग के ऊँटों को रखने वाला, अथवा जरथ, सं० हरित, सुनहरा; उश्त्र √उश्, सं० √उष् (उष १।६८७ दाहे) 'चमकना, चमक अर्थात् सुनहरी चमक वाला। सं० जरथुष्ट्र, पह० जर्तुश्त्, आ० पह० जर्तुश्त् या जर्दुश्त। जरथुश्त्र ईरानियों का ऋषि है जिसने ईरानियों को धर्म का मार्ग दिखाया। अवेस्ता का गाथा वाक्य इसी ऋषि का श्री मुख वाक्य माना जाता है।

अत्रॅम्—द्वि० एक व० 'अग्नि', सं० आत्रम्, पह० आतश्, आ० पह० आतश्। आतिश् तु० वै० हुताश और हुताशन, अथर्व ऋग० में २।८।५ में अत्रि अग्नि के अर्थ में आया है।

पइरियओ.जद.थॅतॅम्—द्वि० एक व० वर्तमान कृदन्त परस्मै० यओज्दा धातु से 'पूजा के लिए तैयार होना' अर्थ में । पइरि=सं० परि, उपसर्ग, यओज्दा एक मिश्रित क्रिया है जो अवे० √यज्+दा, सं० √धा (डुधाञ्) ३।१० धारणे) से बना है। सं० *परियोस्दधन्तम्>परियोर्द-

धन्तम् । पइरि=सं० परि, अवेस्ता में इ प्लुति है। यह अवेस्ता की एक विशेषता है।

गाथाोश्च—द्वि० बहु व० स्त्री० 'और गाथाएँ', गाथाएँ अवेस्ता शास्त्रों के प्राचीन रूप हैं। ये गाथाएँ छन्द बद्ध हैं और जरथुश्त्र ने इनको रचा है ऐसी मान्यता है। तु० पह० (gāsān) गासान, सं० गाथाश्च।

स्रावयन्तम्—द्वि० एक व० वर्तमान कृदन्त परस्मै० √स्रु, सं० √श्रु, आ० फा० √शनुदन् 'सुनने का कार्य कराना', पह० स्रायिस्नीह, आ० फा० misarāīyd, गुज० सारवुम्।

आ दिम्—दिम् द्वि० एक व०, तम् सर्वनाम का अप्रचलित रूप है। तु० प्रा० फा० सिम्, सं० आ तम् 'उससे'

पॅरॅसत्—अन्य पु० एक व० लङ्लकार आगम रहित अवे०√पॅरॅस् सं०√प्रच्छ् (प्रच्छतीप्सायाम्), आ० फा० √पुरसीदान् 'पूछना=पूछा' तु० सं० अपृच्छत्, पह० पुरसीत्, आ० फा० √पुर्सीद् 'पूछा'। संस्कृत के कृदन्त क्त प्रत्यय के पूर्व √प्रच्छ् धातु पृष् के रूप में उपलब्ध होता है यथा—पृष्टम् तथा प्रश्न।

जरथुश्त्रो—प्र० एक व० पु०।

को—प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कौन' तु० सं० कः।

नरॅ—संबो० एकव० 'हे नर' तु० आ० फा० आय् मर्द।

अह्मी—मध्यम पु० एक व० लट् लकार, अवे० √अह् सं० √अस् 'होना', सं० असि तु० पह० हवाए (havāe)।

यिम् =द्वि० एक व० पु० सर्वनाम, सं० यम् 'जो'।

अ.जॅम्—प्र० एक व० सर्वनाम 'मैं' सं० अहम्। यह भारोपीय *एघोम(eghom) भारत-ईरानियन *अ.झम् (ajham), अवे० अ.जॅम्, सं० अहम्, प्रा० फा० अदम्, आ० फा० मन् (man).

वीस्पहे—ष० एक व० पु०, अवे० वीस्प, सं० विश्व, तु० सं० विश्वस्य 'सभी का'

अङ्हॅउश्—ष० एक व० पु०, अवे० अङ्हु 'जीवन, सृष्टि' से बना है।

सं० असोः 'सृष्टि का'। अवे० में अङ्हु के स्थान पर अहु भी मिलता है, सं० असु, तु० अवे० वोहु और वङ्हु, सं० वसु।

अस्त्वतो--ष० एक व०, अवे० अस्त्वत् शब्द से बना है, सं० अस्थिवत्, 'शरीरधारी या सांसारिक (संसार), <सं० अस्थिमतः, आ० फा० उस्तुरव्वानी (लैटिन ओस (os), फ्रेंच l'os = (bone)

स्रअेश्तॅम्--द्वि० एक व० विशेषण, श्रेष्ठ, सबसे अच्छा; तु० सं० श्रेष्ठम्।

दादरॅश--प्र० पु० एक व० लिट् लकार (Perfect tense), अवे० √दरॅश्, सं०√दृश् तु० आ० फा० √दीदन् 'देखना', ('मैंने) देखा' तु० सं० ददर्श।

ख़्वहे--ष० एक व०, अवे० ख़्व शब्द से 'निजी, अपने', तु० सं० स्वस्य, आ० फा० ख्वुद। खूद् (khwud, khūd) 'निजी'।

गयेहे--ष० एक व० गय 'जीवन' शब्द से √gi 'रहना', सं० √जी, जीव (१।५६१, प्राणधारणे), तु० सं० *गयस्य।

ख़्वन्वतो--ष० एक व० लट् कृदन्त √ख़्वन् से, सं०√स्वन् 'चमकना', 'चमकते हुए' तु० सं० स्वन्वतः। यहाँ स्वन्वतः स्वन्वतं के अर्थ में है।

अमॅषहे--ष० एक व०, अमॅष 'अमर, न मरने वाला' शब्द से, तु० सं० अमृतस्य, आ० फा० बीमर्ग्।

२.--आअ.त्--क्रिया विशेषण है 'तब' तु० वै० सं० आत्, लौ० सं० अथ (केवल अर्थ के लिये). तु० वै० दक्षिणात् जो दक्षिणाअत् लिखा जाता है)। वास्तविक रूप से यह 'अ' सर्वनाम का पंचमी एक व० का रूप है।

मे०--च० एक व० सर्वनाम 'मुझे', तु० सं० मह्यम्, मे (निपात), तु० यंग० अवे० का रूप मे।

अअेम्--प्र० एक व० पु०। नपुं० सर्व० 'यह' (इम सोम ने), तु० सं० अयम्, गा० अ० अयाम् (ayə̄m)। अवे० में म् से पूर्व अ श्वा (ə) हो जाता है। यह अवे० की विशेषता है।

पइत्यओख़्.त—अन्य पु० एक व०, लुङ् लकार (aorist) आत्म०, √वच् (२।५२ भाषणे) 'बोलना' + पइति, तु० सं० प्रति, *सं० प्रत्योक्त, सं० प्रत्यवोचत् 'उत्तर दिया'।

अषव—प्र० एक व० 'दिव्य नियमों वाले', सं० ऋतावा, ऋत 'दिव्य नियम weak grade का रूप है और आर्त strong grade का रूप है। जो अवे० में अष हो गया। यह अवे० की विशेषता है कि सं० अर्त अवे० में अष हो जाता है।

दूरओषो—प्र० एक व० दूर + अओष, अवे० दूर, सं० दूर, आ० फा० दूर 'दूर तक फैले हुए, दूर', अओष 'चमक' √उष् 'चमकना' *भारत ईरानियन दूरौसस्, सं० दूरोषः 'दूर तक फैले हुए तेज वाले'।

अ.जॅम्—प्र० एक व० सर्वनाम; यह भारोपीय *अघोम् (eg(h)om), भा० ई० *अझम् (ajham), सं० अहम्, अवे० अजॅम् (azəm), प्रा० फा० अदम (adam) 'मैं'।

अह्मि—प्र० पु० एक व० लट् लकार अवे० √अह्, सं० √अस्, तु० सं० अस्मि '(मैं) हूँ'।

आ यासङ्‌ह—म० पु० एक व० आत्म० √यास् 'चाहना, इच्छा करना' आ उपसर्ग के साथ अर्थ होगा प्रचण्ड या उतप्त इच्छा करना। यह *याचस्व से यासङ्ह्व > यासङ्हुअ् > यासङ्‌ह, तु० सं० आयाचस्व तु० सं० √याच् 'माँगना'।

माँम्—द्वि० एक व० सर्वनाम्, तु० सं० माम् 'मुझसे'।

स्पितम—संबो० एक व०, जरथुश्त्र का गोत्र नाम है। इसी से कभी-कभी जरथुश्त्र को स्पेन्तमान कहा जाता है। तु० सं० *श्वितम, श्वेततम 'पवित्रतम', अवे० √स्पि, सं० √श्वि 'शुद्ध होना, सफेद होना'।

.फ्रा हुन्वङ्‌ह—म० पु० एक व० लोट लकार आत्म०, अवे० √हु, सं० √सु (षुञ्) ५।१ अभिषवे) 'निचोड़ना', अवे० फ्रा, सं० प्र, तु० सं० प्रसुनुस्व, *सुन्वस्व ('पीने के लिये) निचोड़, बहा'; भा० ई० *सुनुअस्व > हुन्वङ्ह्व > हुन्वङ्हुअ > हुन्वङ्‌ह।

ख़्.वरॅतॅअे—च० एक व०, अवे० √ख़्.वर्, सं० √ह्वर्, √स्वर् 'खाना', तु० आ० फा० √खुर्दन् 'खाना या पीना', 'पीने के लिये', तु० सं० *स्वर्तये, अश्नवे, पीतये।

अओइ—उपसर्ग, अवे० अओइ, सं० अभि; यह भारोपीय *म्भि (m̥bhi) से > अभि > ऐबि > ऐवि > अओइ।

स्तूइधि—म० पु० एक व० लोट लकार परै०, अवे० √स्तू, सं० √स्तु 'प्रशंसा करना' तु० सं० *स्तुधि, स्तुहि।

स्तओमइने—स० एक व० 'स्तोत्रों में' तु० सं० स्तोमनि/स्तोमने।

यथा—'जिस प्रकार' तु० सं० यथा।

अपरचित्—प्र० बहु व० 'दूसरे', चित् का प्रयोग अवेस्ता में बहुधा होता है। तु० सं० अपरेचित्।

सओश्यन्तो—प्र० बहु व० लृट् लकार कृदन्त परस्मै०, अवे० √सु 'पूजा करना, काम करना', सं √च्यु, तु० सं० सोश्यन्तः; सओश्यन्त देवताओं के एक अवतार का नाम है जो समय-समय पर बुराइयों को दूर करने के लिये और अच्छाई का मार्ग प्रशस्त करने के लिये संसार में प्रकट होता रहता है अर्थात् लोगों को धर्म का मार्ग दिखाने वाले। सओश्यन्त को जरथुश्त्र का अंश माना जाता है जो भविष्य में पैदा होता है।

स्तवाँन्—अन्य पु० बहु व० क्रिया का संशयार्थक सूचक रूप (Subjunctive) परस्मै० 'प्रशंसा या स्तुति किया है' तु० सं० *स्तवान्, अस्तुवन्।

३—अओख़्.त्—अ० पु० एक व० लुङ् लकार की क्रिया (aorist middle), हिन्द ई० *औक्त, सं० *ओक्त, अवोचत् 'कहा' √वच् (२।५२ भाषणे) 'कहना, बोलना'।

नॅमो—प्र० एक व० नपुं० <√ नम्, सं० नमस् 'नमस्कार' तु० आ० फा० नमा.ज्।

हओमाइ—च० एक व० 'सोम के लिये' तु० सं० सोमाय।

कसॅ—प्र० एक व० प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कौन' तु० सं० कः; कः शब्द का

संधि में कस् और कश् के रूप में भी प्रयोग होता है, जैसे कस्ना, कस्ते इत्यादि ।

थ्वाँम्—द्वि० एक व० सर्वनाम 'तुझे या तुझको' तु० सं० त्वाम् ।

पओइर्यो—प्र० एक व० (क्रिया विशेषण की तरह प्रयोग हुआ है), भा० ईरा० पौर्व्यः, स० * पोर्व्यः, सं० पूर्व्यः 'पहला' संख्यावाची शब्द है । अवे० में एक दूसरा रूप भी है फ्रतॅम तु सं० प्रथम, पह० फ्रतुम् ।

मश्यो—प्र० एक व० 'मनुष्य' हि० यूरो० *मोर्तिओस्, हिन्द ईरा० *मर्त्यस् प्रा० फा० मर्तिय, अवे० मश्यो, सं० मर्त्यः, पह० मर्त्, आ० फा० मर्द, तु० बं० मरद् (उधार दिया) । यहाँ पर सं० र्त् अवे० में श् हो गया है । यह अवेस्ता की ध्वनि विषयक विशेषता है ।

अस्त्वइथ्याइ—च० एक व० स्त्री० 'शरीरधारी जीव लोक के लिये' तु० सं० अस्थिवत्यैः या अस्थिमत्यैः ।

हुनूत—अन्य पु० एक व० (लङ् लकार) भूतकाल आत्म० आगम रहित 'निचोड़ा, पूजा किया' तु० सं० असुनुत; अवेस्ता में आत्मनेपद का प्रयोग संस्कृत की अपेक्षा अधिक मौलिक रूप में किया जाता है ।

गअेथ्याइ—च० एक व० अवे० गअेथि 'संसार के लिये', अवे० √गि, सं० √ जी 'जीना' तु० अवे० गअेथा, गयेहे 'जीव-संसार', ग्री०बिओस् (βios), आ० फा० गीती, सं० गेथायै ।

का—प्र० एक व० स्त्री० सर्व० 'क्या' तु० सं० का ।

अह्माइ—च० एक व० स्त्री० 'कामना / वरदान' तु० सं० आशीः ।

अॅरॅनावि—अन्य पु० एक व०; यह अनिश्चित काल सूचक भूतकाल की क्रिया है अर्थात् लुङ् लकार (aorist), कर्मवाच्य, √अर् 'देना, स्वीकारना' तु० सं० ऋणावि ।

चित्—प्र० एक व० नपुं०; च क (= क्या) का तालव्य रूप है । इसका पु० चिश् है तु० सं० चित्, लैटिन क्विद् (quid), आ० फा० चेह् (cheh).

जस.त्—अन्य पु० एक व०, अनिश्चित काल सूचक भूतकाल की क्रिया ।

आगम रहित √ जस् 'आना' तु० सं० अगच्छत् 'आया', हिन्द भा० *√ गुएम् (guem-), √ जम् और हि० भा० √ गुओम् (guom-) > √ गम् ।

आयप्तॅम्—द्वि एक व० नपुं० √ अप, सं० √ आप्, आ० फा० √ याफ्तन् 'पाना, प्राप्त करना' तु सं० आप्तम् 'लाभ', आ० फा० याफ्त् ।

४—वीवङ्हो—प्र० एक व०, विवस्वान् यम के पिता थे । वेद में भी यम को वैवश्वत कहा गया है ।

हा—प्र० एक व० स्त्री० 'जिसने' तु० सं० सा, हि० ईरा० सा, ग्रीक (डोरिक) हा, गॉथिक सो (sō).

यत्—समुच्चय सूचक अव्यय 'जो' तु० हि० ईरा० यद्, सं० यत् (यद्), हि० यूरो० योद्, ग्रीक हो (hó) । यत् अवे० में तीनों लिंगों के लिये आता है ।

हे—ष० एक व० सर्वनाम 'उसके' तु० सं० अस्य, हि० यूरो० *सोइ > हि० ईरा० *सै (sai) सं० से, प्रा० फा० सइय्, अवे० हे, षे; म० भा० आर्य० से ।

पुथ्रो—प्र० एक व० 'पुत्र', हि० ईरा० *पुत्र, सं० पुत्र, अवे० पुथ्र, प्रा० फा० पुस्स, पह० पुहर्, आ० फा० पिसर्, पुर ।

उस्-जयत—अन्य पु० एक व० लङ्लकार आत्म० √ जन्, सं० √ जन् (३।२४ जनने) 'पैदा होना' उत उपसर्ग है, आगम रहित 'पैदा हुआ', तु० सं० उज्जायत, तु० आ० फा० √ जादन् 'जन्म देना' । *उज् जायत = उदजायत, अ आगम के अभाव में यह रूप बना है। अवे० में ऐसे प्रयोग बहुत हैं ।

यो—प्र० एक व० पु० सर्वनाम 'जो' तु० सं० यः ।

यिमो—प्र० एक व० यमः (वै० यम के सदृश) । यम और उसकी बहन यमी पहले जुड़वाँ भाई-बहन हैं, जो मानव जाति के पूर्वपुरुष (पुरखे) हैं । यम का शासन काल संसार का स्वर्णिम युग था । वह पहला मनुष्य था जो मरा और मरने के बाद मरे हुए व्यक्तियों का शासक हो गया ।

क्ष्अेतो—प्र० एक व०, यह् अवे० में √.क्ष, सं √ क्षि 'शासन करना', 'शासक'। यिम के साथ सदैव .क्षअेत उपाधि जुड़ी रहती है और इसका पूरा नाम यिमो-.क्षअेतो अर्थात् शासक या राजा यम है। आ० फा० में शाहनामे में जमशीद् नाम पाया जाता है। .क्षअेतो का प्रा० फा० रूप क्षायथिय है जो कि प्रा० फा० के शिललेखों में पाया जाता है, वहाँ भी इसका अर्थ राजा या शासक है; तु० सं *क्षेत:, प्र० क्षत्रिय:, पह० शाह्, आ० फा० शाह।

ह्वाँथ्.वो—प्र० एक व० विशेषण हु+वाथ्व 'समृद्धि' < √वन् (१।४५१ साफल्येन प्राप्तौ) 'जीतना', बड़ा विजयी तु० सं० सुवन्ता = सुवन् + तृ।

ह्.वरॅनङ्हस्तमो—प्र० एक व० पु० विशेषण, ह्.वरॅनङ्ह < √ह्.वर्, सं० √ स्वर् 'चमकना', बड़ा तेजस्वी, सं० शब्द स्वर्, सूर्य, स्वर्ग, लै० सोल्, फ्रेंच सोलाय (soleil), ग्रीक एलिओस्, आ० .फा० खोरेह्, तु० सं० स्वर्णवत्तम:, आ० .फा० फरेह्मन्दतरीन्।

जातनाँम्—ष० बहु व० वर्तमान कृदन्त है, अवे० √.जन्, सं० √जन् 'पैदा होना', उत्पन्न हुए लोगों का, तु० सं० जातानाम्।

ह्वरॅ-दरॅसो—प्र० एक व० विशेषण 'सूर्य के समान', तु० सं० स्वर्दृस:, ग्रीक सुएल्-देर्को, आ० .फा० खुर्सीद् सान् नेग्रान्।

मश्यानाँम्—मर्त्य शब्द का ष० बहु व० 'मनुष्यों का', तु० सं० मर्त्यानां।

यत्—प्र० एक व० नपुं० सम्बन्ध वाचक सर्व०। यह यिम के लिये प्रयुक्त हुआ है। अवे० में नपुं० सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का प्रयोग सभी लिंगों के लिये होता है, तु० सं० यत्।

कॅरॅनओ.त्—अन्य पु० एक व० भूतकाल आगम रहित अवे० √कर् 'बनाना, करना', सं० √ कृ 'करना', तु० सं० अकृणोत्, तु० आ० .फा० कर्द < √ कर्दन्।

अऋ्हे—ष० एक व० सर्वनाम पु० 'अपने' तु० सं० अस्य, तु० गा० अवे० अह्या (पु०) और य० अवे० अहे (पु०)।

क्षथाध—पं० एक व० है क्षथ्र शब्द का, तु० सं० क्षत्र 'राज्य, शासन' + पं० विभक्ति का प्रत्यय आद, तु० सं० क्षत्रादा<क्षत्रात् +आ (लेकिन इसका प्रयोग यहाँ सप्तमी की तरह हुआ है) 'उसके राज्य में, उसके शासन काल में'; तु० आ० .फा० दर् शह्‌र्यारी।

अमर्षन्त्—द्वि० द्वि व० भविष्यकाल कृदन्ती अवे० √मर्, सं० √ मृ, आ० .फा० √ मुर्दन् 'मरना', अ–नकारात्मक उपसर्ग है। अतः अर्थ होगा 'न मरने वाला, अमर' तु० सं० अमरिष्यन्ता, लौ० सं० अमरिष्यन्तौ, तु० आ० .फा० नामुर्दनी।

पसुवीर—द्वि० द्वि व० द्वन्द्व समास 'जानवरों और मनुष्यों' तु० सं० पशुवीरा तु० आ० .फा० जानवर वा मर्दुम, अवे० पसु <*भा० पेकु, ग्रीक पेकु, लैटिन पेचु, अवे० पसु, प्रा० भारतीय आर्यभाषा पशु, प्रा० हा० जर्मन फैहु, अं० फी और वीर =आदमी, तु० सं० वीर =नायक, लौ० सं० पशुवीरौ।

अङ्‌हओषॅम्ने—द्वि० द्वि व० स्त्री० लट् कृदन्ती आत्म० अवे० √ हुश्, सं० √शुष्, आ० फा० √खुश्कीदन् 'सुखाना' साथ में नकारात्मक उपसर्ग अ है। अतः अर्थ हुआ 'न सूखने वाला' *सं० अशोषमाणे, सं० अशुष्यमाणौ, तु० आ० .फा० नह्‌ खुश्कीदनी।

आप-उर्वइरे—द्वि० द्वि व० द्वन्द्व समास 'जल और ओषधियों को', अवे० आप, सं० आपः 'जल', अवे० उर्वइरे तु० सं० उर्वरा 'ओषधि, उपजाऊ' तु० लै० आर्बोर्, फ्रे० ल आर्ब्र (l'arbre) 'पेड़' तु० आ० .फा० उर्वर 'पेड़'; वै० सं० आप-उर्वरे और लौ० सं० आप-उर्वरौ। उर्वरा, अवे० में 'ओषधि एवं संस्कृत में 'उपजाऊ' अर्थ में प्रयुक्त होता है।

ख़्वइर्याँन्—क्रियार्थक संज्ञा अवे० √ख़्वर 'खाना', सं० √ स्वर्, आ० .फा० √ खुर्दन्, तु० सं० असितवे, खादितुम्।

ख़्वरॅथॅम्—द्वि० एक व० 'आहार' तु० सं० अशनम्, आ० .फा० .खुरश्।

अजयम्नॅम्—द्वि० एक व० लट् कृदन्ती आत्म० √ ज्या 'नष्ट करना, क्षय करना' 'अ' नकारात्मक उपसर्ग है 'अक्षय, अनन्त, विपुल' तु० सं० अजीयमानम्।

५—यिमहे—ष० एक व० 'यम का' सं० यमस्य।

.क्षथ्रे—स० एक व० .क्षथ्र शब्द से, 'राज्य में'; सं० क्षत्रे, तु० आ० .फा० दर् शहर्यारी।

अउर्वहे—ष० एक व० <√अर् 'आदर्श होना', तेजस्वी, प्रसिद्ध सं० उर्वियस्य, पह० अर्वन्द्, आ० .फा० दिलीर्।

नोइत्—नकारात्मक निपात (न+इत्) 'कभी नहीं, न तो' तु० सं० नेत्, नः, पह० ला।

अओतॅम्—प्र० एक० व० नपुं० 'ठंड' तु० वै० ऊधः बादल के अर्थ में, सं० *ओतम्, अवे० अओदर्, पह० सर्माक, आ० फा० सर्मा, सं० ओद्म 'शीत', उन्द 'गीला करने से'।

ओङ्ह—अन्य पु० एक व० परोक्ष भूतकाल अवे० √अह्, सं० √अस् 'होना'; था, तु० सं० आस, आ० फा० बवद्।

गरॅमॅम्—प्र० एक व० नपुं० 'गर्मी' <भारो० *घोर्मोस् (g^whormos) भारत ईरानी *घर्मोस्, सं० घर्मः, अवे० गरॅम, प्रा० फा० गर्म, पह० गर्माक्, आ० फा० गर्म्, लैटिन फोर्मुस्, ग्रीक थेर्मोस्, प्रा० हा० जर्मन वार्म् (warm)।

.जउर्व—प्र० एक व० स्त्री० विशेषण, प्रचलित रूप .जौर्वा—बुढ़ापा, सं० जरा, पह० .जर्मान्, आ० फा० पीरी।

मॅरॅथ्युश्—प्र० एक व० पु० 'मृत्यु' तु० सं० मृत्युः <√मृ 'मरना', पह० मर्गीह्, आ० फा० मर्ग <√मुर्दन् 'मरना'।

अरस्को—प्र० एक व० 'ईर्ष्या' तु० सं० *रेषको, ईर्ष्या, पह० अरश्क्, आ० फा० रश्क, सं० √ऋष् 'हानि उठाना' अक प्रत्ययान्त।

दअेवोदातो—प्र० एक व० समस्त पद, दअेव=असुर और दात, वर्तमान कृदन्त अवे० √दा, सं० √धा 'बनाना', देवों द्वारा रची हुई, तु० सं० *देवधातः, देवहितः। धातः उच्च श्रेणी (strong grade) और हितः निम्न श्रेणी (weak grade) का रूप है।

पन्चदस—प्र० द्वि व० पु० विशेषण 'पन्द्रह वर्ष' सं० पञ्चदश, ग्रीक पेन्तेकदेका, आ० फा० पा.ज्दह्, भारो० *पेन्क्वेदेक्म् (penq^{w}edek̂m̥).

.फ्रचरोइथे—अन्य पु० द्वि व० संशयार्थक सूचक रूप, आत्म०, अवे० √चर्, सं० √चर् (१।५५८ गत्यर्थः), आ० फा० √चरीदन् 'घूमना, चलना', फ्रा सं० प्र 'चारों तरफ घूमना' तु० सं० *प्रचरेते, आवेस्तिक रूप है ।

पित पुथ्रस्च—द्वन्द समास 'पिता और पुत्र' सं० पिता पुत्रश्च, आ० फा० पिदर् उ पिसर् ।

रओधअेष्व—स० बहु व० रओदअेषु+आ, (अवे० रओद <√रुद्, सं० √रुह् 'बढ़ना') देखने में चेहरों पर; तु० सं० *रोहेषु+आ, तु० आ० .फा० बि सूरत् .जाहिर् ।

कतरस्चित्—प्र० एक व० पु० कतर=दोनों में से एक तु० सं० कतरः, ग्रीक पोतेरोस्, चित् सं० में अनिश्चयता के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, 'हर एक सभी' ।

यवत—क्रिया विशेषण, द्वि० एक व० यवन्त् का 'जब तक' तु० सं० यावत् ।

.क्षयोइ.त्—अन्य पु० एक व० लुङ् √क्षि 'शासन या राज्य करना', राज्य किया, सं० अक्षयत् ।

वीवङ्हतो—ष० एक व० 'विवस्वान के' सं० विवस्वतः ।

६—बित्यो—प्र० एक व० दो संख्यावाची विशे० तु० सं० द्वितोयः, आ० .फा० दुवम्, दुएमीन्, दीगर् बार् । भारो० *दुओ, *दुए, *दु, ग्रीक दुओ (duō), लै० दुओ (duo), प्रा० भा० आ० द्वा, द्वौ; तु० अवे० बितीम् (द्वि० एक व० नपुं० और बित्याइ (च० एक व० नपुं०); भा० ई० *द्वित्य, सं० द्वितीय, अवे० द्बित्य>बित्य ।

७—आथ्व्यो—प्र० एक व० त्रैतान का पिता तु० वै० आप्त्य, पह० आस्पियान्, आ० .फा० आब्तीन् ।

वीसो—ष० एक व० स्त्री० 'वैश्य परिवार का' तु० सं० विशः ।

सूरयाो—ष० एक व० पु०, यह आथ्व्य का पुत्र था। त्रैतान नाम वेद में भी पाया जाता है (ऋ० सं० १.१५८.५)। यह श्रेष्ठ पुरुष वेद में भी निर्दिष्ट हुआ है, जिसने कि तीन सिर वाले दैत्य को मार कर गायों को छुड़ाया। बाद में यह इन्द्र के लिये कह दिया गया (ऋग० सं० १०.८.८) वेद में अन्य स्थानों में त्रित आप्त्य का प्रयोग उसी श्रेष्ठ पुरुष के लिये किया गया है। लेकिन अवेस्ता का त्रित वेद से भिन्न है, जो साम परिवार का है और कृशाश्व का पिता है। थ्रएतआनो नाम शाहनामे में फरीदून के रूप में आता है, जो आब्तीन का पुत्र है। ऋग० सं० १।१०५।९ में त्रित को आप्त्य 'जल का पुत्र' कहा है।

८—यो—प्र० एक व० सम्बन्ध वा० सर्व० 'जो' तु० सं० यः।

जन.त्—अन्य पु० एक व० लङ् लकार की क्रिया अवे० √.जन्, सं० हन् (२।२ हिंसायाम्) 'मारना', मारा, तु० सं० अहनत्।

अ.जी—दहाकम्—द्वि० एक व० 'एक तीन सिर वाला दैत्य, जिसे त्रैतान ने मारा था तु०सं० अहिम् दंशकम्; फारसी में इसका पूरा नाम है अझदहा, एक साँप। अ.जी = सं० अहिः एक सर्प और दहाक 'काटने वाला' <अवे० √दह्, सं० √दंश्, √दश् 'काटना' डंक मारना।' फारसी में केवल दहाक का ही प्रयोग होता है जो फारसी में दोहाक् (ḍoḥāk) .जोहाक् (ẓoḥāk)हो जाता है; तु०अ रबी दोहाक्। अहि < भा०*ओगुहि, ग्रीक ओफिस्, हि० ईरा० *अझि, अवे० अ.ज, प्रा० भा० आ० भा० अहि।

थ्रि.ज.फनॅम्—द्वि एक व० विशे० 'तीन जबड़ों वाला या मुख वाला' .ज.फन् < अवे० √.ज.फ्, तु० सं० √जभ 'जँभाई लेना' तु० सं० त्रि जम्भम्, *जभ्नम्।

थ्रिकमॅरॅधम्—द्वि० एक व० विशे० 'तीन खोपड़ियों या सिरों वाला', अवे० कमॅर 'खाली जगह' तु० लै० कैमरा (camera); अवे० दा, सं० धा, तु० सं० *त्रिकमृधम्, (प्र०) त्रिकमूर्धनम्।

क्ष्वश्-अषीम्—द्वि० एक व० विशे० 'छः आँखों वाला'; अवे० क्षश्, सं० षष्, आधुनिक फारसी शश्, ग्रीक हेक्स, लै० सेक्स = सिक्स; अवे० अषि,

सं० अक्षि, ग्रीक ओक्तीलोस (oktillos), ओफ्थल्मोस (ophthalmos) = आँख, तु० सं० *षडक्षिम् (प्र०) षडक्षम् ।

ह.जङ्र् यओक्ष्तीम्—द्वि० एक व० विशे० 'हजार युक्तियों वाला', अवे० ह.जङ्र् < भा० *संघेस्लो < हि० ईरा० *सझस्र, सं० सहस्र, पह० और आ० .फा० ह.जार; अवे० यओक्ष्तीम् तु० सं० युक्तिम् 'कला' । अ.जि दहाक अपने समय का कला एवं विज्ञान का बहुत बड़ा वेत्ता था इसीलिये इस शब्द का प्रयोग उसके लिये किया गया है । तु० सं० सहस्र-युक्तिम् ।

अशओजङ्हॅम्—द्वि० एक व० विशे० 'बड़ा बलवान' अवे० अश उपसर्ग है जो अधिकता के अर्थ में प्रयुक्त होता है, तु० सं० अति; अवे० ओजङ्हँ तु० सं० ओजस् 'शक्ति, बल, तु० सं० अत्यौजसम् ।

दअेवीम्—द्वि० एक व० विशे० 'आसुरो या बुरी' तु० सं० देवीम् (केवल रूप की समानता है अर्थ की नहीं, अर्थ दोनों भाषाओं में भिन्न-भिन्न हैं ।

द्रुजॅम्—द्वि० एक व० स्त्री० यह द्रुज् 'विरोध करना' से बना है धातु संज्ञा है । शत्रु विरोधी' । द्रुज, अश का उल्टा है । भा० *द्रुघ, हि० ईरा० द्रुझ, सं० द्रुह्, अवे० दु.ज् तु० सं० द्रुहम् ।

अघॅम्—द्वि० एक व० विशे० 'बुरा' तु० सं० अघम् ।

गअेथाव्यो—च० व० व० गअेथा शब्द से 'सृष्टि' तु० सं० *गेथाभ्यः 'सृष्टि के लिये' या ससार के लिये' ।

द्वन्तम्—द्वि० एक व० लट् कृदन्ती रूप अवे० √द्रु, सं० √द्रु 'भागना', ऋत के मार्ग से भागा हुआ श्रद्धाहीन, अविश्वासी; तु० सं० द्रवन्तम्, गुज० दर्वन्द् या दुर्वन्द ।

.फ्रच कॅरॅन्त.त्—अन्य पु० एक व० लङ् परस्मै० अवे० √कॅरॅत्, सं० √कृत्, √कृन्त् 'काटना'; अवे० .फ्रच, सं० प्राञ्च् 'आगे, बाहर' तु० सं० प्राक् कृन्तत् 'बाहर निकाल दिया' ।

अङ्रो मइन्युश्—प्र० एक व० 'बुरी आत्मा, विनाशक'; अवे० √अङ्र्, सं० √ अङ्ह 'विनाश करना, नष्ट करना'; अवे० मइन्यु

<√मन्, सं० √मन् (विचारे) 'सोचना, विचार करना'; तु० सं० अङ्ग्रो-मन्यु तु० आ० फा० अह्रीमन्, अहुरमज्द ने दो आत्मायें बनाईं, अच्छी आत्मा जिसे स्पेन्ता मइन्युश् कहते हैं और दूसरी बुरी आत्मा, जिसे अङ्ग्रो मइन्युश् कहते हैं। ये दोनों आत्मायें समान शक्ति वाली थीं और एक दूसरे के प्रतिकूल थीं। यह प्रतिकूलता ही संसार के क्रमिक विकास का परिणाम है। यही जरथुश्त्र के द्वित्ववाद (माया और ब्रह्म को पृथक-पृथक मानने) का सिद्धान्त है। जिसका उन्होंने उपदेश दिया था लेकिन इन दोनों शक्तियों से ऊपर उन्होंने अहुरमज्द को माना है। वह द्वित्ववाद का सिद्धान्त हमें सांख्य के प्रकृति और पुरुष की याद दिलाता है। जबकि अहुरमज्द जो इन दोनों से ऊपर है वह योग दर्शन के ईश्वर के समान है।

अओइ—पूर्वसर्ग 'प्रतिकूल' तु० सं० अभि भा०* म̥भि; (m̥bhi), हि० ईरा०, *अभि, सं० अभि, अवे० अबि, अइबि, अइवि, अवि, अओइ।

याँम्—सम्बन्ध वाचक सर्वनाम है पर बहुधा निश्चयवाचक के अर्थ में 'जिसको, जो' तु० सं० याम्।

मह्र्काइ—च० एक व० तुमुन्त क्रियार्थवाची <√मरॅच्, सं०√मर्च 'नष्ट करना, बरबाद करना', विनाश के लिये, तु० सं० मृकाय (*मृचे)।

अषहे—ष० एक व० नपुं० 'ऋत का, सच्चाई का'। ईरान में ऋत का वही अर्थ है जो कि धर्म का अर्थ भारत में है, तु सं० ऋतस्य।

९. थ्रित्यो—संख्या वाचक शब्द पु० विशे० 'तीसरा' तु० सं० तृतीयः, तु० अवेस्ता थ्रितीम् (द्वि० एक व०), थ्रित्याइ (च० एक व०)।

१०. थ्रितो—प्र० एक व० पु०, साम का पुत्र है।

सामानाँम्—ष० वहु व० साम परिवार, एक ईरानी परिवार है जिसमें से त्रित और कृशाश्व हुए; तु० सं० सामानाम् 'सामवंशियों का'।

सॅविश्तो—प्र० एक व० विशे० उत्तमावस्था 'सबसे बलवान, महाशक्तिशाली' तु० सं० शविष्ठः। थ्रित का विशेषण है।

पुथ्र—प्र० द्वि व० 'दो पुत्र' तु० वै० पुत्रा।

उस्—.जयोइथे-अन्य पु० द्वि व० कर्मणि लुङ् अवे० √.जन् से, सं० √जन्, आ० फा० √.जादन्, अवे० उस्, सं० उत्, उद् '(दो पुत्र) पैदा हुए', तु० सं० उज्जायेथे।

उर्वा.क्षयो—प्र० एक व० पु०, थ्रित का एक पुत्र जो न्याय प्रिय और धर्म शास्त्रकार था। वह एक धार्मिक उपदेष्टा था और अपनी महान बुद्धिमत्ता के लिये प्रसिद्ध था (देखिये यस्त २३)। वह हिताश्व नामक शत्रु के द्वारा मार डाला गया। बाद में इसके छोटे भाई कृशाश्व ने रामयजत को पुकारा और उसकी सहायता से हिताश्व को मारा।

त्कअेषो—प्र० एक व० पु० 'दूरदर्शी' <अवे० √ कअेष् 'पढ़ाना' 'शिक्षा देना' या अति + √चक्ष् 'देखना, ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना' सं० अतिचक्ष।

अन्यो—विशे० 'दूसरा, एक' तु० सं० अन्यः

दातो-रा.जो—प्र० एक व० पु० विशे० दात = नियम तु० आ० फा० दाद् <√ दा, सं० √ धा; राजो <√ राज् 'चमकना, क्रमबद्ध करना' धर्मशास्त्रकार। कङ्ग इसका अनुवाद करते हैं 'न्याय के मार्ग को दर्शाने वाला' और मिल्स के अनुसार 'एक उच्च कोटि का न्यायाधीश' तु० सं० धातराजः, धर्मराज।

उपरो-कइर्यो—प्र० एक व० विशे० कृशाश्व का, अवे० उपइरि. सं० उपरि; कइर्यो (<√ कर्, सं० √ कृ) करने वाला, ऊँचे कार्यों वाला, अत्यधिक शक्तिशाली' तु० सं० उपर कार्यः।

यव—प्र० एक व० पु० विशे० 'युवा' तु० सं० युवन्, यून्, युवा, आ० फा० जवान।

गअेसुश्—प्र० एक व० पु० विशे०, घुंघराले बालों वाला, यह कृशाश्व की एक विशेषता है और उसके लिये एक विशेषण या उपाधि के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। तु० सं० केशव, आ० फा० गीसू। अवे० के इस शब्द का सं० में कोई सटीक सजातीय शब्द नहीं मिलता है।

गधवरो—प्र० एक व० पु० विशे० गध+वरो <√ वर्, सं० √ भृ, आ० फा० √ बरदन्, भा० √ *भेर् 'ले जाना, 'पकड़ना', गदाधारी अर्थात् योद्धा, तु० सं० गदाभरः, गदाधरः, सं० भ गा० अवे० में व के रूप में पाया जाता है और य० अवे० में ब और व (W) के रूप में और कभी-कभी व (V) के रूप में भी पाया जाता है।

११. स्रवरॅम्—द्वि० एक व० विशे०, यह समस्त पद है स्रू+बर, बर अवे० √ बर् 'ले जाना', सींगों वाले, तु० सं० श्टङ्गभरम्।

अस्पो-गरॅम्—द्वि० एक व० विशे० 'घोड़ों को निगलने वाला' गरॅम् <√अवे० गर्, सं० गल् 'निगलना' तु० सं० अश्वगरम् । अश्वगर अजगर के सादृश्य पर है। अजगर 'बकरों को निगल जाने वाला'।

नॅरॅ-गरॅम्—द्वि० एक व० विशे० 'जहरीला' तु० सं० विषवन्तम्, अवे० वीष् प्र० एक व० नपुं० 'जहर' तु० ग्रीक इ'ओस (i'ós), लै० वीरुस् (vīrus)।

.जइरितम्—द्वि एक व० विशे० 'पीला, सुनहरा' तु० सं० हरितम्, आ० फा० .जर्द् रंग्।

अरओध.त्—अन्य पु० एक व० भूतकाल अवे० √रओध् / √रओद्, सं०√ रुह 'उगना, चढ़ना', उगा हुआ था, तु० सं० अरोहत्।

आर्श्त्यो-बरॅ.ज—प्र० एक व०, अवे० आर्श्त्य = सं० ऋष्टिः 'भाला' और बरॅ.ज <अवे० √बरॅज्, सं० बर्ह, √वर्ध का रूपान्तर 'बढ़ना' तु० सं० ऋष्टिबर्हः। *ऋष्टिबर्हः—अद्रिबर्हः (ऋग्० सं० १०।६३।३ पर्वतवत् ऊँचा) के सादृश्य पर है।

अयङ्ह—तृ० एक व० नपुं०; 'लोहे (के बर्तन) से' तु० सं० अयसा, लै० अएस् (aes), प्रा० हाई जर्मन ऐं.ज् (aiz), आ० फा० आहन्—लोहा।

पितूम्—संज्ञा पु० 'भोजन, अन्न' तु० सं० पितव्, वै० पितु = भोजन, आहार।

पचत—अन्य पु० एक व० लङ् आत्म० अवे० √पच् 'पकाया', तु० सं० √पच् (डुपचष्) १।९८ पाके) 'पकाना' तु० आ० फा० √पुख्तन्, तु० सं० पचत, *अपचत आत्म०।

रपिथ्विनम्—विशे० (रपिथ्वा शब्द का, स्त्री०) समस्त पद है अरम्-पिथ्वा या अयरॅ-पिथ्वा या र-(पिथ्वा) जो *अर का गुणात्मक अपश्रुति (ablaut) है, दिन का मध्य या दोपहर, पिथ्व, मध्य; तु० अं० पिथ = दिन का मध्य, दोपहर का, दोपहर से ३ बजे तक का समय (पारसियों के धर्मानुसार दिन के पाँच भागों में से एक भाग का समय, जिसे रपिथ्वन् कहते हैं) । तु० सं० मध्याह्नः-सन्ध्यः ।

.ज्व्रानॅम्—द्वि० एक व० 'समय' तु० अरमीनियन ज्रुअन्, पह० .ज्व्रान्, आ० फा० .जमान्, तु० अवे० .ज्व्राने अकरने 'ऐसा समय जिसका अन्त न हो' तु० ग्रीक ख्रोनोस्, सं० कालः । यहाँ ज्रि जाने के अर्थ में है ।

त.प्स.त्च—अन्य पु० एक व० लङ्लकार अवे० √तप्, सं०√तप् 'गर्म होना, गर्म करना', गर्म हो गया; तु० लै० (tepseco) तेप्सेचो, आ० फा० √तप्सीदन्, तफ्सीदन् 'गर्म हुआ' तु० सं० तप्सत् च (या अतप्सत्) ।

हो—निश्चयवाचक सर्वनाम प्र० एक व० पु०, तु० सं० सः । सं० स अवे० में ह हो जाता है ।

मइर्यो—संज्ञा पु० <√मर् 'नष्ट करना', सर्प, मारने वाला हत्यारा, क्रूर इत्यादि तु० पह० .मर्, आ० फा० मार, सं० मर्यः, मारः ।

ख़.वीस.त् च—अन्य पु० एक व० अवे० √ख़.वीस 'पसीना होना', पसीना बहने लगा, तु० अवे० ख़.अएेद, सं० √स्विद्, तु० सं० स्विद्वत् च ।

.फ्रॉश्—क्रिया विशेषण प्र० एक व० पु० 'आगे, सामने' तु० सं० प्राक्, प्राङ्क, पराञ्च, तु० पह० फ्राक, फ्राच, तु० आ० फा० .फरा, .फरा.ज् ।

.फ्रस्पर.त्—अन्य पु० एक व० अवे० √स्पर्, सं० √स्फुर 'आगे की ओर चलना या खिसकना' यहाँ पर .फ्र उपसर्ग है, सं० प्र, सरक गया, तु० ग्रीक स्पैरो (spairo), लै० स्पेरुओ (sperūō), सं० प्रास्फुरत्, तु० आ० फा० फरा.ज आमद ।

यअेश्यन्तीम्—द्वि० एक व० स्त्री० लट् कृदन्ती, अवे० √यह्, सं० √यस् 'उबलना', उबले हुए, तु० सं० यस्यन्तीम् ।

आपॅम्—संज्ञा स्त्री० 'जल', तु० सं० आपम्, तु० प्रा० फा० आप, पह० आप्, आ० फा० आब, आर्यन आबुन । यहाँ अवेस्ता में आपम् एक वचन है जबकि सं० में यह शब्द सदैव बहुवचन में ही रहता है । अवेस्ता में तीनों वचनों में है ।

परोङ्हा.त्—अन्य पु० एक व० वर्तमान लेट् है पर प्रयोग लङ् आत्म० के रूप में हुआ है, अवे० √अह्, सं० √अस् (असु ४ / क्षेपणे) 'फेंकना', परा उपसर्ग है, तु० सं० परास्यत् 'फेंक दिया' ।

पराँश्—क्रियाविशेषण (प्र० एक व० पराङ्क शब्द का विशे०) 'दूर, एक तरफ' तु० सं० पराञ्च् ।

तर्श्तो—प्र० एक व० लङ् कृदन्ती, अवे० √थ्रह्, सं० √त्रस् (त्रसी ४ । उद्वेगे) 'डरना, डरा होना', तु० सं० त्रस्तः, ग्रीक त्रेओ (tréo), लै० तेरेंओ (terreo), आ० फा० तर्सान ।

अपतचत्—अन्य पु० एक व० लङ् लकार अवे० √तच् या √तक्, सं० √तच् / √तक् / √तङ्क 'भागना, दौड़ना' पह० √ता.ख़्तन, आ० फा० √ता.ख़्तन 'आक्रमण करना, सरपट चलना', अप उपसर्ग है, सं० अप, 'दूर भाग गया', तु० सं० अपतञ्चत् ।

नइरे-मना—विशे० 'मनस्वी, बहादुर' तु० सं० नरमनाः नर, तु० आ० फा० नरीमान (व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है) । अवे० में 'नर' वीर अर्थ में है ।

१२. तूइर्यो—संख्यावाची शब्द, विशे० 'चौथा' <भारो० *कुएतुरिओ (queturio) कुतुरिओ (quturio), हि० ईरा० *क्तुर्य, तुइर्य, आख़्तुरिय, सं० तुरियः, तुर्य । चत्वार शब्द का निश्चयार्थी क्रम है । तु० आ० फा० चहारुम् ।

१३. पोउरुषस्पो—व्यक्तिवाचक संज्ञा पु०, जरथुश्त्र का पिता, तु० सं० पुरुशाश्व, पह० पूर्शस्प, आ० फा० पूरिशस्प ।

तूम—प्र० एक व० द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनाम 'तुम', तु० अवे० त्वॅम्, तू, तु० सं० त्वम्, तु० गा० अवे० त्वाम्, तु० प्रा० फा० तुवम, हि० ईरा० तुवम्, वै० तुवम्, सं० त्वम् ।

उस-.जयङ्ह—मध्यम पु० एक व० भूतकाल आत्म० अवे० √.जन्, सं० √जन्, आ० फा० √.जादन 'पैदा होना', उत्पन्न हुए, तु० सं० उज्जायथाः, तु० आ० फा० .जायीदेह शुदी ।

अॅरॅ.ज्वो—सं० एक व०, अवे० अॅरॅजु शब्द से 'हे सरल (जरथुश्त्र)'; तु० सं० ऋज्वः, ऋज्वो । "बार्थलोम इस शब्द को क्रिया विशेषण के रूप में मानते हैं और इसका अनुवाद करते हैं 'वास्तव में, सचमुच' और अॅरॅजु शब्द का षष्ठी एक व० का रूप मानते हैं ।"

न्मानहे—षष्ठी एक व० अवे० द्मान शब्द से 'घर', गा० अवे० दॅमान, तु० सं० दमस्य, ग्रीक देमेइन, तु० आ० फा० मान, तु० प्रा० फा० मानिय 'स्थिर सम्पत्ति, राज्य' । यह हिन्द ईरानी *दमान शब्द से बना है ।

वीदअेवो—विशे० 'देव विरोधी, देव द्रोही' तु० सं० विदेव ।

अहुर-त्कअेषो—विशे०, अहुर मज्द के धर्म को मानने वाला, तु० सं० *असुराति चक्षाः । त्कअेषो शब्द के लिये देखें नं० १० ।

१४. स्रूतो—विशे०, कर्मणि कृदन्ती अवे० √स्रव, तु० सं० √श्रु (१।९२५, श्रवणे) आ० फा० √शनुदन 'सुनना', सुना; विख्यात, जाना हुआ, प्रसिद्ध, तु० सं० श्रुतः, आ० फा० शनूद ।

अइर्येने वअेजहि—सप्तमी एक व० नपुं० 'आर्यायिन बीज में', (आर्यायिने बीजे) से पहलवी और वर्तमान फारसी का रूप ईरानवे.ज निकला है, जिसका छोटा नाम ईरान है । ईरानी और आर्यावर्त के आर्य मूल में एक जाति की दो शाखायें हैं । ईरानी भी अपने को आर्य कहने में वैसा ही मान समझते थे जैसे आर्यावर्त के आर्य । जैसे आर्यों के इस देश का नाम आर्यावर्त है, वैसे आर्यों के उस देश का नाम अइर्येन (= आर्यायिन) (आर्यों का घर) है ।

अहुनॅम् वइरीम्—द्वि० एक व० पु० । यह जरथुश्त्रीय धर्म की तीन मुख्य प्रार्थनाओं में से एक है, जो जरथुश्त्र से पहले की मानी गई हैं ।

इसका आरम्भ 'यथा अहुवइर्यो' से होता है। दूसरी का आरम्भ 'अशम् वोहू' और तीसरी प्रार्थना का आरम्भ 'याङ्हे हाताँम्' से होता है। अहुनवइर्य जरथुश्त्रधर्मियों में गायत्री की पदवी रखता है।

.फ्स्रावयो—मध्यम पु० एक व० भूतकाल परस्मै० अवे० √स्रु, सं० √श्रु, आ० फा० √ शनुदन 'सुनना', यहाँ फ्र उपसर्ग है, सं० प्र; तु० सं० प्रस्रावयः 'उच्चारण किया'।

वीबॅरॅथ्वन्तॅम्—विशे० 'विभाग पूर्वक रखना' वि+अवे० √बर्, सं० √भृ+वन्त् परसर्ग, तु० सं० विभृतवन्तम्। अवेस्ता में यह मंत्र को पादाक्षर विभाग सहित उच्चारण करने में प्रयुक्त होता है।

आ.ख्तूइरीम्—द्वि० एक व० विशे०/क्रिया विशेषण<आ-क्तुर ई इअम्, अ+तूइरीम्, तुरीयम् का रूपान्तर है, तु० सं० आतूर्यम् 'चार बार'। सं० तुरीय शब्द निर्बल श्रेणी (weak grade) का रूप है और सं० चत्वार शब्द सबल श्रेणी (strong grade) का रूप है। यह भा० *क्वेतुरिओ (queturio), कुतुरिओ (quturio) हि० ईरा० *क्तुर्य (सबल व निर्बल दोनों श्रेणी में यही रूप होगा) से आया है।

अपरॅम्—क्रिया विशेषण (द्वि० एक व० स्त्री०) 'दूसरी बार' तु० सं० अपरम्।

.ख्रओ.ज्द्येह्य—विशे० तृ० एक व०, < अवे० √ ख्रुत् या √ख्रुज़्, सं० √ क्रुध्+दा अवे० √दा, सं० √धा 'नाराज होना, तेज या ऊँची आवाज में होना, ऊँची श्रुति में'; ऊँची श्रुति के साथ, तु० सं० क्रुष्टतरा, तु० पह० प ख्रू.ज्दीक फ्राक स्रायिश्नीह।

१५. तूम्—प्र० एक व० द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम 'तुम', तु० सं० त्वम्।

.जॅमर्-गू.जो—विशे० द्वि० बहु व० 'भूमि के नीचे छिपने को'; .जॅम, तु०सं० क्ष्मा या ज्मा, पृथ्वी, भूमि; ग्रीक खमै, लै० हुमी, प्रा० चर्च स्लाविक भाषा जॅम्ल्य (zəmlya), आ० फा० ज़्मीन; और गूज़ शब्द भूतकाल कृदन्ती है अवे० √गु.ज़्, सं० √गुह् (१।८८१, संवरणे) 'छिपना', तु० सं० गुहा, क्रिया विशेषण 'छिपने की जगह'; तु० सं० क्ष्मागुहः या ज्मागुहः।

आकॅरॅनवो—मध्यम पुरुष एक व० भूतकाल आत्म० अवे० √कर्, सं० √कृ आ उपसर्ग है, तु० सं० आकृणोः; 'भूमि में छिप जाने का कारण बना'। अन्तर्भावितव्यर्थ है।

वीस्पे दअेव—द्वि० बहु व० 'सभी देवताओं को' तु० सं० विश्वान् देवान्।

योइ—प्र० बहु व० संबंध वाचक सर्वनाम 'जो', तु० गा० अवे० यए, य० अवे० (प्रा०) या, तु० सं० ये।

पर—क्रिया विशेषण 'पूर्व, पहले' सं० पुरा, परा।

अह्मात्—पं० एक व० निश्चय वाचक सर्वनाम 'इससे' तु० सं० अस्मात्।

वीरो-रओध—तृ० एक व० विशे० 'मनुष्यों के आकार वाले', अवे० रओध पुं० <अवे० √रओद्, सं० √रोह 'ऊँचाई = आकार। अवे० में वीर शब्द का अर्थ मनुष्य होता है और नर का अर्थ वीर, बलवान होता है। तु० सं० वीर-रोहाः।

अपतयन्—अन्य पुरुष बहु व० भूतकाल परस्मै०, अवे० √पत्, सं० √पत् (१।८२९ गतौ) 'दौड़ना, जाना', फिर रहे थे, तु० सं० अपतयन्।

पइति—पूर्वसर्ग 'पर' तु० सं० प्रति।

आय—यह आ सर्वनाम का तृतीया एक व० का रूप है। आ + आ = आया (यहाँ य सुस्वर संबंधी (euphonic) है अतः *आय 'इस' सं० अनया।

ज़ॅमा—तृ० एक व० क्रिया विशेषण अवे० जम / जॅम 'पृथ्वी'; तु० सं० क्षम्, ज्म्, तु० सं० ज्मा, प्रा० चर्च स्लाविक भाषा जेम्ल्या (zemlya), ग्रीक खामै, लै० हुमी, आ० फा० ज़मीन।

यो—प्र० एक व० सम्बन्ध वाचक सर्वनाम 'जो', तु० सं० यः, तु० य० अवे० यस् च, यसॅ, गा० अवे० या, यस्, हि० ईरा० यस्, तु० ग्रीक होन्।

अओजिश्तो—विशे० प्र० एक व० उत्तमावस्था उग्र शब्द से 'बड़ा बलवन्त' तु० सं० ओजिष्ठः, पह० अओजोमन्द, आ० फा० जोर्मन्द्तरीन।

तॅन्चिश्तो—विशे० प्र० एक व० उत्तमावस्था अवे० तॅन्म शब्द से <अवे० √तक, सं० √तक् 'बहादुर होना, मनस्वी होना', बड़ा कारीगर,

तु० सं० त्वञ्चिष्ठः, प्रा० फा० तउमा, पह० तकीक्, आ० फा० तह्म, तुख्म, दिलीर्तरीन।

थ्.वी.क्षश्तो—विशे० प्र० एक व० उत्तमावस्था अवे० थ्.व.क्ष शब्द से 'सबसे फुर्तीला'; तु० सं० त्वक्षिष्ठः <त्वक्ष, पह० तुख्.शाक, आ० फा० तुख्शातरीन।

आसिश्तो—विशे० प्र० एक व० उत्तमावस्था आसव् शब्द से, सबसे फुर्तीला, तु० सं० आशिष्ठः <आशु-तु० पह० तीज़, आ० फा० तुन्द्तरीन।

अस्-वॅरॅथ्रजाँस्तमो—विशे० प्र० एक व० उत्तमावस्था अवे० वॅरॅथ्रगन्। वॅरॅथ्रजन्, सं० वृत्रहन् 'विजयी' सबसे बड़ा विजेता। अस् पुरः प्रत्यय है 'अधिकता' के अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है, तु० सं० अति; तु० अतिवृत्रहन्तमः।

मइनिवाो—ष० द्वि०, मइन्यु शब्द से, सं० मन्यु, 'दोनों आत्माओं के' "अहुर-मज्दा ने दो आत्मायें बनाईं, एक अच्छी आत्मा (स्पेन्तामन्यु) और एक बुरी आत्मा (अङ्ग्रो मन्यु)। ये दोनों समान शक्ति वाली हैं तथा एक दूसरे के प्रतिकूल हैं। यह प्रतिकूलता ही संसार के क्रमिक विकास का परिणाम है। जरथुश्त्र ने इन दोनों शक्तियों के ऊपर अहुरमज्दा को माना है।" तु० सं० मन्वोः, आ० फा० मीनूयान। रिशेल के अनुसार—"अच्छी और बुरी आत्मायें नित्य प्रतिकूल हैं। अच्छी आत्मा शीघ्र विजित होती है (देखिये यस्न ३०.२)। यह द्वित्ववाद का विचार जरथुश्त्र ने, प्राचीन आर्यों के स्वर्ग एवं नरक में विश्वास, से लिया है (देखिये यस्त १९.४४), जो कि पुनर्जन्म एवं आत्मा की अमरता से सम्बद्ध है।"

दामाँन्—यहाँ द्वि० बहु व० नपुं० का प्रयोग स० बहु व० के लिये हुआ है, <अवे० √दा, 'लोक में, सृष्टि में, रहने का स्थान; तु० सं० धामानि <धामन् शब्द से है।

१६. वङ्हुश्—प्र० एक व० विशे० भूतकाल कृदन्ती अवे० √दा, सं० √धा (डुधाञ् ३ / धारणपेषणयोः) अच्छी तरह से बना हुआ, अच्छी रचना वाला, तु० सं० सुधातः। वेद में सुधित प्रयुक्त हुआ है।

अर्ऽ्शदातो—प्र० एक व० विशे० 'ऋत से उत्पन्न हुआ', य० अवे० अर्ऽ्श्= सच्चाई; तु० सं० ऋतधातः, तु० ऋग्० सं० ९।१०८।८।

वङ्हुश् दातो—प्र० एक व० विशे० 'उत्तमशक्तियों से रचा हुआ' तु० सं० वसुधातः।

बओेष.ज्यो—प्र० एक व० विशे० 'स्वास्थ्य देने वाला, तु० सं० भेषज्य, भेषज्यम्।

हुकॅरॅ.प्श्—प्र० एक व० विशे० 'सुन्दर आकृति वाला' तु० सं० सुकृप्, अवे० हु०, सं० सु क्रियाविशेषण 'सुन्दर अच्छा'। *.कृप शब्द आकार बनाने या रूप देने, अर्थ में ऋग्० ९।६४। ३८ में आया है।

ह्वरश्—प्र० एक व० विशे० <हु (सं० सु) + अवे० √वरॅ.ज् (सं० √वृज्) आ० फा० √व.र्जीदिन 'काम करना', 'अभ्यास करना' उत्तम कर्मों वाला; तु० सं० सुवृक्। ऋग्० १०।३८।५ में स्ववृज इन्द्र का विशेषण है।

वॅरॅथ्रजो—प्र० एक व० विशे० 'विजेता', तु० सं० वृत्रहाः 'शत्रुओं को मारने वाला।'

.जइरि-गओनो—प्र० एक व० विशे० <अवे० जइरि, सं० हरि, हरय्, पीला, पीले रंग का, सुनहरा; अवे० गओन, सं० गुण, रंग, तु० आ० फा० गून, रंग 'पीला या सुनहरा; तु० सं० हरिगुणः।

नॉम्याँ-शुस्—प्र० एक व० विशे० 'झुकी हुई डालियों वाला या मुलायम डालियों वाला' तु० सं० नम्रांशु।

यथ ख्वरॅ.ते वहिश्तो—यथा, अन्य पु० बहु व० वर्तमान कृदन्ती अवे० √.ख्वर से, तु० आ० फा० √खुर्दन 'खाना', पीने वाले के (शरीर के) लिये। कङ्ग के अनुसार यह वर्तमान कृदन्ती का चतुर्थी एक वचन का रूप है।' तु० सं० अश्नुवते, वशिष्ठः 'बड़ा उत्तम'।

उरुनअेच—च० एक व० उर्वान् शब्द से, तु० आ० फा० खान 'आत्मा'। यह उरु 'विस्तृत' शब्द से भी हो सकता है या <अवे० √वर्, सं० √वृ (वृञ्) ५।८, वरणे) 'चुनना' से, वर्तमान कृदन्ती आत्मनेपद, तु० सं० उर्वाने 'आत्मा के विषय में या आत्मा के लिये'।

पाथ्मइन्योतॅमो—विशे० उत्तमावस्था पथ्मइन्य शब्द का, यह शब्द पथ्मन् नपुं० से बना है रास्ता; सीधे रास्ते पर ले जाने वाला, तु० सं० पथवत्तमः।

१७. ते—ष० एक व० सर्व० निपात, यहाँ ष० एक व० का प्रयोग पं० एक व० के लिये हुआ है '(मैं) तुझसे (प्रार्थना करता हूँ) तु० सं० ते, आ० फा० तुरा।

.जाइरे—संबो० एक व० 'हे सुनहरे रंग वाले' तु० सं० 'हे हरे'।

मधॅम्—द्वि० एक व० पु० मद मध शब्द से 'मस्ती' तु० सं० मदम्।

म्रुये—प्र० पु० एक व० वर्तमान काल आत्मने०, अवे०, √म्रू, सं० √ब्रू (ब्रूञ्) २।३३, वचने) 'बोलना' नि शब्द के साथ प्रयोग हुआ है। सं० नि 'प्रार्थना करने के अर्थ में तु० सं० नि ब्रुवे।

अमॅम्—द्वि० एक व० पु० अम = शक्ति, वै० अम 'प्रेरणा, गति'; तु० सं० अमम्।

वॅरॅथ्रघ्नॅम्—द्वि० एक व० नपुं० 'शत्रुओं का वध, विजय, तु० सं० वार्त्रघ्नम् या वृत्रघ्नम्'।

दस्वरॅ—द्वि० एक व० नपुं० 'स्वास्थ्य' तु० सं० दस्वरम्, तु० आ० फा० दर्मान। "दस् शब्द से वैदिक दंसना, दस्म, दस्र बने हैं। यहाँ वर प्रत्यय के साथ दस्वर बनाया गया है। अवे० में यह शब्द वस्तुतः भेषज के साथ आया है। दोनों का सम्बद्ध अर्थ स्वास्थ्य और स्वास्थ्य के उपाय है।"

बअेष.जम्—द्वि० एक व० विशे० 'स्वास्थ्य के उपाय, दवा, औषधि' तु० सं० 'भेषजम्'।

फ्रदथॅम्—संज्ञा नपुं <√दा, अवे० .फ्र, सं० प्र 'आगे रहना' तु० सं० *प्रदधम्।

वरॅदथॅम्—संज्ञा नपुं० <अवे० √वरॅद, सं० वृध् 'वृद्धि' तु० सं० वर्धम्।

अओजो—द्वि० एक व० नपुं० विशे० 'शक्ति' तु० सं० ओजो।

वीस्पो-तनूम्—द्वि० एक व० नपुं० विशे० 'सारे शरीर का' तु० सं० विश्व-तनुम् ।

मस्तीम्—द्वि० एक व० स्त्री० <√मन्द् 'आनन्दित करना', बुद्धि, ज्ञान । कङ्ग इसे म.ज् (मह्) शब्द से मानता है, + ति, और इसका अर्थ करता है 'महानता', तु० ग्रीक माथेइन (mathein), (mantháno) 'निश्चय करना', गॉथिक मेम्दन (memdon), तु० आ० फा० मस्ती, तु० सं० मतिम् ।

वीस्पो-पअेसङ्हॅम्—विशे० <अवे० पएस्, सं० √पिङ्स् 'प्रशंसा करना, चतुर्दिक बुद्धि वाला, तु० अवे० स्तह्रपअेसङ्हॅम्, तु० सं० विश्वपेशसम् ।

यथ—'जिससे कि' तु० सं० यथा ।

गअेथाह्—स० बहु व० स्त्री०, अवे० गअेथा शब्द से, संसार, मानवजाति, अवे० √गी, √गय् 'रहना' तु० सं० √जी 'रहना', जीवधारियों में, तु० अवे० गएहे, तु० आ० फा० गीती, .जहान, तु० सं० गेथासु-आ; आ परसर्ग है जो यहाँ सप्तमी का अर्थ दे रहा है, तु० ग्रीक बिओस (bios).

वसो-.क्षथ्रो—प्र० एक व० विशे० 'निस्सीम या अनन्त राज्य' यहाँ पर क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है, <√वस् 'इच्छा करना', .क्षथ्र (<√क्षी 'राज्य करना'), शक्ति, तु० सं० वशक्षत्रः ।

.फ्रचराने—प्र० पु० एक व०, लोट् लकार आत्म० अवे० √चर्, सं० √चर्, अवे० फ्रा, सं० प्र उपसर्ग 'विचरण करूँ' ।

त्बअेषो—तउर्वाो—प्र० एक व० विशे०, त्बअेषो नपुं० <अवे० √त्बिष्, सं० √द्विष्, द्वेषः, शत्रुता, अपराध, घृणा; तउर्वाो <अवे०, √तउर्व् 'जीतना' तु० सं० तूर्वस् 'द्रोहियों को जीतने वाला तु० सं० द्विष्टुर्वाणो ।

द्रुजॅम्-वनो—प्र० एक व० विशे० अलुक् समास 'द्रोहियों को जीतने वाला', <√वन् 'जीतना', द्रुज 'अविश्वासी या अधार्मिक' तु० सं० द्रुहम्-वनः ।

१८. तउर्वयेनि—प्र० एक व० लोट् लकार परस्मै० अवे० √तउर्व्, सं० √तूर्व 'विजय पाना', (मैं) विजयी होऊँ, तु० सं० तूर्वयाणि ।

त्बिष्वताँम् <ष० बहु व० अवे० त्बएषह् शब्द से, सं० द्वेषः, शत्रुओं का, तु० सं० द्विष्वताम् ।

त्बअेषो—द्वि० बहु व० 'द्वेषों को' तु० सं० द्विषः !

याथ्.वाँम्—ष० बहु व० पु० <अवे० याथ्व, यातव्, तु० सं० यातव् 'जादूगर' तु० आ० फा० जादू 'जादू', तु० सं० यातूनाम् ।

पइरिकनाँम्—ष० बहु व० स्त्री० अवे० पइरिका शब्द से तु० √पर 'बहकाना, छलना, उड़ना' तु० आ० फा० √परीदन 'उड़ना', जादूगरनियों के, तु० सं० परिकाणाम्, आ० फा० पर्यान् । इस नाम का प्रयोग अवेस्ता में सदैव यातु शब्द के साथ होता है । यह यातुधान स्त्रियों के लिये समझा जाता है । फारसी का परी शब्द इसी से निकला है ।

साथ्राँम्—ष० बहु व० पु० अवे० सातर् शब्द से, सं० शास्तर् 'अत्याचारी, दुष्टशासक' <अवे० √सह्, तु० सं० √शास् 'शासन करना', दुष्ट शासकों के, तु० सं० शास्ता ।

कओयाँम्—ष० बहु व० पु० अवे० कवि शब्द से, सं० कवि, कवय् 'कवों के' । कव से अभिप्राय दुष्ट कवि-देखते हुए न देखने वाले, से है । कव और क्रुपण शब्द अवेस्ता में इकट्ठे आते हैं । तु० पह० कयक् ।

कर.फ्नाँम्—ष० बहु व० पु०, अवे० करफ्न् या कर्फन् शब्द से । इस शब्द का प्रयोग अवेस्ता में सदैव कवि शब्द के साथ होता है । क्रुपण से अभिप्राय सुनते हुए न सुनने वाले से है । तु० सं० क्रुपणानाम्, तु० आ० फा० कर्पान्हा ।

मइर्यनाँम्—ष० बहु व० अवे० मइर्य शब्द से, सं० √मर् 'नष्ट करना', सांपों के तु० सं० मर्याणां, आ० फा० मार्हा ।

बिजन्व्रनाँम्—ष० बहु व० विशे० 'दो जंघाओं वाले' तु० सं० द्विजङ्घानाम्; आ० फा० दुपायी ।

अषॅमओघनाँम्—ष० बहु व०, यह अषॅ और मओघ का समस्तपद है । <अवे० √मुघ्, सं० √मुह् 'अशुद्ध करना, रूप बिगाड़ना' 'ऋत को नष्ट करने वालों के या धर्मध्वजियों के' तु० सं० ऋतमोघानाम् ।

वॅह्र्कनॉम्—ष० बहु व० पु० <अवे० वह्र्क शब्द से, सं० वृक, आ० फा० गुर्ग 'भेड़ियों का' तु० सं० वृकाणाम्, आ० फा० गुर्गान। यहाँ भेड़िये से दुष्ट हत्यारे का तात्पर्य है।

चथ्वरॅ-जन्ग्रनाँम्—ष० बहु व० विशे० 'चार जंघाओं वाले' तु० सं० चतुर्जङ्घानाम्, तु० आ० फा० सहार-पायी।

हअेन्योस्—ष० एक व० विशे० का प्रयोग द्वि० बहु व० के लिये हुआ है। 'सेनाओं के' तु० सं० सेनायाः।

पॅरॅथु-अइनिकयाो—ष० एक व० विशे० <अवे० पॅरॅथु (द्वि० एक व० पु०) क्रियाविशेषण 'विस्तृत', अइनिक=अग्रभाग; बहुत बड़े अग्रभाग वाली, तु० सं० पृथ्वनीकायाः।

दवाँइथ्याो—ष० एक व० वर्तमान कृदन्ती अवे० √दव् 'बोलना', धोखा देती हुई, मोहती हुई, दौड़ती हुई, तु० सं० दवन्त्याः।

पताँइथ्याो—ष० एक व० वर्तमान कृदन्ती √पत् 'तेज गति होना', दौड़ती हुई या उड़कर आ पड़ती हुई, तु० सं० पतन्त्याः।

१९. इमॅम्—द्वि एक व० पु० नपुं० अवे० अअेम शब्द से, निश्चय वाचक सर्वनाम 'यह', सं० अयम्, तु० सं० इमम्, भा० ईरानी इमम्, प्रा० फा० इमम्, तु० भारोपीय इमोम्।

थ्वाँम्—द्वि० एक व०, द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम, अवे० तूम्, सं० त्वम् 'तू, तुम' प्रा० फा० तुवम्, वै० तुवम्, भारो० तुवोम्; तु० सं० त्वाम्, प्रा० फा० थुवाम्, ग्रीक से (sé) 'तुमको'।

पओइरीम्—निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) यहाँ क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है; 'पहला' (तु० अवे० फ्रतॅम 'पहला' सं० प्रथम); तु० सं० पूर्व्यम्, पह० फ्रतूम्।

यानॅम्—पु०, <अवे० √यम्, सं० √यम्, √यच्छ 'सहायता देना, कृपा करना'; 'यान, शब्द अवेस्ता में संस्कृत से एक निराले अर्थ 'दान' में प्रयुक्त होता है। वरदान, तु० सं० यानम्, पह० यान् तु० आ० फा० इनाम (अरबी भाषा से लिया गया है)।

जइध्येमि—प्रथम पु० एक व० वर्तमान काल अवे० √जद्, सं० √गद् (गद) १।५० व्यक्तायां वाचि) 'प्रार्थना करना, माँगना', तु० आ० फा० √.जुस्तन 'ढूँढना', तु० सं० गदयामि।

वहिश्तॅम् अहूम्—'सबसे अच्छा संसार', वहिश्तॅम्—विशे० अवे० वङ्हुव् शब्द का उत्तमावस्था है तु० सं० वशिष्ठ 'सबसे अच्छा'। अहूम्-पु० 'संसार, जीवन' सं० असुम्, फारसी बिहिश्त 'स्वर्ग', तु० आ० फा० बेहतरीन ज़िन्दगी।

अषओनाँम् - ष० बहु० व० अवे० अषओन शब्द से, सं० ऋतावन्, तु० सं० ऋतावनाम् 'ऋत (सत्य) पर चलने वालों का'।

रओचङ्हॅम्—द्वि० एक व० नपुं० अवे० शब्द रओच से, तु० प्रा० फा० रउच, पह० रोश 'रोशनी, प्रकाश'; यहाँ पर विशेषण है 'चमकता हुआ' तु० सं० रोचसम्, आ० फा० रौशन।

वीस्पो-ख.वार्थॅम्—विशे० बार्थलोम इसे ख.वाथ्रम् शब्द से निष्पन्न मानता है <अवे० हु+आथ्र नपुं० और इसका अर्थ करता है 'खुशी, प्रसन्नता'। कङ्ग इसे ख.वन् शब्द से निष्पन्न मानता है 'चमकना, प्रकाशित होना, खुश होना' तु० सं० √स्वन्+अवे० थ्र उपसर्ग, समस्त तेज से परिपूर्ण, तु० सं० विश्व-स्वनित्रम्।

बितीम्—निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) द्वि० एक व०, दूसरा तु० सं० द्वितीयम्, पह० दतीगर, आ० फा० दुवम्, दुएमिन।

द्व्रतातॅम्—स्त्री० द्वि० एक व० द्व्रतात् शब्द से 'स्वास्थ्य' <अवे० √दर् 'तेजी या मजबूती से पकड़ना', तु० सं० √धृ, तु० आ० फा० दुरुस्ती, तु० सं० ध्रुवतातिम्।

अङ्हाोसॅ—ष० एक व० स्त्री० निश्चयवाचक सर्वनाम अवे० अअेम् 'यह', सं० अयम् 'यह', तु० प्रा० फा० इयम्; तु० सं० अस्याः।

तन्वो—ष० एक व० तनू शब्द से, तु० सं० तनोः, पह० और आ० फा० तन 'शरीर के'

थ्रितीम्—निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) द्वि एक व० 'तीसरा' तु० सं० तृतीयम्, तु० पह० सतीगर, आ० फा० सुयेमिन।

जइध्येमि—स्त्री०, अवे० दरॅग, दरॅघ, विशे० 'लम्बा', दीर्घ जीवन, तु सं० दीर्घ जीवितम् तु० पह० दीर्.जविश्नीह्–इ–जान, आ० फा० दरा.ज़-ज़िन्दगी।

उश्तानहे—ष० एक व० पु०, नपुं० उश्तान शब्द से 'अध्यात्मबल का' सं० उश्तानस्य। "उश्तान शब्द का न.जदीकी अनुरूप प्राण मालूम होता है।"

२०. तूइरीम्—द्वि० एक व० नपुं० निश्चयार्थी क्रम लेकिन क्रियाविशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है। 'चौथा'; तु० सं० तुरीयम्, पह० तसूम, आ० फा० शहार्मीन। १४वें नं० का श्लोक भी देखिये।

यथ—क्रियाविशेषण, 'जिस तरह, जैसे', तु० सं० यथा।

अअेषो—प्र० एक व० <अवे० √इष्, सं० √इष् 'इच्छा करना, चाहना', इच्छानुसार तु० सं० एषः।

अमवाो—प्र० एक व० विशे० 'शक्ति से पूर्ण'; तु० पह० अमावन्द, तु० सं० अमवान्।

थ्रा.फॅघो—विशे० <अवे० √थ्रा.फ्; सं० √तृप् 'सन्तुष्ट करना'; तृप्त हुआ, सन्तुष्ट हुआ, तु० सं० तृप्तः।

.फ्रक्ष्ताने—प्रथम पु० एक व० लेट्लकार आत्मने० अवे० √स्ता, अवे० फ्रा, सं० प्र, '(मैं) विचरण करूँ, प्रतिष्ठा पाऊँ'; तु० सं० प्रतिष्ठानि, तु० पह० फ्रा.ज़्शतूनीह्।

.ज़ॅमा–पइति—देखिये श्लोक संख्या १७।

द्रुजॅम्–वनो—देखिये श्लोक संख्या १७।

पु.ख्धॅम्—द्वि० एक व० नपुं० निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) है परन्तु क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। 'पाँचवाँ', तु० सं० पञ्चम, *पङ्क्तम्, पह० पन्जूम, आ० फा० पन्जुमीन। <भारो० *प्रेङ्क्वे, *पुङ्क्तो, भा० ईरा० *पुक्.थ, अवे० पुख्ध। अवेस्ता थ–और ध–में अन्त होने वाला दो निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) दिखाता है; अवे० ह्प्तथ और पुख्ध; तु० सं० पञ्चथ, सप्तथ, प्रा० ह्रा० जर्मन फुन्फ्तो।

वनत्-पॅषनो—विशे०, 'लड़ाई जीतते हुए', वनत् <अवे० √वन् 'जीतना'; पॅषनो नपुं० (तु० सं० सजातीय शब्द पृतना स्त्री०) <अवे० √परॅत्, सं० √पृत् 'लड़ाई, युद्ध' तु० सं० वनत्-पृतनः ।

२१. क्ष्तूम्—द्वि० एक व० निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) लेकिन यहाँ क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है, 'छठवाँ' तु० अवे० के दूसरे रूप से क्ष्त्व, सं० षष्ठम्; अवे० सामान्य नम्बर क्ष्वस्, तु० आ० फा० सामान्य संख्या (cardinal number) शश् और निश्चयार्थी क्रम (ordinal number) शशुम ।

पउर्व—प्र० बहु० व० विशे० पर क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है 'पहले' तु० सं० पूर्व ।

तायूम्—द्वि० एक व० पु० 'चोर, डकैत', तु० सं० तायव्, स्तायव् ।

गधॅम्—द्वि० एक व० पु० 'घातक, कातिल' तु० सं० *गधम्, गदम् (प्रचलित रूप), पह० गदक्, गधक्, आ० फा० गदा, गदाय 'गरीब, भिक्षु' ।

बूइध्योइमइधे—प्रथम पु० बहु० व० विधिलिङ् आत्मने० अवे० √बओद्, सं० √बुध 'जानना, सतर्क रहना', (हम) सावधान हो जायें; तु० सं० बुध्येमहि ।

मा—निषेधात्मक निपात, तु० सं० मा, पह० और आ० फा० मा 'नहीं' ।

चिश्—'कोई' । यह प्रश्नवाचक निपात सर्वनाम (प्र० एक व० पु०) का तालव्य रूप है । "ऋगवेद में किः रूप मिलता है जैसे माकिः नकिः । नपुंसक लिंग का संस्कृत में तालव्यीकरण हो जाता है चित् तु० लै० कुओ (quo) कुइस्क (quisque) ग्रीक पोतिस् (potís)".

पउर्वो—प्र० एक व० पु० विशे० है पर क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है 'पहले' तु० सं० पूर्वो ।

बूइध्यअेत—अन्य पु० एक व० विधिलिंग आत्मने०, अवे० √बओद्, सं० √बुध् 'जागना', जागे, तु० सं० बुध्येत ।

वीस्पे—विशे० प्रथमा बहु व० लेकिन अर्थ दे रहा है द्वि० बहु व० का 'सबसे, सबके', तु० सं० विश्वे ।

२२. अअेइबिश्—तृ० बहु व० पु०, नपुं० निश्चय वाचक सर्व०, अवे० अअेम् 'यह'। यह तृतीया विभक्ति है पर चतुर्थी के लिये प्रयुक्त है। तु० सं० एभिः, एभ्यः 'इनको, इनके लिये'।

योइ—प्र० बहु० सम्बन्ध वाचक सर्वनाम यः 'जो' तु० सं० ये 'जो', ग्रीक होइ (hoí)।

अउर्वन्तो—द्वि० बहु व० 'घोड़ों को' <अवे० √अर्, सं०√ ऋ 'तेज होना' तु० सं० अर्वन्तः, तु० पह० अर्वन्द।

हित—पु० (मूलतः यह लिट् कृदन्ती कर्मणि है अवे० √हाय् या √हि, सं० √सी, √सा 'बाँधना', सुशिक्षित। 'इस शब्द का प्रयोग द्वि वचन या बहुवचन के लिये हुआ है' तु० सं० सिता।

तक्षॅन्ति—अन्य पु० एक व० लट्लकार परस्मै०, अवे० √त.क्षॅ 'दौड़ना, घूमना,' बढ़ाते हैं (घोड़ों को), तु० सं० तक्षन्ति, पह० तख्शाक कर्तन, तु० प्रा० फा० (हम) त.क्षइय, (हम) तक्षता, (हम) तक्षन्ता इत्यादि, तु० आ० फा० तुख्शाक, तु० आ० फा० √ता.ख्तन।

अरॅनाउम्—द्वि० एक व० 'संग्राम, लड़ाई, जीत' तु० सं० अरणम्, तु० प्रा० हाई जर्मन एर्नुस्त (ernust)।

.जावरॅ—द्वि० एक व० नपुं० 'शक्ति' <अवे० √.जु 'मजबूत होना', तु० सं० जवः, तु० पह० .जवार, आ० फा० .जोर।

ब.क्षइति—अन्य पुरुष एक व० वर्तमान निर्देशक, अवे० √ब.क्ष्, सं० √भक्ष् 'वितरण करना, बाँटना', देता है, तु० आ० फा० √बख्शीदन, बख्शद, सं० भक्षयति।

आ.जी.जनाइतिबिश्—तृ० बहु० व० स्त्री० लट् कृदन्ती, अवे० √.जन्, सं० जन्, आ० फा० .जादन 'जन्म देना'। चतुर्थी की जगह तृतीया का प्रयोग है। संतति वाले, तु० सं० आजीजनान्तिभ्यः, तु० पह० आ.जातानिह।

दधाइति—अन्य पु० एक व० वर्तमान निर्देशक (Present Indicative) √दा, सं० दधाति 'देता है' तु० आ० फा० दिहद।

.क्षअेदो-पुथ्रीम्—द्वि० एक व० नपु० <अवे० √.क्षि, सं० √क्षि (१/९३३, ऐश्वर्ये) 'चमकना', 'शासन करने वाले वीर पुत्र को', तु० सं० क्षयत् पुत्रम्, तु० आ० फा० पिस्रान इ-नामवर (pisrān-i-nāmwar)।

अषव—फ़.जइन्तीम्—द्वि० एक व० स्त्री० 'धर्म पर चलने वाली संतति', तु० सं० ऋतावत् प्रजातिम्, पह० अहृूब .फ़.र्जन्द; आ० फा० फर्जन्दान-इ-पार्सा।

तअेचित्—प्र० बहु व० या चतुर्थी बहु व० पु० निश्चय वाचक सर्वनाम त से 'यह'; चित् अनिश्चयात्मक निपात सर्वनाम है। यहाँ 'सब, सभी' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है; 'इनको' तु० सं० ते चित्।

योइ—प्र० बहु व० पु० वाचक सर्वनाम य से, 'जो' तु० सं० ये।

कतयो—प्र० बहु व० <अवे० √कन्, सं० √खन् (खनु १/अवदारणे) 'खोदना', कल्याण, घर को रक्षा करने वाले, अवे० कत = घर या रहने का स्थान, तु० पह० कतोक, आ० फा० कद या कदेह 'घर' तु० सं० कतयः (कति शब्द का बहुवचन। यह केवल ध्वनिसादृश्य के लिये दिखाया गया है, अर्थसादृश्य के लिये नहीं। अवेस्ता में संस्कृत से अधिक अर्थ में यह प्रयुक्त होता है)।

नस्को-.फ्रसाोङ्हो—प्र० बहु व० विशे० 'नस्कों को प्रशासन (उपदेश)'

नस्क प्रशासः—नस्क पारसियों के प्राचीन २१ धर्म पुस्तक थे, जिनमें जरथुश्त्र के धर्म का पूरा वर्णन था, जिनमें से बहुत से सिकन्दर के विजय के समय नष्ट हो गये। (अवे० *नस्क 'गट्ठर, एकत्रित सामग्री)। .फ्रसाोङ्हो <अवे० √साष्, सं० √शास् 'शासन करना, नियन्त्रित करना' अवे० फ्रा, सं० प्र; तु० सं० नस्कप्रशासाः, तु० पह० प नस्क फ्राश् आमोख्तिश्निह, आ० फा० नस्क-नशीनन्द, नस्क-अमोख्तन्द।

आोङ्हॅन्ते—अन्य पु० बहु व० लट्लकार आत्मने० अवे० √आह्, सं० √आस् (आस) २।११, उपवेशने), तु० फ्रेंच √s'asseoir 'to sit' (बैठना), करते रहते हैं, तु० सं० आसते।

स्पानो—द्वि० एक व० नपुं० स्पानह् शब्द से 'बुद्धि, पवित्रता, शुद्धता' तु० विशे० स्पॅन्त, पवित्र और स्पनह्, तु० पा.जन्द स्पेनाक; सं० *शुनम् ।

मस्तीम्—देखिये श्लोक संख्या १७ ।

२३. तोस्चि.त्—प्र० बहु व० का प्रयोग है चतुर्थी बहु व० स्त्री० के लिये, निश्चयवाचक सर्वनाम त 'यह', चित् अनिश्चयात्मक पश्चाश्रयी सर्वनाम्, यहाँ 'सर्व' के अर्थ में प्रयुक्त है। 'उन सबको या उन सबके लिये' तु० सं० ताश्चित् ।

कइनीनो—प्र० बहु व० स्त्री० कइनिन् या कइन्या या कइनी शब्द से तु० वै० कनीनका, सं० कन्या, कनीनाः, पह० कनीक, आ० फा० कनीज़ कनीज़क ।

ओङ्हइरे—अन्य पु० बहु व० लट्लकार आत्मने० अवे० √आह्, सं० √आस् बैठना' तु० सं० आसिरे 'रहती हैं' (who have remained) ।

दरॅघॅम्—क्रिया विशेषण मूलतः अवे० दरॅघ शब्द का द्वि० एक व० है, गाँथिक अवे० दरॅग, सं० दीर्घ, तु० सं० दीर्घम्, आ० फा० दराज; दीर जमानी 'बहुत समय के लिये' ।

अघ्रो—प्र० बहु व० विशे० <गरव् या घ्रु 'भारी', कङ्ग इसकी व्युत्पत्ति करता है अ (नकारात्मक) + घ्रु (गुरु, पति) कुवाँरी, तु० सं० अग्रुवः ।

हइथीम्—द्वि० एक व० विशे०, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है, सत्य, विश्वसनीय, तु० सं० सत्यम्, तु० पह० आश्कारक ।

राधॅम्—द्वि० एक व०, पति, प्रेमी; <अवे० √राद् / √राध्, सं० √राध् 'रक्षा करना' तु० सं० *राधम् । वेद में राधस् शब्द मिलता है जो धन का पर्याय है (देखिये ऋग्० ४।३२।२३) ।

ब.क्षइति—अन्य पु० एक व० वर्तमान निर्देशक (देखिये श्लोक संख्या २२) ।

मोषु—क्रियाविशेषण 'शीघ्र, जल्दी से', तु० वैदिक सं० मक्षू तथा लौकिक सं० मंक्षु ।

जइध्यम्नो—लट् कर्मणि कृदन्त अवे० √जद् या गद् तु० सं० √गद् (गद)

१।५०, व्यक्तायां वाचि) 'बोलना', याचना किया जाता है, तु० सं० गद्यमानः ।

हु.ख़्रतुश्—प्र० एक व० विशे० 'अच्छे कर्मों वाला' तु० सं० सुक्रतुः तु० पहृ० हुख़्रत, हुख़्रतीह हुखिरत, तु० आ० फा० खिरद्मन्द ।

२४. तॅम्चि.त्—द्वि० एक व० निश्चय वाचक सर्वनाम त, तु० सं० तम्-चित्, चित् का प्रयोग यहाँ बलात्मक है; 'निस्संदेह उसको' ।

कॅरॅसानीम्—द्वि० एक व० *कृशानु वेद में सोमरक्षक है । देखिये ऋग्० ४।२६। ३; ९।६६।२ । तै० सं० १।२।७ । ऐ० ब्रा० ३।२६ तथा ऋग्० १।१२२। २१ और १।१५५।२ । अवेस्ता में कृसानि सोम के विरुद्ध माना गया है । तु० वै० कृशानुः सोम का रक्षक, तु० सं० कृशानिम् तु० आ० फा० किर्सानी ।

अप-.क्षथ्रॅम्—विशे० 'गद्दो से नीचे कर दिया', अप पूर्वसर्ग है—'से', .क्षथ्रॅम्- द्वि० एक व० 'राज्यबल या सिंहासन से' कृशान हओम के द्वारा गद्दी से उतार दिया गया था और राज्य से निकाल दिया गया था; तु० सं० अपक्षत्रम् ।

निषाधय.त्—अन्य पु० एक व० लङ् परस्मै० प्रेरणार्थक रूप है अवे० √हद्, सं० √सद् (षद्लृ) १।८३९, उपवेशने), नि उपसर्ग के साथ, नीचे बिठा दिया, (सिंहासन से) उतार दिया, तु० सं० निषादयत् ।

रओस्त—अन्य पु० एक व० लङ्लकार अवे० √रओद्, सं० √रुध् या √रुह् (रुह) १।८४३, प्रादुर्भावे) उगना, बढ़ना, चढ़ना', बढ़ा हुआ था, तु० सं० अरुद्ध ।

.क्षथ्रो-काम्य—स० एक व० स्त्री० 'राज्य कामना में'; तु० सं० क्षत्र-कामा ।

दवत—अन्य पु० एक व० भूतकाल आत्मने० √दव् 'बोलना' धमकाया, तु० सं० धूनत ।

मे—चतुर्थी एक व० प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम, पश्चाश्रयी (enclitic) 'मेरे' तु० सं० मे ।

अपाँम्—क्रियाविशेषण द्वि० एक व० अप शब्द से, 'इससे आगे' तु० सं० अपाम् ।

आथ्रव—पु० 'पुरोहित', कङ्ग के अनुसार <आतश् (अग्नि) + √वन् 'जीतना'; तु० सं० अथर्वा, अथर्वन्।

अइ.वश्तिश्—द्वि० बहु व० स्त्री० <√अह्, सं० √अस्; अवे० अइवि, सं० अभि, और -ति परसर्ग है। तु० सं० अभ्यस्तिः 'अभ्यासी (शास्त्र वेत्ता)'।

वॅरॅध्ये—चतुर्थी तुमुनन्त <अवे० √वरॅद्, सं० √वृध् 'बढ़ना'; वृद्धि के लिये, तु० सं० वृद्धये।

दख़्हव—स० एक व० स्त्री० दख़्हु, दख्यु, प्रा० फा० दह्याउ (दह्यु), सं० दस्यु 'देश, राज्य' तु० पह० देह्, आ० फा० देह / दिह तु० सं० दस्यौ, प्रा० फा० दह्युवा।

चरा.त्—अन्य पु० एक व० अवे० √कर्, तु० सं० √चर् (चर) १।५५८, गत्यर्थः) 'घूमना, चलना', तु० आ० फा० चरीदन्, घूमे, फिरे, तु० सं० चरात्।

वीस्पे—प्र० एक व० विशे० है वीस्प शब्द से, सं० विश्व 'सम्पूर्ण, सभी'।

वॅरॅधिनॉम्—षष्ठी बहु व० अवे० वॅरॅधय् शब्द से पु०, 'वृद्धियों को, उन्नति को' अवे० √वरॅद्, सं० √वृध्; तु० सं० वृद्धीनाम्' तु० पह० वुर्तीह।

वना.त्—अन्य पु० एक व० क्रिया का संशयार्थक सूचक रूप (लेट् लकार) (Subjunctive) अवे० √वन्, सं० √वन् 'जीतना'; जीत ले, तु० सं० वनात्।

नि-जनात्—अन्य पु० एक व० लेट् लकार (संशयार्थक सूचक क्रिया रूप), अवे० √जन्, सं० √हन् 'मारना, नष्ट करना'; नष्ट कर देवे, तु० सं० हनात्, नि उपसर्ग है।

२५. उश्त—क्रिया विशेषण अवे० उश्तय् (स्त्री०) शब्द का स० एक व० है। उश्ता शब्द का अर्थ 'स्वास्थ्य' होता है। शायद यह अवेस्ता √उष्, सं० √उष् (उष) १।६८७, दाहे) 'गर्म होना' (मानव शरीर की गर्मी) से सम्बद्ध है। सं० वषट्, गॉ० अवे० उश्ता तु० पह० नेवक, 'भलाई हो'।

.ख्वा—तृ० एक व० सर्वनाम, अवे० .ख्व, सं० स्व 'अपना, अपने' तु० सं० स्वा, स्वेन, तु० यं० अवे० ह्व, ह्व, आ० फा० ख्वेश।

अओजङ्ह—तृ० एक व० नपुं० अवे० अआजङ्ह शब्द से, अवे० अओजह्, सं० ओजस्, शक्ति से या बल से, तु० सं० ओजसा।

अपिवतहे—मध्यम पु० एक व० लट्लकार आत्मने० अवे० √व.त् या √वअे.त् 'समझना, जानना'; तु० सं० √विद्, अवे० अइपि, सं० अपि, तु० सं० अपिवित्से 'जान लेता है, अपना लेता है'।

पोउरु-वचाँम्—पु० ष० बहु व० 'बहुत बड़े वचनों को' तु० सं० पुरुवचसाम्, तु० आ० फा० पुरसुखन।

अॅरॅ.जु.ख्धॅनाँम्—ष० बहु व० विशे०, सीधे सरल कहे हुए, तु० सं० ऋजूक्तानां, गाँ० अवे० अॅरॅश्, यं० अवे० अरॅश् क्रिया विशेषण 'सरलता से, सच्चाई से', अवे० उ.ख्ध विशे० पूर्ण कर्मणि कृदन्त √वक् 'बोलना' शब्द से, 'कहे हुए' तु० सं० उक्त, नपुं०।

पइरि-.फ्रास—तृ० एक व० परिप्रश्न से <अवे० √पॅरॅस्, तु० सं० √पृच्छ, आ० फा० √पुरसीदन 'पूछना', अवे० पइरि उपसर्ग है, सं० परि, तु० सं० *परिप्राशम्, वै० प्रतिप्राशः, परिप्राशा।

पॅरॅसहे—मध्यम पु० एक व० वर्तमान निर्देशक (Present Indicative) कर्तृवाच्य, <अवे० √पॅरॅस्, सं० √पृच्छ 'पूछना' तु० सं० पृच्छसि 'पूछता है।'

वाचिम्—द्वि० एक व० पु० अवे० वक् / वच् शब्द से 'शब्द'; अवे० का रूप वाचॅम्, तु० सं० वाचम्।

२६. फ्रा-बरत्—अन्य पु० लङ्लकार परस्मै० अवे० √बर्, सं० √भृ/√भर (डुभृञ्) ३/५, धारणपोषणयोः), आ० फा० √बुर्दन 'ढोना, ले जाना', लाया तु० सं० प्राभरत्।

मज.दो प्र० एक व० अवे० म.ज्दाह् (स्त्री०) शब्द से, सं० मेधस्, प्रा० फा० म.ज्दाह 'बुद्धि', विधाता। मज्दा—मह् + धा से है अर्थात् बड़ा उत्पादक या महिमा से पूर्ण, शक्तिमान्, विधाता।

पउर्वनीम्—द्वि० एक व० विशे० (स्त्री० पउर्वा) पहली, तु० सं० पूर्वानम् <पूर्व, तु० पह० पेश् ।

अइव्योङ्हनॅम्—द्वि० एक व० नपुं० <अवे० अइवि + योङ्हन, योङ्हन् <√याह्, सं० √यास् 'चारों ओर लपेटना', मेखला, तु० सं० अभ्यासनम्, पह० अइव्याह्न । यह मेखला २४, २४ ऊन के तन्तुओं के तीन फीते मिला कर ७२ तन्तुओं की बनाई जाती है । इसको प्रत्येक नर नारी पहनता है, जो पहनने के दिन से लेकर मृत्यु पर्यन्त सुरक्षित रखी जाती है । यह संस्कार ७ से १५ वर्ष की आयु तक पूरा किया जाता है । इसको नवजात (=नया जन्म) कहते हैं । पारसियों का यह संस्कार आर्यों के यज्ञोपवीत संस्कार से मेल रखता है । आर्य यज्ञोपवीत को कन्धे पर धारण करते हैं, पारसी मेखला की नाईं कमर पर बाँधते हैं । स्मृतियों में यज्ञोपवीत संस्कार का नाम मौञ्जीबन्धन (मेखला बाँधना) भी है । यज्ञोपवीत से भी पुरुष का दूसरा जन्म माना जाता है जिससे कि वह द्विज बनता है । पारसियों में इस संस्कार का नाम ही 'नवजात' है ।

स्तॅह्र्पअेसङ्हॅम्—द्वि० एक व० नपुं० विशे० समस्तपद है स्तर् + पअेसह् 'तारारूपी मोतियों वाली' तु० सं० स्तृपेशसम्; अवे० स्तॅह्र्, तु० सं० स्तारक, तारका, ग्रीक अस्तेर, लैटिन स्टेला, फ्रेंच एतोल (étoile), पह० स्तर, स्तारक, आ० फा० सितारः 'तारा'; पअेसङ्हम् < √पअेस, सं० √पिस् 'सजाना, सुशोभित करना'; तु० वीस्पो-पअेसङ्हॅम श्लोक संख्या १७ में ।

मइन्युताश्तॅम्—द्वि० एक व० नपुं० विशे० समस्तपद है मइन्यू (पु० √मन् 'मन, अच्छी एवं बुरी आत्मा) और ताश्तॅम् <अवे० √तश्, सं० √तक्ष् (तक्ष्) १।६४६, विधाने, निर्माणे) तु० आ० फा० √तवाशीदन 'बुनना'; दो आत्माओं से बनाई गई, तु० सं० मन्यु-तष्टम् ।

वङ्हुीम्—द्वि० एक व० स्त्री विशे० <अवे० वङ्हु, वोहु, स्त्री०, वङ्ह्वी 'अच्छी, उत्तम', तु० सं० वस्वीम्, पह० वेह ।

दअेनाँम्—द्वि० एक व० स्त्री०, अवे० दअेना 'भक्ति भावना', अवे० √दाय् 'देखना' तु० सं० धी, और आ० फा० √दीदन 'देखना'।

माज्दयस्नीम्—विशे० समस्तपद है मज्दा+यस्न <अवे० √यस्, सं० √यज् (यज) १।९८६, देवपूजायाम्) 'पूजा करना', मज्द की पूजा, तु० सं० मद्धायज्ञीम् (मेधायज्ञीम्)।

आअ.त्—क्रिया विशेषण पंचमी एक व० अ शब्द से, तु० सं० आत्, अथ 'तब, इसके अनन्तर'।

अ॒हे—ष० एक व० पु० निश्चय वाचक सर्वनाम अवे० अअेम् 'यह' तु० अवे० अहे, तु० सं० अस्य।

अइ०यास्तो—प्र० एक व० पु० लङ् कृदन्ती अवे० √यास् अइवि उपसर्ग के साथ है; 'युक्त हुआ' तु० सं० अभियस्तः।

वरॅष्नुश्—द्वि० बहु व० <अवे० √वरॅ.ज्, सं० √वर्ह्, √वध् 'बढ़ना', ऊँचाई तु० सं० बर्हणुम्।

गइरिनाँम्—ष० बहु व० पु० अवे० गइरि शब्द से, सं० गिरि, 'पर्वतों की' तु० सं० गिरीणाम्।

द्राजङ्हे—क्रिया विशे० द्वि० एक व० अवे० दरॅघ विशे० 'लम्बे समय के लिये'; तु० सं० द्राघसे; तु० आ० फा० दराज्।

अइ.विधाइतीश्च—द्वि० बहु व० स्त्री० 'शब्दों' तु० सं० अभिधातेश्च, तु० सं० सजातीय शब्द अभिधान।

ग्रवश्च—पु० 'उच्चारण और तात्पर्य <अवे० √ग्रब, सं० √ग्रभ्, आ० फा० √गिरफ्तन 'पकड़ना'; तु० सं० गृभश्च, तु० पह० ग्रव, आ० फा० घर्व्। कङ्ग इसका अनुवाद 'ऋचाओं' करता है, अवे० √गर्, सं० √गृ 'गाना' से।

माँथ्रहे—ष० एक व० पु० <अवे० √मन्, सं० √मन् 'मन्त्रों की, शास्त्रों की' तु० सं० मन्त्रस्य, तु० पह० मान्स्र।

२७. न्मानो-पइते—सं० एक व० पु० 'घर के मालिक'। न्मान शब्द के लिये देखें श्लोक संख्या १३, तु० सं० दम्पतेः।

वीस्पइते—सं० एक व० स्त्री० 'ग्राम के मालिक', वीस्, स्त्री० ग्राम, संघ, तु० सं० विश्पतेः, श्लोक संख्या ७ भी द्रष्टव्य है।

जन्तुपइते—सं० एक व० पु०, 'प्रान्त के मालिक', जन्तु=प्रान्त, तु० सं० जन्तु-पतेः।

दङ्हुपइते—सं० एक व० पु० 'देश के मालिक' तु० सं० दस्युपतेः, तु० पह० देहपत, तु० आ० फा० दिह्.कान।

इस श्लोक से हमें फारस के राजनैनिक संगठन के प्राकृतिक प्रबन्ध के बारे में पता चलता है। प्राचीन ईरानियों में घर सबसे छोटी राजनैतिक इकाई थी जो इस प्रकार विभाजित थी—न्मान 'घर' (परिवार), वीश् 'ग्राम' (परिवारों का संघ), जन्तु 'प्रान्त' (ग्रामों का संघ), दङ्हु 'जमीन या देश' (देशों का संघ)।

स्पनङ्ह—तृ० एक व० नपुं० अवे०√स्पनह् 'पवित्रता से' तु० सं० स्वनसा।

वअेध्यापइते—सं० विद्या स्त्री० 'विद्या बुद्धि के पति या रक्षक' <अवे० √वअेद्, सं०√विद् 'जानना'।

अमाइच—च० एक व० पु० 'शक्ति या साहस के लिए' तु० सं० अमाय, च निपात 'और' अर्थ में प्रयुक्त है।

मावोय—च० एक व० प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम 'अपने आप के लिये', तु० गॉ० अवे० मइब्या, मइब्यो और निपात अवे० मोई, तु० सं० मह्यम्, पश्चाश्रयी मे।

उपम्रुये—प्र० पु० एक व० लट् आत्मने० अवे० √बर्, सं०√भर् 'ले जाना', 'से दूर ले जा' तु० सं० विभर।

त्बिष्वताँम्—ष० बहु० व० नपुं० त्बअेषो शब्द से; सं० द्वेषः 'घृणा, हानि', द्वेषियों के, तु० सं० द्विष्यताम् / द्विष्वताम्।

मनो –द्वि० एक व० नपुं० <√मन् 'सोचना, विचार करना' मन को, तु० सं० मनो।

ग्रमॅन्ताँम्—ष० बहु व० विशे० 'क्रोध से भरे हुए लोगों के' <अवे०√ग्रस् 'गुस्सा होना, गर्म होना' तु० सं० घर्म, अवे० गरॅम, आ० फा० गर्म, अंग्रेजी वार्म, तु० सं० घर्मवताम् ।

चिश्च—प्र० एक व० पु० 'जो कोई' तु० सं०* किः (प्रचलित रूप) कः ।

अह्मि—स० एक व० नपुं० निश्चय वाचक सर्वनाम अवे० अअेम् 'यह', तु० सं० अस्याम् ।

वीसि—स० एक व० स्त्री० 'ग्राम में' तु० सं० विशि ।

.जन्त्वो—स० एक व० पु० अवे० .जन्तु, सं० जन्तौ 'प्रान्त में' ।

अअेनङ्हो—प्र० एक व० नपुं० अवे० अअेनङ्ह्वन्त् शब्द से 'हानिकारक, पापी' तु० सं० एनस्वान् ।

गॅउर्वय—मध्यम पु० एक व० लोट् लकार परस्मै० अवे० √गॅरॅव् या √गर्व्, √ग्रब् तु० सं० √ग्रभ्, √ग्रह्, 'दूर ले जाना' तु० सं० गृभाय 'ले लो' ।

हे—ष० एक व० पश्चाश्रयी (enclitic) तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम 'इसके' तु० सं० अस्य ।

पाधवे—पंचमी द्वि व० 'पैरों से' तु० सं० पदभ्याम् ।

पइरि....वॅरॅनूइधि—मध्यम पु० एक व० लोट् लकार परस्मै० अवे० √वर् (सं० √वृ), पइरि, सं० परि, उलट-पलट या परिश्रान्त कर दो' तु० सं० परिवृणुहि ।

षे—ष० एक व०, पश्चाश्रयी (enclitic) तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम से, 'इसके' तु० सं० अस्य । "हे, षे पश्चाश्रयी हैं ये यंग० अवे० में चतुर्थी एक वचन और षष्ठी एक वचन के लिए प्रयुक्त होते हैं, कभी-कभी हे का प्रयोग बहुवचन के लिये भी किया जाता है ।"

उषि—नपुं०, बुद्धि, दिमाग से यहाँ अभिप्राय है, वैसे उषि = कान होता है, तु० सं० *उषि, पह० होश, तु० आ० फा० हूश ।

स्कॅन्दम्-कॅरॅनूइधि—पु० <√स्कन्द् 'नष्ट करना, तोड़ना, अनियमित करना नाश, √कर् (मध्यम पु० एक व० लोट् कर्तृवाच्य) पूर्णरूप से नष्ट करना, थका हुआ कर दे, तु० सं० खिन्नम् या छिन्नम् *कृणुहि, कुरु ।

२९. मा—निषेधात्मक निपात है क्रिया के साथ इसका प्रयोग आज्ञार्थक है, तु० सं० मा, तु० आ० फा० म (श्लोक संख्या २१ भी द्रष्टव्य है) ।

ज़.बरॅथअेइब्य—च० द्वि व० नपुं० अवे० ज्बरथ शब्द से 'पैर' <√ज्बर्, सं० √ह्वर् 'टेढ़ा होना, लंगड़ाकर चलना' तु० सं० ह्वृताभ्याम् 'शक्तिहीन पैरों के लिए'। यहाँ अभिप्राय टेढ़ी चाल वाली टाँगों से है ।

.फ्रतुयाो—मध्यम पु० एक व० वर्तमान विधिलिङ् परस्मै० अवे० √तु, सं० √तु, आ० फा० √तवानीदन ; फ्रा, सं० प्र उपसर्ग, 'शक्ति दे' तु० सं० प्रतुयाः ।

गवअेइब्य—च० द्वि व० पु० 'हाथों' तु० सं० ग्रावाभ्याम् सं० हस्त, प्रा० फा० दस्त ।

अइ.वि-तूतुयो – मध्यम पु० एक व० पूर्ण विधिलिङ् (Perfect optative) परस्मै० अवे० √तु, सं० √तु, अवे० अइवि, सं० अभि, शक्ति दे, शक्ति वाला बना, तु० सं० अभितूतुयाः ।

.जाँम्—द्वि० एक व० स्त्री० अवे० .जम्, जॅम् शब्द से, सं० क्षम्, ज्म् 'पृथ्वी', तु० सं० ज्माम् (देखिये श्लोक संख्या १५)

मा—वअेनोइ.त्—अन्य पु० एक व० विधिलिङ् अवे० √वअेन् / √विन्, सं० वेणति, आ० फा० √बीनीदन 'देखना'। यहाँ पर अभिप्राय आज्ञार्थक है, उसे न देखने दे, तु० सं० मा वेनात् (देखिये श्लोक संख्या २१) ।

आषिब्य—तृ० द्वि व० नपुं० 'आँखों से' तु० सं० अक्षिभ्याम् ।

गाँम्—द्वि० एक व० स्त्री० ज़ाँम् का रूपान्तर है, सृष्टि के अर्थ में तु० सं० *गां ।

अअेनङ्हइति—नामधातु क्रिया, लट्लकार अन्य पु० एक व०, <अवे० अअेनह्, पाप, हिंसा, क्रोध, सं० एनस् हानि, क्षति; हानि पहुँचाता है, पाप का भाव रखता है, तु० सं० एनस्यति, तु० अवे० √अअेन् 'हानि पहुँचाना' सं० इनोति।

कॅह्र्पॅम्—द्वि० एक व० अवे० कॅरॅफ् शब्द से, सं० कृप् 'शरीर', तु० सं० कृपम्, वै० कृपा (तृ० एक व०), (देखिये श्लोक संख्या १६।

३०. पइति—पूर्वसर्ग, ष० के साथ, 'विरुद्ध' तु० सं० प्रति।

अज़ोइश्—ष० एक व० अवे० अ़िज शब्द से 'सर्प का' तु० सं० अहे: (देखिये श्लोक संख्या ८)।

जइरितहे—ष० एक व० अवे० जइरित शब्द से 'पीला, सुनहला, हरा' तु० सं० हरितस्य।

सिमहे—ष० एक व० विशे० 'भयानक, डरावनी वस्तु' तु० सं० सिमस्य। 'वेद में सिम प्रयुक्त नहीं है किन्तु इसी से मेल रखने वाला शिम्यु प्रयुक्त है। दस्यूँञ्छिम्यूंश्च........हत्वा (१।१००।१८)।

वीषो-वअेपहे—ष० एक व० विशे० 'विष उगलने वाले' <अवे० √वअेप्, सं०√वप् 'वमन् करना, उगलना' तु० सं० विष-वापस्य।

नाषॅम्नाइ—च० एक व० स-लुङ् (S-aorist) का कृदन्ती रूप आत्मने० है, अवे० √नश्, सं० √नस् 'नष्ट करना, नष्ट होना', प्राप्त करना, तु० पह० √नसीनीतन्, आ० पह० √नासीदन, कल्याण के लिये, रक्षा करने के लिये, तु० सं० नश्मने।

अषओने—च० एक व० विशे० पु० यह अवेस्ता के ष० एक व० के लिये प्रयुक्त है, अवे० अषवन् 'धर्म' सं० ऋतावन् तु० सं० ऋतावने धर्म पर चलने वाले के, पवित्र, ऋत के अनुयायी।

वदरॅं—द्वि० एक व० नपुं० <अवे० √वद्, सं० √वध् (वध) १। हतौ / 'मारना', शस्त्र, मारने का एक हथियार; तु० सं० वधर।

जइधि—मध्यम पु० एक व० लोट्लकार अवे० √जन् (ज़न्), तु० सं० √हन् (हन) २।२ हिंसायाम्) 'मारना', मारो, तु० सं० *जधि, जहि।

वीवरॅ.ज्दवतो—ष० एक व० लङ् कृदन्ती परस्मै० अवे० √वरॅद्, सं० √वृध् 'बढ़ाना', वि उपसर्ग है; जो शक्तिशाली या महान् हो गये हैं। कङ्ग के अनुसार यह लङ् कृदन्ती कर्तृ वाच्य है। अवे० √वरॅज़, तु० आ० फा० √वरज़ीदन् 'काम करना', वि उपसर्ग के साथ, और वह इसका अनुवाद करता है, धर्म के विरुद्ध काम करने वाले, अधर्मी, तु० सं० विवृद्धवतः।

.ख़्रीश्यतो—ष० एक व० विशेषण 'खून के प्यासे, निर्दयी; देखें अवे० .ख़ूर नपुं० विशे० 'खूनी, खून के प्यासे' तु० सं० क्रविः तु० अंग्रेजी सजातीय शब्द रा (raw-); तु० सं० क्रविष्यतः।

ज़ज़रानो—ष० एक व० विशे० पूर्ण कृदन्ती अवे० √ज़र्, सं० √हृ 'नाराज करना', आ० फा० √आ.ज़ुर्दन 'घायल करना', क्रोध युक्त, क्रोध से भरे हुए के' तु० सं० जाहृणानस्य।

३१. द्व्रतो—ष० एक व० द्व्रन्त् शब्द से, गा० अवे० द्रॅग्वन्त 'दुष्ट, अविश्वसनीय' तु० सं० द्रवतः (धर्म से) विचलित होते हुए के, (देखिये श्लोक संख्या ८)।

सास्तर्श्—ष० एक व० पु० <अवे० √साह्, √साश्, सं० √शास् 'राज्य करना, शासन करना', शासक के, तु० सं० शास्तुः।

अइ.वि-वोइ॰ज्दय॰.तहे—ष० एक व० लट् कृदन्ती परस्मै० अवे० अइवि + √वोइ.ज + √दा (वोइ.ज्दा), (घमण्ड से) ऊँचा किये हुए, तु० सं० अभिवेजयतः।

अहूम्-मॅरॅ॰.चो—ष० एक व० <अवे० √मॅरॅ॰.क् या √मॅरॅ॰.च्, तु० सं० √मश् 'नष्ट करना, मारना', आत्मा का हनन करने वाले के, तु० सं० असुम्-मृचः (श्लोक संख्या ८ भी द्रष्टव्य है)।

मांस्‌⋯दथानहे—ष० एक व० लट्‌ कृदन्ती आत्मने० का रूप है, समस्तपदीय क्रिया म.ज़्दा (√मन्‌ + √दा) 'याद रखना' तु० सं० मनो⋯दधानस्य 'मन में रखते हुए'।

श्यओथ्नाइश्‌—तृ० बहु व० नपुं० <अवे० √श्यव्‌, सं० √च्यव्‌ 'चलना' कार्य के द्वारा तु० सं० च्यौत्नैः।

अपयन्तहे—ष० एक व० लट्‌ कृदन्ती परस्मै० अवे० √अप्‌ या आप, तु० सं० √आप्‌ तु० आ० फा० √याफ्तन्‌ 'प्राप्त करना' अनुष्ठान करते हुए, तु० सं० आपयतः।

३२. जहिकयाइ—च० एक व० स्त्री० का प्रयोग यहाँ ष० एक व० स्त्री० के लिये हुआ है, अवे० जहिका शब्द से। 'दुष्ट औरत के लिये' तु० सं० हस्त्रिकायैः।

यातुमइत्याइ—च० एक व० स्त्री० का प्रयोग है ष० एक व० स्त्री० के लिए, अवे० यातुमन्त्‌ शब्द से, 'जादू का अभ्यास करने वाला', जादू से भरा हुआ या जादूगरनी के लिये, तु० सं० यातुमत्यै (तु० सं० यातुधान = राक्षस) तु पह० यातूक, यातूकीह, यातूकान, मर्तान्‌ उ ज़नान, तु० आ० फा० जादू।

मओदनो-कइर्याइ—च० एक व० विशे०, अवे० मओदन, सं० मोदन <अवे० √मओद, सं०√मुद्‌, मोद मनाने वाली, तु० सं० मोदन-कार्ययैः।

उपश्ता-बइर्याइ—च० एक व० विशे० अवे० उपश्ता = सं० उपस्थ, गोद, बइर्याइ <अवे० √बर्‌, सं० √भृ <भा० *√भेर्‌, आ० फा० √बरडन 'ले जाना', व्यभिचारिणी। इसका अर्थ गूढ़ है, तु० पह० अपर पनाहीह इ बुर्तार।

येऩ्हे—ष० एक व० पु० संबंध वाचक सर्वनाम 'जो' तु० सं० 'यं'। यह पु० का रूप है जो कि स्त्री० के लिये प्रयुक्त हुआ है। 'जिसका' तु० सं० यस्याः।

फ्रफ्रवइति—अन्य पु० एक व० निर्देशात्मक वर्तमान काल, अवे० √फ्रु धातु से, सं० √प्लु 'उड़ना', बहता है, उछलता है, तु० सं० प्रप्रवति।

अव्रॅम्—प्रथमा एक व० नपुं०, बादल, तु० सं० अभ्रम्, आ० फा० आबर।

वातो-षूतॅम्—विशे० वात = हवा, तु० सं० वात, षूतॅम् <अवे० √षु या √षव्, तु० सं० √च्यु, √सू 'गति में रखना', हवा में चलते हुए, वायु से धकेले गये, तु० सं० वातच्युतम्।

य.त्—समुच्चय बोधक द्वि० एक व० नपुं० संबंध वाचक सर्वनाम य, तु० सं० यत् 'वास्तव में, सचमुच'। यत् का प्रयोग पुनरावृत्ति दिखाने के लिये किया गया है जो कि अध्याय को समाप्ति का सूचक है।

हे—चतुर्थी एक व० स्त्री० जहिकयाइ शब्द के लिथे इसका प्रयोग किया गया है, उसका, तु० सं० अस्याः (श्लोक सं० २८ द्रष्टव्य है)।

शब्दानुक्रमणिका

अवेस्ता

शब्दानुक्रमणिका

(अवेस्ता एवं संस्कृत छाया)

अ

आपँम् (सं० अपः)—११
आमाँम् (सं० आ मां)—२
आय (सं० अया)—१५
आयप्तॅम् (सं० आप्तम्)—३,४,६,७,९,१०,१२,१३
आर्श्त्यो-बरॅ.ज (सं० ऋष्टिबर्हः)—११
आसिश्तो (सं० आशिष्ठः)—१५

आो (å)

आोङ्ह (सं० आस)—५ (दो बार)
आोङ्हइरे (सं० आसिरे)—२३
आोङ्हन्ते (सं० आसते)—२२

इ

इमॅम् (सं० इमम्)—१९ (३ बार), २० (२ बार), २१

उ

उत (सं० उत)—२२
उपइरि (सं० उपरि)—११ (२ बार)
उपम्रुये (सं० उपब्रुवे)—२७
उपरो-कइर्यो (सं० उपरि कार्यः)—१०
उपश्ता-बइर्याइ (सं० उपस्थभर्यै) ३२
उपाइ.त् (सं० उपैत्)—१
उरुनअेच (सं० उर्वाणे च—१६
उर्वा.क्षयो (सं० उर्वाक्षः)—१०
उश्त-ते (सं० वषट् ते)—२५ (३ बार)

ख

त्

य

श

ष

स

स्त्ररॅम् (सं० श्टङ्गभरम्)—११
स्त्रावयन्तम् (सं० श्रावयन्तम्)—१
स्त्रुतो (सं० श्रुतः)—१४

.ज (Z)

.जइरि-गओनो (सं० हरिगुणो)—१६
.जइरितॅम् (सं० हरितम्)—११ (२ बार)
जइरितहे (सं० हरितस्य)—३०
.जउर्व (सं० जरा)—५
जन्तुपइते (सं० जन्तुपते)—२७
.जन्त्वो (सं० जन्तौ)—२८
.ज.जरानो (सं० जाहृणानस्य)—३०
.जॅमर्-गू.जो (सं० ज्मागुहः)—१५
.जॅमा (सं० ज्मा)—१५,२० (२ बार)
.जरथुश्त्रॅम् (सं० जरथुश्त्रम्)—१
.जरथुश्त्रो (सं० जरथुश्त्र:)—१,३,१६
.जाइरे (सं० हरे)—१७,३०,३१
.जाँम् (सं० ज्मां)—२९
जातनाँम् (सं० जातानाम्) – ४
.जावरॅ (सं० जव:)—२२,२८
.ज्बरॅथअेइब्य (सं० ह्वृताभ्यां)—२९
.ज्र्वानॅम् (सं० ज्रयाणम्)—११

ह

हइथीम् (सं० सत्यम्)—२३
हअेन्यागेस्च (सं० सेनायाश्च)—१८
हओम (सं० सोम)—३,६,९,१२,१९, (२ बार),२० (२ बार),२१,२५,२७,
३०,३१,३२

शब्दानुक्रमणिका

(अवेस्ता की संस्कृत छाया)

स

द्वितीय भाग

प्राचीन फ़ारसी

[बेहिस्तन शिलालेख प्रथम]

[प्राचीन फारसी के बेहिस्तन शिलालेख प्रथम के अंशों का यहाँ पर देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करने का सर्वप्रथम प्रयास किया जा रहा है। वे जिस प्रकार शिलालेख में उपलब्ध होते हैं, उन्हें उसी रूप में देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही साथ विद्यार्थियों के सम्यग् बोध के लिये उक्त अंशों को शिलालेख के क्रम से भिन्न इसलिये प्रस्तुत किया गया है जिससे कि वाक्यों का पृथक्-पृथक् अवगम हो जाय। अर्थ की स्पष्टता के लिये मुझे यह आवश्यक प्रतीत हुआ, क्योंकि उक्त अंशों को शिलालेख में वाक्यों की दृष्टि से उत्कीर्ण नहीं किया गया है। प्राचीन फारसी के प्रत्येक वाक्य की संस्कृत छाया प्रस्तुत करने का भी यह प्रथम प्रयास है। प्राचीन फारसी के उक्त वाक्यों के प्रत्येक शब्द की व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ एवं उन शब्दों का अन्य भाषाओं में उपलब्ध शब्दों से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का भी प्रयत्न किया गया है। अन्त में बेहिस्तन शिलालेख प्रथम में प्रयुक्त शब्दों की शब्दानुक्रमणिका संलग्न कर दी गई है।]

बेहिस्तन शिलालेख, प्रथम

(Behistan Inscription, Colum. I)

देवनागरी लिपि—

१. अदम दारयवउश .ख्यार्य.थय वज्रक .ख्यार्य.थ [य ख्यायथिय]

२. आनाम .ख्यार्य.थय पार्सइय .ख्यार्य.थय दह् [यूनाम] विश्–

३. तास्पह्या पुस्स अर्शामिह्या नपा ह्.खामनिशिय...थातिय

४. दारयवउश .ख्यार्य.थय मना पिता विश्तास्प विस्तास्पह्या पित] आ अषे—

५. आम अर्षामिह्या पिता अरियारम्न अरियारम्नह्या पिता चिश्पिश]; चिश्प–

६. आइश पिता ह्.खामनिश. .थातिय दारयवउश ख.याय [.थिय अव] ह्यरा–

७. दिय वयम ह्.खामनिशिया .थह्यामह् (इ) य . ह्चा परुव [इयत आ] माता अम–

८. ह्य ह्या परुवियत ह्या अमा.खम तउमा ख.याय [f.थया आ] ह् (.) .थ

९. आतिय दारयवउश .ख्यार्य.थय VIII मना तउमाय (आ त्यै) य [प]; रुवम

१०. ख.यार्य.थया आह् अदम् नवम IX दुवितापरनम (वयम) ख.यार्य.थ

११. या अमहे. .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थय व [श्ना] अउरमज्द

१२. आह् अदम ख.यार्य.थय अमिय. अउरम.ज्दा .खशास्सम मना [फ] आबर. थ

१३. आतिय दारयवउश .ख्यार्य.थय इमा दह्याव त्या मना [पत] इयाइ श वश्न

१४. आ अउरमज्दाह [अ] दमशाम .ख्यार्य.थिय आहम पार्स ऊवज [ब्] आबइरुश अ

१५. .थुरा अरबाय मुद्राय त्यइय द्रयह्या स्पर्द यउन् [अ माद) अर्मिन कत

१६. पतुक पर्थव ज्रन्क हरइव उवार.ज्मीय बाख्त्रिश [सुग्] उद गदार स

१७. क .थतगुश ह [र] उवतिश मक फ़हरवम दह्याव XXIII .थातिय दार

१८. यवउश .ख्यार्य.थिय इमा दह्याव त्या मना पति (याइश) वश्ना अउ

१९. रमज्दाह म (न्) आ बन्दका आहता मना बाजिम अबरता [त्य] शाम ह्चाम

२०. अथह्य .खपवा रउचपतिवा अव अकुनवयता. .थातिय [दार] यव

२१ उश ख.यार्य.थिय अतर इमा दह्याव मर्तिय ह्य आगरिय आह अवम उ

२२. बरतम अबरम ह्य अरिक आह अवम उफ्रस्तम अपरसम् वश्न् [आ] अउरमज्दा

२३. ह इमा दह्याव त्यना मना दाता अपरियाय य.थासाम ह्चाम अ.थह

२४. य (अ) व.था अकुनवयता .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय अउरम.ज्दा

२५. म (इय) इम .ख्शास्सम् फ्राबर .अउरम.ज्दामइय उपस्ताम अबर याता इम .ख्शास्सम

२६. ह [म] दारयइ [य] वश्ना अउरमज्दाह इम .ख्शास्सम दारया-मिय .था

२७. तिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय इम त्य मना कर्तम पसाव य.था ख्य–

२८. आयथि.य अबवम कबूजिय नाम कूरउश पुस्स अम.खम तउमाय्

२९. आ हउवम इदा ख्यार्य.थिय आह .अवह्या कबूजियह्या ब्रा

३०. त् [अ बर्दि] य नाम आह हमाता हमपिता कबूजियह्या पसाव क

३१. बू [जिय] [अ] वम बर्दियम अवाज. यथा कबूजिय बर्दियम अवाज कारह्य

३२. [आ नइय] अ.ज्दा अबव त्य बर्दिय अवजत. पसाव कबूजिय मुद्रायम

३३. [अशिय] व यथा कबूजिय मुद्रायम अशियव पसाव कार अरिक- अबव.

३४. [पसाव] द्रउग दह्युउवा वसिय अबव उता पार्सइय उता मादइय उत

३५. [आ अन्] इयाउवा दह्युशुवा. .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय प

३६. [साव] (I) १ मर्तिय मगुश आह् गउमात नाम हुउव उदपतता हुचा पइशि

३७. [या] उवादाया अरकद्रिश् नाम कउफ हुचा अवदश वियख्नह्य माह्

३८. [या] (XIV) १५ रउचबिश .थकता आह् यदिय उदपतता हुउव कारह्या अव.था

३९. [अ] दुरुजिय अदम बर्दिय अमिय ह्य कूरउश पुस्स कबूजियह्या ब्र

४०. [आ] ता. पसाव कार हुरुव हुमिस्सिय अबव हुचा कबूजिया अबिय अवम

४१. [अ] शियव उता पार्स उता माद उता अनिया दह्याव .ख्शास्सम हुउव

४२. अगरबायता गर्मपदह्य माह्या (IX) ९ रउचबिश .थकता आह् अवथा .ख्श

४३. रसम अगरबायता . पसाव कबूजिय उवामर्शियुश अमरियता. .थातिय

४४. दारयवउश .ख्शार्य.थिय अइत .ख्शास्सम त्य गउमात ह्य मगुश अदीन

४५. आ कबूजियम अइत .ख्शास्सम हुचा परुवियत अमाखम तउमाया आ

४६. हु. पसाव गउमाता ह्य मगुश अदीना कबूजियम उता पार्सम उता

४७. मादम उता अनिया दह्याव . हुउव आयसता उवाइपशियम अकुता हुउ

४८. व .ख्शार्य.थिय अबव. .थातिय दारयवउश .ख्शार्य.थिय नइय आह् मर्तिय

४९. नइय पार्स नइय माद नइय अमाखम तउमाया कश्चिय ह्य अवम गउ

५०. मातम त्यम मगुम ख.शस्सम् दोतम् चखिया .कारशिम हचा दर्शम अ
५१. तरस कारम वसिय अवाजनिया ह्य परनम बर्दियम अदाना अवह्यर
५२. आदिय कारम अवाजनिया मात्यमाम .ख्शनासातिय त्य अदम नइय बर्द
५३. इय अमिय ह्य कूरउश पुस्स.कश्चिय नइय अदर्श्नउश चिश्चिय .थस्तन
५४. इय परिय गउमातम त्यम मगुम याता अदम अरसम पसाव अदम अउर
५५. म.ज (द) आम पतियावह्यइय. अउरम.ज्दामइय उपस्ताम अबर. बागयादइश
५६. माह्या (X) १० रउचबिश .थक्रता आह अव.था अदम हदा कमनइबिश मर्तियइबि
५७. श अवम गउमातम त्यम मगुम अवाजनम उता त्यइशइय फ्रतमा मर्
५८. तिया अनुशिया आहता सिक [य] उवतिश नामा दिदा निसायना
५९. मा दह्याउश मादइय अवदशिम अवाजनम.ख्शस्समशिम अदम अदीनम व
६०. श्ना अउरम.ज्दाह अदम .ख्शायथिय अबवम. अउरम.ज्दा .ख्शस्सम मना फ्र
६१. आबर. .थातिय दारयवउश .ख्शायथिय .ख्शस्सम त्य हच अमा.खम त
६२. उमाया पराबर्तम आह अव अदम पतिपदम अकुनवम अदमशिम गा.थ
६३. वा अवास्तायम यथा परुवमचिय अव.था अदम अकुनवम आयदन
६४. आ त्या गउमात ह्य मगुश वियक अदम नियस्सारयम कारह्या अबि
६५. चरिश गइ.थाम्चा मानियम्चा वि.थबिश्चा त्यादिश गउमात ह[य]
६६. मगुश अदीना अदम कारम गा.थवा अवास्तायम पार्सम [च्] आ मादम [च]
६७. आ उता अनिया दह्याव. यथा परुवमचिय अव.था अदम त्य पराब (रत)
६८. म पतियाबरम.वश्ना अउरम.ज्दाह इमा अदम अकुनवम अदम हमत.ख्शइय
६९. याता वि.थम त्याम अमा.खम गा.थवा अवास्तायम य.था [पर] उवम [चि] य
७०. अवथा अदम हमत.ख्शइय वश्ना अउरम.ज्दाह यथा गउमात ह्य मगु

७१. श वि.थम त्याम अमा.खम नइय पराबर . .थातिय दारयवउश .ख्शाय.थ
७२. इय इम त्य अदम अकुनवम पसाव य.था .ख्शार्या.थिय अबवम. .थतिय
७३. दारयवउश .ख्शार्या.थिय य.था अदम गउमातम त्यम मगुम अवाजनम प
७४. साव १ मर्तिय आस्सिन नाम उपदर्मह्या पुस्स हुउव उदपतत [ता]
[ऊव्जइ]
७५. य. कारह्या अव.था अ.थह् अदम ऊव्जइय .ख्शायथिय अमिय प [साव] ऊव
७६. जीया हुमिस्सिया अबव अबिय अवम [आ] स्सिनम अशियव हुउव
.ख्शार्या.थिय
७७. अबव ऊवजइय. उता १ मर्तिय बाबिरुविय नदितबइर नाम अइन
[इर] ह्य
७८. आ पुस्स हुउव उदपतता बाबिरउव . कारम अव.था अदुरुजिय अदम नब
७९. उकुद्रचर अमिय ह्य नबुनइतह्या पुस्स . पसाव कार ह्य बाबिरुविय
८०. हुरुव अबिय अवम नदितबइरम अशियव . बाबिरुश हुमिस्सिय अबव. .ख
८१. शस्सम त्य बाबिरउव हुउव अगर्बायता . .थातिय दारयवउश .ख्शाय
८२. ा.थिय पसाव अदम फ्राइशयम उवजम . हुउव आस्सिन बस्त अनयता अ
[बिय् म्] आ
८३. म . अदमशिम अवाजनम . .थातिश दारयवउश .ख्शार्या.थिय पसाव
अदम बा
८४. बिरुम अशियवम अबिय अवम नदितबइरम ह्य नबुकुद्रचर अग
[उबत] आ
८५. कार ह्य नदितबइरह्या तिग्राम अदारय अवदा अइशतता . उता
८६. अबिश नाविया आह्. पसाव अदम् कारम् मश्काउवा अवाकनम
अनियम उश
८७. बारिम अकुनवम अनियह्या असम फ्रानयम . अउर [मज.] दामइय
उपस [त] आम

८८. अबर . वश्ना अउरम.ज्दाह् तिग्राम वियतरयामा . [अ] वदा अवम कारम

८९. त्यम नदितबइरह्या अदम अजनम वसिय . आस्स [इ] यादिय [ह्य] माह्या (XXVI) २६ रउ

९०. चबिश .थकता आह अ [व.थ्] आ हमरनम अकुमा . .थातिय दारयवउश .ख

९१. शार्या.थय पसाव अ [द] म बाबिरुम अशियवम . अ.िथय बाबिरु [म] [य.था नइय उ] प

९२. आयम .जा.जान नाम वर्दनम अनुव उफ्रातुवा अवदा [हउव न] दित

९३. बइर ह्य नबुकुद्रचर अगउबता आइश हदा कारा पतिश [माम हमरन] म

९४. चर्तनइय . पसाव ;हम [रन] म अकुमा . अउरम.ज्दामइय उपस्ताम अबर [वश्ना अउर] म

९५. .ज्दाह कारम त्यम नदितबइरह्या अदम अजनम वसिय अनिय आपि [य] आ [आ] ह [यत] आ आ

९६. पिशिम पराबर . अनामकह्य माह्या २ रउचबिश. .थकता आह अव.था हम [रनम] [अक] उमा

बेहिस्तन शिलालेख, प्रथम

वाक्यानुसारी पाठ

अदम दारयवउश .ख्यार्य.थिय वज्रकख्यार्य.थिय .ख्यायथियानाम .ख्यायथिय पार्सइय .ख्यार्य.थिय दह्यूनाम विश्तास्पह्या पुस्स अर्शामिह्या नपा ह्.खामनिशिय। थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय मना पिता विश्तास्प विश्तास्पह्या पिता अर्षाम अर्षामिह्या पिता अरियारम्न अरियारम्नह्या पिता चिश्पिश चिश्पाइश पिता ह्.खामनिश। .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय अवह्यरादिय वयम ह्.खामनिशिया .थह्यामहइय। ह्चा परुवइयता माता अमह्य ह्चा परुवियत ह्या अमा.खम तउमा .ख्यार्य.थिया आह्। .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय VIII मना तउमाया त्यैय परुवम .ख्यार्य.थिया आह् अदम नवम IX दुवितापरनम वयम .ख्यार्य.थिया अमहे। .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय वश्ना अउरमज्दाह् अदम .ख्यार्य.थिय अमिय। अउरम.ज्दा .खशस्सम मना फ्राबर। थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय इमा दह्याव त्या मना पतियाइश वश्ना अउरमज्दाह् अदमशाम .ख्यार्य.थिय आहम पार्स ऊवजब् आबइरुश अ.थुरा अरबाय मुद्राय त्यइय द्रयह्या स्पर्द यउन माद अर्मिन कतपतुक पर्थव ष्त्रन्क हरइव उवार.ज्मीय बाख्त्रिश सुगुद गदार सक .थतगुश हरउवतिश मक फ्रहरवम दह्याव XXIII। .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय इमा दह्याव त्या मना पतियाइश वश्ना अउरमज्दाह् मना बन्दका आहता मना बाजिम अबरता त्यशाम ह्चाम अथह्य .खपवा रउचपतिवा अव अकुनवयता। .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय अतर इमा दह्याव मर्तिय ह्य आगरिय आह् अवम उबरतम अबरम ह्य अरिक आह् अवम उफ्रस्तम अपरसम वश्ना अउरमज्दाह् इमा दह्याव त्यना मना दाता अपरियाय य.थासाम ह्चाम अ.थह्य अव.था

अकुनवयता । .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय अउरमज्दा मइय इम .ख्शस्सम् फ्राबर। अउरमज्दामइय उपस्ताम अबर याता इम .ख्शस्सम हमदारयइय वश्ना अउरमज्दाह इम .ख्शस्सम दारमिय । थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय इम त्य मना कर्तम पसाव य.था .ख्यार्य.थिय अबवम । कबूजिय नाम कूरउश पुस्स अमा.खम तउमाय आहउवम इदा .ख्यार्य.थिय आह । अवह्या कबूजियह्या ब्रात बर्दिय नाम आह हमाता हमपिता कबूजियह्या । पसाव कबूजिय अवम बर्दियम अवाज । यथा कबूजिय बर्दियम अवाज कारह्या नइय अ.ज्दा अबव त्य बर्दिय अवजत । पसाव कबूजिय मुद्रायम अशियव यथा कबूजिय मुद्रायम अशियव पसाव कार अरिक अबव । पसाव द्रउग दह्यउवा वसिय अबव उता पार्सइय उता मादइय उता अनुइयाउवा दह्युशुवा । .थातिय दारयवउश .ख्यार्य.थिय पसाव (I) १ मर्तिय मगुश आह गउमात नाम हउव उदपतता हचा पइशियाउवादाया अरकद्रिश नाम कउफ हचा अवदश वियखनह्य माहया १५ रउचबिश .थकता आह यदिय उदपतता हउव कारहया अव.था अदुरुजिय अदम बर्दिय अमिय हय कूरउश पुस्स कबूजियहया ब्राता । पसाव कार हरुव-हमिस्सिय अबव हचा कबूजिया अबिय अवम अशियव उता पार्स उता माद उता अनिया दहयाव.ख्शस्सम हउव अगरबायता गर्मपदह्य माहया ९ रउच-बिश .थकता आह अवथा .ख्शस्सम अगरबायता पसाव कबूजिय उवामर्शियुश अमरियता । .थातिय दारयवउश .ख्शार्य.थिय अइत .ख्शस्सम त्य गउमात हय मगुश अदीना कबूजियम अइय .ख्शस्सम हचा परुवियत अमाखम तउमाया आह । पसाव गउमाता हय मगुश अदीना कबूजियम उता पार्सम उता मादम उता अनिया दहयाव । हउव आयसता उवाइपशियम अकुता हउव .ख्शार्य.थिय अबव । .थातिय दारयवउश .ख्शायर्.थिय नइय आह मर्तिय नइय पार्स नइय माद नइय अमा.खम तउमाया कश्चिय हय अवम गउमातम त्यम मगुम .ख्शस्सम् दीतम् चख्रिया कारशिम हचा दर्शम अतरस कारम वसिय अवाजनिया हय परनम बर्दियम अदाना । अवहयरादिय कारम

अवाजनिया मात्यमाम .ख्शनासातिय त्य अदम नइय बर्दइय अमिय ह्य कूरउश पुस्स । कश्चिय नइय अदर्शनउश चिश्चिय .थस्तनइय परिय गउमातम त्यम मगुम याता अदम अरसम पसाव अदम अउरम.ज्दाम पतियावहृयइय । अउरम.ज्दामइय उपस्ताम अबर । बागयादइश माह्या १० रउचबिश .थकता आह् अव.था अदम ह्दा कमनइबिश मर्तियइबिश अवम गउमातम त्यम मगुम अवाजनम उता त्यइशइय फ्रतमा मर्तिया अनुशिया आह्ता सिकयउवतिश नामा दिदा निसाय नामा दह्याउश मादइय अवदशिम अवाजनम । .ख्शास्स-मशिम अदम अदीनम वश्ना अउरम.ज्दाह् अदम .ख्शार्यथिय अबवम । अउरम.ज्दा .ख्शास्सम मना फ्राबर । .थातिय दारयवउश .ख्शार्यथिय .ख्शास्सम त्य ह्च अमा.खम तउमाया परावर्तम आह् अव अदम पतिपदम अकुनवम । अदमशिम गा.थ वा अवास्तायम यथा परुवमचिय अव.था अदम अकुनवम । आयदना त्या गउमात ह्य मगुश वियक अदम नियस्सारयम कारह्या अबिचरिश गइ.थाम्चा मानियम्चा वि.थबिश्चा त्यादिश गउमात ह्य मगुश अदीना । अदम कारम गा.थवा अवास्तायम पार्सम चा मादम चा उता अनिया दह्याव । यथा परुवमचिय अव.था अदम त्य पराबर तम पतियाबरम । वश्ना अउरम.ज्दाह् इमा अदम अकुनवम । अदम ह्मत.ख्शइय याता वि.थम त्याम अमा.खम गा.थवा अवास्तायम य.था परउवमचिय अव.था । अदम ह्मत.ख्श-इय वश्ना अउरम.ज्दाह् य.था गउमात ह्य मगुश वि.थम त्याम अमा.खम नइय पराबर । .थातिय दारयवउश .ख्शार्यथिय इम त्य अदम अकुनवम पसाव य.था .ख्शार्यथिय अबवम । .थातिय दारयवउश .ख्शार्यथिय य.था अदम गउमातम त्यम मगुम अवाजनम पसाव १ मर्तिय आस्सिन नाम उपदर्मह्या पुस्स ह्उव उदपतता उव्जइय । कारह्या अव.था अ.थह् अदम ऊव्जइय .ख्शार्यथिय अमिय पसाव ऊवजीया ह्मिस्सिया अबव अबिय अवम आस्सिनम अशियव । ह्उव .ख्शार्यथिय अबव ऊवजइय । उता १ मर्तिय बाबिरुविय नदितबइर नाम अइनइरह्या पुस्स ह्उव उदपतता बाबिरउव । कारम अव.था

अदुरुजिय अदम नबुकुद्रचर अमिय हय नबुनइतहया पुस्स। पसावकार हय बाबिरुविय हरुवअबिय अवम नदितबइरम अशियव। बाबिरुश हमिस्सिय अबव। ख़शस्सम त्य बाबिरउव हउव अगरबायता। थातिय दारयवउश ख़्शायथिय पसाव अदम फ्राइशयम उवजम। हउव आस्सिन बस्त अनयता अबिय माम। अदमशिम अवाजनम। थातिय दारयवउश ख़्शायथिय पसाव अदम बाबिरुम अशियवम अबिय अवम नदितबइरम हय नबुकुद्रचर अगउबता कारहय नदितबइरहया तिग्राम अदारय अवदा अइशतता। उता अबिश नाविया आह। पसाव अदम कारम मश्काउवा अवाकनम अनियम उश बारिम अकुनवम अनियहया असम फ्रानयम। अउरमज़्दा मइय उपस्ताम अबर। वश्ना अउरमज़्दाह तिग्राम वियतरयामा। अवदा अवम कारम त्यम नदित-बइरहया अदम अजनम वसिय। आस्सियादियहय माहया २६ रउचबिश थकता आह अवथा हमरनम अकुमा। थातिय दारयवउश ख़शायथिय पसाव अदम बाबिरुम अशियवम। अथिय बाबिरुम यथा नइय उपायम ज़ाज़ान नाम वर्दनम अनुव उफ्रातुवा अवदा हउव नदितबइरहय नबुकुद्रचर अगउबता आइश हदा कारा पतिश माम हमरनम चर्तनइय। पसाव हमरनम अकुमा। अउरमज़्दामइय उपस्ताम अबर वश्ना अउरमज़्दाह कारम त्यम नदितबइरहया अदम अजनम वसिय अनिय आपिया आहयता आपिशिम पराबर। अनामकहय माहया २ रउचबिश थकता आह अवथा हमरनम अकउमा।

संस्कृत छाया

१. अहम् धारयवसुः (*क्षायथ्यः) क्षत्रियः वज्रकक्षत्रियः क्षत्रियाणाम्

२. क्षत्रिय पार्से क्षत्रियः दस्यूनाम् विष्टास्वस्य

३. पुत्रः (*ऋषामस्य) अर्षमस्य नपात् सखामनीष्यः । शंसति

४. धारयवसुः (*क्षायथ्यः) क्षत्रियः मम पिता विष्टास्व विष्टास्वस्यपिता

५. अर्षम (*ऋषम्) अर्षमस्य (*ऋषमस्य) पिता *अर्यारम्नः *अर्यारम्नस्य पिता चिस्पिः (*चसिश्विः) चिस्पेः (*चसिश्वेः)

६. पिता सखामनीषः । शंसति धारयवसुः क्षत्रियः (*क्षायथ्यः) *अवस्यराधि

७. वयम् *सखामनीष्याः शस्याममि । सचा पूर्व्यतः *आमाताः स्मसि

८. सचा पूर्व्यतः स्या अस्माकम् तोक्म क्ष्याथ्या आसीत् ।

९. शंसति धारयवसुः ख्यायथ्यः (अष्ट) मम तोक्मनि स्ये पूर्वम्

१०. (*ख्यायथ्याः) क्षेत्रियाः आसन् अहम् नवम् (९) द्वितापर्णम् वयम् क्षेत्रियाः (*ख्यायथ्याः)

११. स्मसि । शंसति धारयवसुः क्षेत्रियः वश्ना असुरमेधसः

१२. अहं क्षेत्रियः (*ख्यायथ्यः) अस्मि । अहुरमज्दा क्षत्रम् मम प्राभरत् ।

१३. शंसति धारयवसुः क्षत्रियः (*ख्यायथ्यः) इमाः दस्यवः त्याः मम प्रत्यायन् वश्ना

१४. असुरमेधसः अहम् असाम् क्षत्रियः आसम् *पार्सः *सुवुजः, बावेरुः *असुरा

१५. अरबायः, मुद्रायः ते ञ्यसि आ *स्वर्दः *यवना *मादः *अर्मिनः *कत्पतुकः

१६. *पर्थवः ञन्कः हरेवः सुवाज्म्यः बाख्त्रिः सुगुदः गान्धारः

१७. शकः शतगुः सरस्वती मकः प्रसर्वम् दस्यवः २३ शंसति

१८. धारयवसुः क्षत्रियः इमाः दस्यवः त्ये मम प्रत्यायन् वश्ना

१९. असुरमेधसः मम बन्धकाः आसन् मम भागम् अभरन्त आ तेषां सचा मत्

२०. अशंसि क्षपावा रोचः प्रति वा अव अक्रियत। शंसति धारयवसुः

२१. क्षत्रियः अन्तर इमाः दस्यून् (*दस्यवः) मर्त्यान् स्यः अग्रिय आसीत् (*आसत्) अवम्

२२. सुभृतम् अभरम् स्यः अरिकः आसीत् अवम् सुपृष्टम् अपृच्छन् वश्ना असुरमेधसः

२३. इमाः दस्यवः *त्यना मम हिता अपर्यायन् यथा आसाम् सचामत् अशंसि

२४. अवथा अक्रियत (*अकृण्व्यत) । शंसति धारयवसुः क्षत्रियः असुरमेधाः

२५. मे इमत् क्षत्रम् प्राभरत् असुरमेधाः मे उपस्थम् अभरत् यावत् इमत् क्षत्रम्

२६. समधारये वश्ना असुरमेधसः इमत् क्षत्रम् धारयामि।

२७. शंसति धारयवसुः क्षत्रियः इमत् त्यत् मम कृतम् पश्चा अवत् यथा

२८. क्षत्रियः अभवम् । कम्बुजिय नाम कुरोः पुत्रः अस्माकम् तोक्मनि

२९. असौ इह (*इध) क्षत्रियः आसीत् (*आसत्) । अस्य कम्बुजस्य भ्राता

३०. बर्ह्यः नाम आसीत् (*आसत्) समाता समपिता कम्बुज्यस्य । पश्चा अव

३१. कम्बुज्यः अवम् बर्ह्यम् अवाहन् । यथा कम्बुज्यः बर्ह्यम् अवाहन् *कारस्य

३२. नेद् अद्धा अभवत् त्यत् बर्ह्यः अवहतः, पश्चा अव कम्बुज्यः मुद्रायाम्

३३. अच्यवत् यथा कम्बुज्यः मुद्रायाम् अच्यवत् पश्चा अव कारः *अरिकः अभवत् ।

३४. पश्चा अव द्रोहः दस्यौ आ *वशे अभवत् उत *पार्से उत *मादे उत

३५. अन्यासु आ दस्युषु आ । शंसति धारयवसुः क्षत्रियः

३६. पश्चा अव एकः मर्त्यः मगुः आसीत् गोमातः नाम असौ उदपतत सचा पैशि—
३७. याउवादा अरकद्रिः नाम कोभः सचा अवधः वियख्नस्य मासि
३८. आ चतुर्दशः रोचभिः *शकिता आसीत् यदि उदपतत असौ कारस्य अवथा
३९. अद्रह्यत् अहम् बर्ह्य अस्मि स्यः कुरोः पुत्रः कम्बुज्यस्य भ्रा
४०. ता। पश्चा अव कारः सर्व समिथ्र्यः अभवत् सचा कम्बुज्यात् अभि अवम्
४१. अच्यवत् उत पार्सः उत मादः उत मादः उत अन्याः दस्यवः। क्षत्रम् असौ
४२. अगृभायत घर्मपदस्य मासि आ नवम् रोचभिः शकिता आसीत् अवथा क्ष
४३. त्रम् अगृभायत्। पश्चा अव कम्बुज्यः स्वामृत्युः अम्रियत।
४४. शंसति धारयवसुः क्षत्रियः एतत् क्षत्रम् ,त्यः गोमातः स्यः मगुः अजिनात्।
४५. कम्बुज्यम् एतत् क्षत्रम् सचा पूर्व्यतः अस्माकं तोक्मनि आसीत्
४६. पश्चा अव गोमातः स्यः मगुः अजिनात् कम्बुज्यम् उतपार्सम् उत
४७. मादम् उत अन्याः दस्यवः। असौ आयच्छत *स्वैपत्यम् अकृत असौ
४८. क्षत्रियः अभवत्। शंसति धारयवसुः क्षत्रियः नेत् (*आसत्) मर्त्यः
४९. नेत् पार्सः नेत् मादः नेत् अस्माकं तोक्मनि कश्चित् स्यः अवम् गो
५०. मातम् त्यं मगुं क्षत्रं जितं चक्रियात्। *कारः स्रिम् सचा धृष
५१. *अत्रसत् कारं *वशो अवाहन्यात् स्यः पुरा बर्ह्यम् अजानात्। अवश्य
५२. राधिः कारम् अवाहन्यात् मा-त्यत् माम् ज्ञाच्छाति त्यत् अहं नेत् बर्हिः
५३. अस्मि स्यः कुरोः पुत्रः। कश्चित् नेत् अधृष्णोत् चित् चित् शस्तने
५४. परि गोमातं त्यं मगुम् यावत् अहम् आच्छं पश्चा अव अहम्
५५. असुरमेधसं प्रत्यावस्ये। असुरमेधा मे उपस्ताम् अभरत्। भागयाजेः

५६. मासि आ दशं रोचभिः शकिता आसीत् अवथा अहं सह कम्नेभिः मर्त्येभिः
५७. अवं गोमातं त्यं मगुम् अवाहनम् उत त्ये-शे प्रथमाः मर्त्याः
५८ अनुत्याः आसन (*आसन्त) सिकयस्वतो नाम दिघा निसायः नामा
५९. दस्युः मादे अवध सिम् अवाहनम् । क्षत्रं सिम् अहम् अजिनं
६०. वश्ना असुरमेधसः अहम् क्षत्रियः अभवम् । असुरमेधसः क्षत्रं मम् प्राभरत् ।
६१. शंसति धारयवसुः क्षत्रियः क्षत्रं त्यत् सचा अस्माकं
६२. तोक्मनाः प्राभृतम् आसीत् अव अहं प्रतिपद अकृणवम् । *अहम् सिम् गातौ
६३. आ *अवस्थायम् यथा पूर्वं चित् अवथा अहम् अकृणवम् । आयजना
६४. त्या गोमातः स्यः मगुः व्यखनोत् अहम् न्यश्राययं कारस्य अभि
६५. चरिः *गेथाम् च *मानियं च *विड्भिश्च त्या दिः गोमातः स्यः
६६. मगुः अजीनात् । अहं कारं गातौ आ अवास्थापयम् पार्सं च मादं च
६७. उत अन्याः दस्यवः । यथा पूर्वं चित् अवथा अहम् त्य प्राभृतं
६८. प्रत्याभरम् । वश्ना असुरमेधसः इमत् अहम् अकृणवम् । अहम् समतक्षे
६९. यावत् विशं त्याम् अस्माकम् गातौ आ अवस्थापयम् यथा पूर्वं चित्
७०. अवथा । अहम् समतक्षे वश्ना असुरमेधसः यथा गोमातः स्यः मगुः
७१. विशं त्यां अस्माकम् नेत् पराभरत् । शंसति धारयवसुः क्षत्रियः
७२. इमत् त्यत् अहम् अकृणवम् पश्चा अव यथा क्षत्रियः अभवम् । शंसति
७३. धारयवसुः क्षत्रियः यथा अहं गोमातं त्यम् मगुम् अवाहनम्
७४. पश्चा अव एकः मर्त्यः *आत्रिणनः नाम उपदर्मस्य पुत्र असौ उदपतत् सुवजे
७५. कारस्य अवथा अशंसत् अहं सुवजे क्षत्रियः अस्मि पश्चा अव
७६. सुवज्याः समिथ्याः अभवत् अभि अवम् आत्रिणम् अच्यवत् । असौ क्षत्रियः

७७. अभवत् सुवजे । उत एकः मर्त्यः बावेरुव्यः नदितबेरः नाम *एनरस्य
७८. पुत्रः असौ इदपतत् बावेरौ । कारम् अवथा अद्रुह्यत् अहम् नबु—
७९. कुद्रचरः अस्मि स्यः नबुनेतस्य पुत्रः । पश्चा अव कारः स्यः बावेरुव्यः
८०. असौ अभि अवम् नदितबेरम् अच्यवत् बावेरुः समिथ्र्याः अभवत् ।
८१. क्षत्रं त्यत् बावेरुः असौ अगृभायत् । शंसति धारयवसुः क्षत्रियः
८२. पश्चा अव अहम् प्र-इषयम् सुवजम् । असौ अत्रिणं बद्ध अनीयत अभि माम् ।
८३. *अहम् सिम् अवाहनम् । शंसति धारयवसुः क्षत्रियः पश्चा अव अहम् बावेरुम्
८४. अच्यवम् अभि अवम् नदितबेरम् स्यः नबुकुद्रचर *अगोभत
८५. कारस्य नदितबेरस्य तिग्राम अधारयत् अवध अतिष्ठत । उत
८६. अभि नाव्या आसीत् । पश्चा अव अहम् कारं मक्षासु आ *अवाखनम् अन्यम् *उष्ट्र
८७. भारिम् अकृणवम् अन्यस्य अश्वं प्रागयम् । असुरमेधाः मे उपस्थम्
८८. अभरत् । वश्ना असुरमेधसः तिग्रां व्यतरयाम् । अवधा अवं कारं
८९. त्यम् नदितबैरस्य अहम् अहनं वशे । *आत्रियाज्यस्य मसि आ २६ रो
९०. चभिः शकिता आसन् अवथा समरणम् अकृम । शंसति धारयवसु क्षत्रियः
९१. पश्चा अव अहम् बावेरुम् अच्यवम् । अधि बावेरुम् यथा नेत्
९२. उपायं जाजान नाम वर्धनम् अनु सुप्रातौ आ अवदा असौ नदित-
९३. बैर स्यः नबुकुद्रचर अगोभत ऐत सह (*सध) कारा प्रति माम समरणं
९४. *चर्तने । पश्चा अव समरणं अकृम । असुरमेधा मे उपस्थां अभरत् वश्ना असुरमेधसः
९५. कारं त्यं नदितबैरस्य अहम् अहनं वशे अन्यः *आप्याम् *आस्यता
९६. *आपी *सीम् पराभरत् । *अनामकस्य मासि आ द्वि रोचभिः शकिता आसन् अवथा समरणम् अकृम् ।

टिप्पणियाँ--

१. अदम—प्र० एक व० प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम, अहम् ∠भारो० *एघोम (*eg(h)om, हिन्द-ईरानियन *अझम्, अवे० अ.जम्, सं० अहम्, प्रा० फा० अदम्,

१. दारयवउश—प्र० एक व० नपुं० ∠*दारय, सं० धारय / धारयन्त्, पकड़ना ∠भारो० *√धेर्-, प्रा० फा० √दर्-, अवे० √दर्-, सं० √धृ-, पह० √दाश्तन्—, आ० फा० √दाश्तन्, धारण करना, रखना; सं० वसु ∠भारो० *उएसु (u̯esu-), अवे० वङ्हु-, वोहु ∠√वन्—, =अच्छा, प्रशंसायोग्य, पह० वेह्, आ० फा० बह्, यह नाम है, सं० धारयवसुः, ग्रीक दारेईओस् (dāreīos).

१. .ख्यार्य.थय—प्र० एक व० पु० 'राजा' ∠प्रा० फा० √क्षि—, अवे० √क्षि—, सं० √क्षि—, शासन करना+इय, तु० सं० *क्षायथ्यः, पह० शाह, आ० फा० शाह।

१. वज्रक—प्र० एक व० पु० विशे०, महान्, तु० सं० वज्र *वजृकः, अवे० वज्र, आ० फा० बुजुर्ग ∠भारो० *√उएग्—'मजबूत होना'।

१-२. .ख्यार्य.थयानाम्—ष० व० व० पु० 'राजाओं का', तु० सं० क्षायथ्यानाम् पह० शाहान्, आ० फा० शाहान्

२. पार्सइय—सं० एक व० पु० पार्स शब्द से 'पर्सिया में', तु० सं० *पार्से, आ० फा० दर फारस। फार्स

२. दहयूनाम्—ष० व० व० स्त्री० दह्यु शब्द से, अवे० दैङ्हु-, दख्यु—, सं० दस्यु—पह० दह्यु—, दिह्, आ० फा० दिह, देह 'देशों का'। प्राचीन ईरानियन राज्य का विस्तृत रूप से चार भाग होता था—न्मान—, वीस—, जन्तु—और दख्यु—, तु० सं० दस्यूनाम्, अवे० दख्युनाम् (गाथिक अवे०)।

२-३. विश्तास्पह्या—ष० एक व० पु० 'विश्तास्प का', जो दारियस का पिता था, ∠विश्त, सं० विष्ट—भूतकाल कृदन्त कर्मणि √विश्, और अस्प्, सं० अश्व, पह्०, आ० फा० अस्प्—'घोड़ा', तु० सं० विष्टास्वस्य, पह्० विश्तास्प, आ० फा० गुश्तास्प, ग्रीक γσταʹσπης.

३. पुस्स—प्र० एक व० पु०=पुत्र ∠भारो० *पुत्लो—, अवे० पुथ्र, सं० पुत्र, पह्० पुह्.र्—, आ० फा० पुहर—, पुर्—, पुस्, पिसर्।

३. अर्शामह्या—ष० एक व० पु० 'अर्षमस का' ∠अर्श, सं० *ऋश=व्यक्ति, आदमी+अवे०, सं०, प्रा० फा० अम, शक्ति; एक वीर की शक्ति रखने वाला', महान् दरियस का दादा तु० सं० *ऋषामस्य।

३. नपा—प्र० एक व० पु० प्रा० फा० नपात्-शब्द का 'नाती' ∠भारो० *नेपोत्—, सं० नपात्, अवे० नपात्, आ० फा० नबीर।

३. हृरमनिशिय—प्र० एक व० पु०, नाम है, अखाइमीनियन राज्य की स्थापना करने वाला, <हृ.खा–, सं० सखा 'मित्र'+मनिश्–, सं० मनीषा—'बुद्धि'+इय तु० सं० सखामनीष्यः।

३. .थातिय—अन्य पु० एक व० लट् लकार कर्तृ वाच्य √.थह्. 'कहना', अवे० √सह्–, √सङ्ह् (Saŋh) 'कहता है', सं० शंसति <√शंस् 'कहना'।

४. मना—ष० एक व० प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम का, अदम्=मेरा, तु० अवे० मना, मे (निपात), सं० मम, मे (निपात)।

४. पिता—प्र० एक व० पु० पितर् शब्द से, सं० पितर्, अवे० पितर्–, पतर्, प्तर्, पह्० पित्, आ० फा० पिदर।

५. अरियारम्न—प्र० एक व० पु०, नाम है, दरियस के परदादा, <अरिय +आ–रम् शब्द का कर्मणि कृदन्ती, अवे० √रम् 'शान्त करना', तु० सं० *अर्यारम्नः।

५. अरियारम्नह्या—ष० एक व० पु०, अर्यारम्न का, तु० सं० *अर्यारम्नस्य।

५. चिश्पिश—प्र० एक व० पु०, दरियस के पूर्वज, नाम है, तु० सं० चसिश्वः।

५-६. चिश्पाइश—ष० एक व० पु०, तु० सं० चसिश्वेः ।

६. ह.खामनिश—प्र० एक व० पु०, नाम है, सं० सखामनीषः (देखिये नं० ३) ।

६-७. अवह्यरादिय—क्रियाविशे०, इस कारण से, इसलिये, <अवह्य ष० एक व० पु०, नपुं० संबंध वाचक सर्वनाम का अव+रादिय, क्रिया विशेषी द्वि० एक व० नपुं० रध् का यौगिक है, सं० रध् 'प्रजा बनाना', सं० अवस्यराधि, पह० उराय्, आ० फा० वरा या उरा ।

७. वयम्—प्र० व० व० पु० प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम 'हम' तु० सं० वयम् ।

७. ह.खामनिशिया—प्र० व० व० पु०, तु० सं० *सखामनीष्याः ।

७. .थह्यामह (इ) य—प्र० पु० व० व० लट् लकार कर्मणि √.थह 'कहना' तु० सं० शस्यामसि सं० √शंस् 'कहना' ।

७. हचा—पूर्वसर्ग 'से' तु० गाथिक अवे० हचा, यंगर अवे० हचा, वै० सचा, सं० सचा, पह० हच (hač), min, आ० फा० अ.ज । यहाँ यह पंचमी विभक्ति क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त है ।

७. परुवइयत—क्रिया विशेषण पं० विभक्ति 'पहले से' <परुव, अवे० पओउरुय (paouruya), सं० पूर्व्य+इय+क्रिया विशेषणात्मक उपसर्ग -त, तु० सं० पूर्व्यतः ।

७. आमाता - प्र० व० व० पु० या क्रिया विशे० (अर्थ स्पष्ट नहीं है) 'प्रत्यक्ष रूप से, उस कारण से' सं० *आमाताः ।

७-८. अमह्य—प्र० व० व० लट् लकार कर्तृवाच्य प्रा० फा० √अह्, सं० √ अस् 'होना' तु० वै० स्मसि ।

८. ह्या प्र० एक व० स्त्री०, सम्बन्ध वाचक सर्व०, तु० वै० स्या 'जो, जिस' ।

८. अमा.खम—ष० व० व० प्रथम पुरुष वाचक सर्व०, तु० सं० अस्माकम्, तु० आ० फा० मा ।

८. तउमा—प्र० एक व० स्त्री० 'वंश'; तु० सं० तोक्मन्, अवे० तओख़्मन, आ० फा० तुख़्म ।

८. आह्—अन्य पु० एक व० लङ् या लुङ् लकार कर्तृवाच्य प्रा० फा० √अह् 'था' तु० सं० आसीत् ।

९. तउमाया—स० एक व० स्त्री/ष० एक व० स्त्री० तउमा शब्द से 'परिवार में, परिवार का,; तु० सं० तोक्मनि ।

९. त्यै—प्र० व० व० पु० निश्चय वाचक सम्बन्ध वाचक सर्व० 'वे, उन' तु० सं० त्ये ।

९. परुवम—क्रिया विशे० द्वि० एक व० नपुं० 'पहले से' तु० सं० पूर्व, अवे० पउर्व ।

१०. ख़्शायथ़िया—प्र० व० व० पु० 'राजा लोग' तु० सं० क्षायथ्याः, आ० फा० शाहान ।

१०. आह्, अदम (देखिये नं० ८ एवं नं० १ क्रमशः) ।

१०. नवम—प्र० एक व० पु० विशे० क्रमवाचक संख्या नवाँ; तु० अवे० नओम, नाउम, सं० नवम, पह्० नवुम, नहुम, आ० फा० नुहुम ।

१०. दुवितापरनम—क्रियाविशे० 'एक के बाद दूसरा' या "दो कतारों में" <दुविता, गाथिक अवे० दैबिता, सं० द्विता, प्रा० फा० दुवितीयम्, सं० द्वितीयम् दोबारा, दूसरी बार+परनम, सं० पर्णम् 'किनारा, पार्श्व भाग' या सं० पर, परुत् 'पहले' तु० सं० द्वितापर्णम् ।

११. वश्ना—तृ० एक व० पु० वशन् शब्द से √वश् का यौगिक है, अवे० √वस्, सं० √वश् 'इच्छा करना, चाहना'; इच्छा के द्वारा; तु० सं० वश्ना ।

११-१२. अउरमज्दाह—ष० एक व० पु०; प्राचीन फारसी देवताओं में सबसे महान् देवता है और परवर्ती धर्म में जरथुश्त्र के नाम से जाना जाता है ।

१२. ख़्शस्सम—द्वि० एक व० नपुं० ख़्शस्स शब्द से, तु० अवे० क्षथ्र–, सं० क्षत्र–, पह्० शतर्, आ० फा० शह्र ।

१२. फ्राबर—अन्य० पु० एक व० लङ्लकार कर्तृवाच्य, प्रा० फा० √बर्, अवे०√बर् सं० √भर्/√भृ, आ० फा०√बरदन् 'सहना' ले जाना'+ अवे० फ्रा, सं० प्र; तु० सं० प्राभरत् ।

१३. इमा—प्र० व० व० स्त्री० निश्चयवाचक सर्वनाम इम=ये तु० सं० इमाः ।

१३. दह्याव—प्र० व० व० स्त्री० दह्याउ शब्द से—बहुत से देश; तु० सं० दस्यवः, अवे० दैङ्हावो । (daiηhāvō) ।

१३. त्या—प्र० व० व० स्त्री० निश्चय वाचक सर्व० त्य=वे, जो; तु० सं० त्याः तु० प्रा० फा० त्यैय् (tyaiy), सं० त्ये; अवे० ते (tē) ।

१३. पतियाइश—अन्य पु० व० व० लङ् ल० कर्तृ वाच्य प्रा० फा० √अय्, अवे० √अय्, सं० √इ 'जाना' पतिय्, सं० प्रति, अवे० पइति, अधिकार में आना, तु० सं० प्रत्यायन् ।

१४. अदमशाम—अदम प्र० एक व० प्रथम पुरुष वाचक सर्व० 'मैं'+शाम =ष० व० व० निश्चय वाचक सर्वनाम स (अन्य पुरुष), तु० सं० अहम्-आसाम् ।

१४. आहम्—प्र० पु० एक व० लङ् लकार कर्तृ वा० √अह्, सं० √अस् 'होना', सं० आसम् ।

१४. पार्स—प्र० एक व० पु०, फारस, तु० सं० *पार्सः; अं० पर्सिया ।

१४. उबज्—प्र० एक व० पु०, सं० *सुवजः ।

१४. बाबिरुश्—प्र० एक व०; सं० बावेरुः, पालि बावेरु–; फारस राज्य का एक प्रान्त ।

१४-१५. अथुरा—प्र० एक व० स्त्री०, सं० *अशुरा ।

१५ अरबाय—प्र० एक व० पु०, सं० *अरबायः ।

१५. मुद्राय—प्र० एक व० पु०, सं० मुद्रायः

१५. द्रयह्या—स० एक व० पु० ∠द्रयहि+सप्तम्यन्त प्रत्यय -आ, तु० सं० त्र्यस्, त्र्यसि+आ, अवे० त्र्यह्, पह० ज़िरेः, आ० फा० दर्या ।

१५. स्पर्द—प्र० एक व० पु०, फारस राज्य के एक प्रान्त का नाम, तु० सं० *स्वर्दः

१५. यउन—प्र० एक व० स्त्री०, तु० सं० *यवना, अंग्रे० इओनिया (Ionia)

१५. माद—प्र० एक व० पु०, तु० सं० *मादः

१५. अर्मिन—प्र० एक व० पु०, तु० सं० *अर्मिनः

१५-१६. कतपतुक—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम, तु० सं० *कत्पतुकः

१६. पर्थव—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम तु० सं० *पर्शवः

१६. ज्रन्क—प्र० एक व० पु०, फारस राज्य के एक प्रान्त का नाम, तु० सं० *ज्रन्कः

१६. हरइव—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम, तु० सं० *हरेवः।

१६. उवार.ज्मीय—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम, तु० सं० *सुवार्.ज्म्यः

१६. बाख्त्रिश—प्र० एक व० पु०; एक देश का नाम तु० सं *बाख्त्रितः

१६. सुगुद—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम, तु० सं० *सुगुदः

१६. गदार—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम, तु० सं० *गन्धारः।

१६-१७. सक—प्र० एक व० पु०, एक देश का नाम, तु० सं० शकः

१७. .थतगुश—प्र० एक व० पु०-स्त्री०, एक देश का नाम, तु० सं० *शतगुः

१७. हरउवतिश—प्र० एक व० स्त्री०, एक देश का नाम, तु० सं० सरस्वती।

१७. मक—प्र० एक व० पु०, फारस राज्य का प्रान्त, तु० सं० *मकः

१७. फ्हरवम—क्रिया विशे० ∠उपसर्ग फ, सं० प्र और हरव / हरुव (विशे० =सब), अवे० हउर्व, सं० सर्व, प्रसर्वम्

१७. XXIII—गिनती की संख्या इन्हीं चिन्हों के द्वारा दर्शायी जाती है।

१९. बन्दका—प्र० व० व० पु०=प्रजा, तु० सं० बन्धकाः, पह० बन्दक्, आ० फा० बन्देह, (व० व०) बन्देहगान् ∠√बन्दीदन्

१९. आहता—अन्य पु० व० व० लङ्० कर्मणि √अह्., सं० √अस् 'होना', थे, तु० सं० आसन्।

१९. बाजिम्—द्वि० एक व० स्त्री० 'भाग, अंश' तु० सं० *भाजिम्, भाग ∠√भज् 'भाग लेना या भाग करना'

१९. अबरता—अन्य पु० व० व० लङ् कर्मणि प्रा० फा० √बर्, अवे० √बर्, सं० √भर्, √भृ, आ० फा० √बर्दन्—'ले जाना'=वे ले गये; तु० सं० अभरन्त।

१९. त्यशाम—∠त्य प्र० एक व० नपुं०+शाम्, षष्ठी व० व० निश्चयवाचक सर्व० का अनुलग्न शब्द (enclitic) 'उनको'

१९. हचाम—'मुझसे', हचा, पूर्वसर्ग='से', सं० सचा+म (पं० एक व० पु०, प्र० पुरुष वाचक सर्व० का पश्चाश्रयी, सं० मत्, सचा+मत्।

२०. अथह्य—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √थह् 'कहना', अवे० √सह्, सं० √शंस्=कहा था; तु० सं० अशंसि।

२०. .खपवा—ष० एक व० स्त्री० .खप् शब्द से, वै० क्षपा, सं० क्षप्, अवे० .ख्क्षप् ∠.ख्क्षपन् .ख्क्ष्फ्न्+वा=और, तु० सं० क्षपः+वा, पह० शब्, आ० फा० शब् रात्रि में (either by night).

२०. रउचपतिवा—द्वि० एक व० नपुं० ∠रउच-, अवे० रओचः, सं० रोचः, पह० रोश्, आ० फा० रू.ज, दिन, प्रकाश+पति, सं० प्रती, अवे० पइति +वा (निपात)=और, वा; तु० सं० रोचः-प्रति-वा 'दिन के समय या रात्रि के समय'

२०. अव—प्र० एक व० नपुं० निश्चय वाचक सर्व० अव, अवे० अव, सं० *अवत्, आ० फा० ओ,='जो'

२०. अकुनवयता—अन्य पु० एक व० लङ्० कर्मणि √कुनउ=किया गया, तु० सं० अक्रियत, *अकृण्व्यत।

२१. अतर—अव्यय=में, तु० अवे० अन्तरॅ (antarə) सं० अन्तर, आ० फा० अन्दर

२१. मर्तिय—प्र० एक व० पु०=आदमी, तु० अवे० मश्य, सं० मर्त्य, पह० मर्त, आ० फा० मर्द

११. आगरिय—विशे० प्र० एक व० पु०, सं० अग्र, अग्रिय।

२१. अवम्—द्वि० एक व० निश्चयवाचक सर्व० अव=उसको तु० सं० *अवम्।

२१-२२. उबरतम—द्वि० एक व० पु० अच्छी प्रकार से बनाया हुआ ∠उ- अच्छा, सं० सु और बर्त, लङ् कृदन्ती √बर्, तु० सं० √भृ, सुभृतम्।

२२. अबरम—प्र० एक व० लङ्० कर्तृवाच्य √बर, तु० सं० अभरम्

२२. अरिक—प्र० एक व० पु० बुरा, सं० अरिकः।

२२. उफ्रस्तम्—द्वि० एक व० पु०=अच्छी तरह पूछा हुआ, ∠उ—, सं० सु अच्छी तरह + फ्रस्तम्, लङ् कृदन्ती √ प्रश् अवे० √ पॅरॅस-

(pərəs), सं० √प्रश्, √पृच्छ्, पह० √पुरसेतन, आ० फा० √पुर्सीदन 'पूछना', तु० सं० सुपृष्टम् ।

२२. अपरसम्—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √परश्=पूछा, तु० सं० अपृच्छम् ।

२३. त्यना—तृ० एक व० पु० > पं० एक व० पु० निश्चय वाचक सर्व० त्य=उससे, तु० सं० *त्यना ।

२३. दाता—तृ० एक व० नपुं० दात शब्द से,=नियम के द्वारा, अवे० दात, पह० दात, आ० फा० दाद, सं० हिता ।

२३. अपरियाय—अन्य पु० व० व० लङ् लकार कर्तृवाच्य् √अय्–(सं० √इ–, अवे० √अय् 'जाना') अ+परिय=(वे०) आये (came over); सं० *अपर्यायन ।

२३. य.थासाम—यथा, क्रियाविशे०=जिस प्रकार, सं० यथा, अवे० यथा+साम (ष० व० व० स्त्री० पश्चाश्रयी) तु० सं० यथा—आसाम् ।

२४. अव.था—क्रियाविशे०=इस प्रकार, अवे० अवथा, सं० *अवथा ।

२४-२५. अउरम.ज्दामइय—ष०/च० एक व० पु० पश्चाश्रयी <अउरमज्दा+मइय (ष० एक व० पश्चाश्रयी है प्र० पुरुष वाचक सर्वनाम का) तु० सं० असुरमेधाः मे ।

२५. इम—द्वि० एक व० नपुं० निश्चयवाचक सर्व० इम से, तु० अवे० इमत्, सं० इमत् ।

२५. उपस्ताम—द्वि० एक व० स्त्री०=सहायता <उप+स्ता, सं० स्था, अवे० उपस्ता, सं० उपस्थ 'गोद' *उपस्थाम ।

२५. अबर—अन्य पु० एक व० लङ्लकार √बर, सं० अभरत् ।

२५. यता—ताकि, तु० सं० यावत् ।

२६. हमदारयइय—प्र० पु० एक व० लङ् कर्मणि √दारय् (णिजन्त रूप है √दर्–) सं० √धारय्, √धृ का णिजन्त रूप, आ० फा० √दाश्तन् और हम्, सं० सम्, तु० सं० समधारये ।

२६. दारयामिय—प्र० पु० एक व० लट् कर्तृवाच्य (Present Indicative) √दर् 'पकड़ना', तु० सं० धारयामि।

२७. कर्तम—प्र० एक व० नपुं० भूतकाल कृदन्ती √कर्, तु० सं० कृतम् 'किया'।

२७. पसाव—क्रिया विशे० <*पसा, तृ० एक व० नपुं० तु० अवे० पस्च, वै० पश्चा सं० पश्चा+अव (द्वि० एक व० नपुं० निश्चय वाचक सर्व० अव का) इसके बाद, तु० सं० पश्चा+*अवत्, आ० फा० पस।

२७. य.था—<सम्बन्ध वाचक सर्व० य+क्रियाविशे० परसर्ग-था=बाद, तु० गा० अवे० यथा, सं० यथा।

२८. अबवम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ √बू-, सं० √भू 'होना'=हुआ, तु० सं० अभवम्।

२८. कबूजिय—प्र० एक व० पु० नाम है, तु० सं० *कम्बुज्यः।

२८. नाम—प्र० एक व० नपुं० या क्रिया विशे०=नाम के द्वारा; तु० सं० नाम।

२८. कूरउश—ष० एक व० पु० कूरु शब्द से, नाम है, तु० सं० कूरोः।

२९. हउवम—सर्व० प्र० एक व० पु०<हउव्+अम=वह, तु० सं० असौ।

२९. इदा—क्रिया विशे०=यहाँ <निश्चयवाचक सर्व० इ+द<-ध, अवे० इद (iδa) सं० इह।

२९. अवह्या—ष० एक व० पु० नपुं० निश्चयवाचक सर्व० अव=इसका, उसका तु० सं० *अवस्य।

२९. कबूजियह्या—ष० एक व० पु० कबूजिय शब्द से, तु० सं० कबूज्यस्य।

२९-३०.—ब्राता—प्र० एक व० पु० तु० सं० भ्राता, आ० फा० बिरादर।

३०. बर्दिय—प्र० एक व० पु०, नाम है; तु० सं० *बर्द्यः।

३०. हमाता—प्र० एक व० पु० ∠हम+मातर, तु० वै० सम्मातरा तु० सं० समाता (=having the same mother)।

३०. हमपिता—प्र० एक व० पु० <हम+पितर (=having the same father) तु० सं० समपिता।

३१. अवाज—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √जन्–, avā=(वह) मारा; तु० सं० अवाहन् ।

३१-३२. कारह्या—ष० एक व० पु० कार शब्द का, तु० सं० *कारस्य ।

३२. नइय—क्रियाविशे०=नहीं, कभी नहीं, तु० अवे० नोइत् (nōit), वै० नेत्, पह्० ने, सं० नेद, न, आ० फा० नह, न ।

३२. अ.ज्दा—क्रियाविशे०, जाना हुआ; गा० अवे० अज्दा, वै० अद्धा, पह्० अ.ज्द ।

३२. अबय—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √बू, सं० √भू=हो गया, तु० सं० अभवत् ।

३२. त्य—सम्बन्धवाचक नपुं० एक व० 'जो'; तु० सं० त्यत् ।

३२. तत्वजत्—प्र० एक व० पु० लङ् कृदन्ती कर्मणि √जन्–, सं० √हन्+ अव=मारा; तु० सं० अवहतः ।

३२. मुद्रायम—द्वि० एक व० पु०, तु० सं० *मुद्रायम्, मिश्र को ।

३३. अशियव—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √शियव् 'चलना, जाना'= (वह) गया; तु० गा० अवे० √श्यव्, यंग० अवे० √षु 'गति में रखना या गति युक्त करना' सं० √च्यु; तु० सं० अच्यवत् ।

३३. पसाव—(देखें नं० २७) ।

३३. कार—प्र० एक व० पु०, लोग, सेना; तु० सं० कारः ।

३३. अरिक—प्र० एक व० पु०=वैरी, तु० सं० *अरिकः ।

३४. द्रउग—प्र० एक व० पु०=विद्रोही, तु० अवे० द्रओग (draoγa), वै० सं० द्रोह, द्रोघः, आ० फा० दुरुघ ।

३४. दह्युवा—स० एक व० स्त्री० <दह्युव्+आ, दह्युवा रूप भी हो सकता है,=देश में, तु० सं दस्यु+आ ।

३४. वसिय—क्रियाविशे० स० एक व० पु० या नपुं०=अधिकता से, महानता पूर्वक', तु० सं० *वशे, पह्० वस, आ० फा० बस, बसे, बसी, वेश ।

३४. उता—सम्बन्ध कारक=और, तु० अवे० उत, सं० उत ।

३४. पार्सइय—स० एक व० पु० पार्स शब्द से, तु० सं० *पार्से ।

३४. मादइय—स० एक व० पु० माद शब्द से, तु० सं० *मादे ।

३५. अनियाउवा—स० ब० व० स्त्री० विशे० <अनियाउव्+आ, तु० अवे० अइन्य, अन्यो, सं० अन्य, सं० अन्यासु+आ=दूसरों में ।

३५. दह्युशुवा—स० द्वि० व० स्त्री० <दह्युशुव+आ=देशों में, तु० सं० दस्युषु-आ ।

३६. I—संख्यायें अक्सर संख्यावाची चिह्नों के द्वारा दिखाये जाते हैं शब्दों के द्वारा बहुत कम दिखाये जाते हैं । अइव—प्रथमा एक व० पु०, तु० अवे० अएव (aēva–), पह्० एव, तु० सं० एक, एव (=केवल) ।

३६. मगुश—प्र० एक व० पु०, एक जाति का नाम, अवे० मोगु (moɣu) तु० सं० *मगु: ।

३६. गउमात—प्र० एक व० पु०, नाम है ।

३६. हउव—प्र० एक व० पु० सर्व०=वह, तु० सं० असौ ।

३६—उदपतता—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √पत–, सं० √पत्+क्रिया पूर्व उद, सं० उद्/उत् तु० सं० उदपतत=उठा ।

३६-३७. पइशियाउवादाया—पं० एक व० स्त्री०, एक जिले का नाम है ।

३७. अरकद्रिश्—प्र० एक व० पु०=पर्वत, तु० अवे० कओफ, पह्० कोफ, आ० फा० कोह/कुह ।

३७. अवदश—क्रियाविशे० <अवद+पंचमी वि०-श; अवद <अव+इदा =तबसे, वहाँ से, तु० सं० *अवध: ।

३७. वियख्नह्य—ष० एक व० पु०=वियख्न का, एक महीने का नाम है, फरवरी—मार्च ।

३७-३८. माह्या—ष० एक व० पु० माह् शब्द से (अवे० माह, सं० मास, आ० फा० माह) <माहि+आ, सं० मासि+आ=महीने में ।

३८. रउचबिश—तृ० व० व० नपुं० रउच शब्द से (तु० अवे० रओश:, पह्० रोश, सं० रोच:, आ० फा० रो.ज/रू.ज, दिन, प्रकाश)=दिनों के द्वारा, तु० सं० रोचभि: (नं० २० भी देखें) ।

३८. थकता —प्र० पु० ब० व० नपुं० थकत शब्द से भूत कृदन्ती √थक, अवे० सक्, सं० शक् 'पार करना',=गया, पूरा किया तु० सं० *शक्ता, शकिता।

३८. आह—=थे, अन्य पु० ब० व० लङ् कर्तृवाच्य √अह् 'होना' तु० सं० आसम्।

३८. यदिय—क्रियाविशे०=जब <संबंधवाचक सर्व० य+धि, तु० अवे० येइदी (yeiδī) सं० यदि=अगर, शायद।

३९. अदुरुजिय—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √दुरुज—'धोखा देना, झूठ बोलना', अवे० द्रुज, सं० द्रुह्=(उसने) धोखा दिया।

३९. अमिय—प्र० पु० एक व० लट् कर्तृ वा० √अह, सं० √अस् 'होना'=(मैं) हूँ। तु० अवे० अह्मि, सं० अस्मि।

४०. हरुव—प्र० एक व० पु०=सब; अवे० हउर्व, सं० सर्व, आ० फा० हर।

४०. हमिस्सिय—प्र० एक व० पु० <हम या ह+मिस्स (miss) मिथ (=मित्र)+इय=विरोधी, वैरी; तु० सं० *समिथ्यहः।

४०. हचा—पूर्वसर्ग पंचमी विभक्ति (देखें नं० ७)।

४०. कबूजिया—पंचमी एक व० पु० तु० सं० *कबुज्यात् (देखिये नं० २८)।

४०. अबिय—पूर्वसर्ग द्वि० विभक्ति=ओर, तरफ तु० गा० अवे० अइबी, यंग० अवे० अइवि (aiwi), अओइ, सं० अभि।

४१. अनिया—प्र० ब० व० स्त्री०=दूसरे, अवे० अन्यो तु० सं० अन्याः।

४१. हउव—सर्व० प्र० एक व० पु० (देखिये नं० ३६)।

४२. अगर्बायता—तृ० एक व० लङ् कर्मणि √ग्रबाय (णिजन्त रूप है √ग्रब्, अवे० √ग्रब, सं० √ग्रभ्, आ० फा० √गिरिफ्तन=(वह) पकड़ा, तु० सं० अगृभायत, आ० फा० गिरिफ्त।

४२. गर्मपदह्य—ष० एक व० पु० गर्मपद शब्द से। एक महीने का नाम है (जून-जुलाई) तु० सं० *घर्मपदस्य।

४२. IX नव=९ संख्या (देखिये नं० ३६ और ३८)।

४३. उवामर्शियुश—विशे० प्र० एक व० पु० <उवा (वै० स्वा=अपना, निजी, आ० फा० .खुद+मर्शियु <अवे० मॅरॅथ्यु (mərəθyu-), सं० मृत्यु, आ० फा० मर्ग <√मुर्दन 'मरना'=अपनी मृत्यु से मरना तु० सं० स्वामृत्युः।

४३. अमरियता—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √मर् 'मरना', सं० √मृ, आ० फा० √मुर्दन=(वह) मर गया, तु० सं० अम्रियत।

४४. अइत—प्र० एक व० नपुं० निश्चय वाचक सर्व० का रूप है अइत=यह, तु० अवे० अएत (aēta) सं० एतत्।

४४. गउमात—सं० *गोमातः (देखिये नं० ३६)।

४४-४५. अदीना—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √दी, अवे० √.जी, सं० √जि जीतना, बलपूर्वक लेना'=(वह) जीता, तु० सं० *अजिनात्।

४५. कबूजियम—द्वि० एक व० पु० सं० कबूजियम शब्द से, (देखिये नं० २८)।

४५. परुवियत—(देखिये नं० ७)।

४५. अमा.खम—(देखिये नं० ८)।

४५. तउमाया—देखिये नं० ९)।

४५-४६. आह—देखिये नं० ८)।

४७. दह्याव—प्र० ब० व० स्त्री० (देखिये नं० १३)।

४७. हउव—देखिये नं० ३६)।

४७. आयसता—तृ० एक व० लङ् कर्मणि √यम्, सं० √यम्, अवे० √यस्+आ=(उसने) नियन्त्रित किया, तु० सं० आयच्छत।

४७. उवाइपशियम—द्वि० एक व० नपुं० उवाइपशिय शब्द से <उवाइ—प्र० एक व० उव शब्द से, तथा प्रथम पद में वृद्धि हो गई है सं० स्वय्-अम्=स्वयं, अपना+पशिय, अवे० पइतिश, सं० पति=पति, स्वामी, तु० सं० *स्वइपत्यम्, अवे० रु.वएपइथ.य।

४७. अकुता—अन्य पु० एक व० लुङ् कर्मणि √कर्=(वह) बनाया (उसने) किया; तु० सं० अकृत।

४७-४८. हउव—(देखिये नं० ३६)।

४८. ख़शायथिय—(देखिये नं० १) ।

४८. अबव—(देखिये नं० ३२) ।

४८. थातिय—(देखिये नं० ३) ।

४८. दारयवउश—(देखिये नं० १) ।

४८. ख्शाथ्रिय—(देखिये नं० १) ।

४८. मइय—देखिये नं० ३२) ।

४८. आह—(देखिये नं० ८ और १०) ।

४८. मरतिय—(देखिये नं० २१) ।

४९. अमा.खम—(देखिये नं० ८) ।

४९. तउमाया—(देखिये नं० ९) ।

४९. कश्चिय—प्र० एक व० पु०=कोई <कः, प्र० एक व० पु० है प्रश्न-वाचक सर्व० क से=कौन और चिय, प्र० एक व० नपुं० पश्चाश्रयी, उसी शब्द का तालव्यीय रूप है, तु० सं० कश्चित् ।

४९. ह्य—(देखिये नं० २१) ।

४९. अवम्—(देखिये नं० २१) ।

४९-५०. गउमातम—द्वि० एक व० पु०, तु० सं० *गोमातम् (देखिये नं० ३६) ।

५०. त्यम—द्वि० एक व० पु०=जो; सम्बन्ध वाचक सर्व० तु० सं० त्यम् (used as a Definite Article) ।

५०. मगुम—द्वि० एक व० पु० तु० सं० *मगुम् (देखिये नं० ३६) ।

५०. ख़शस्सम्—द्वि० एक व० नपुं०=राज्य तु० अवे० क्षथ्रम्, सं० क्षत्रम् (देखिये नं० १२) ।

५०. दीतम—द्वि० एक व० पु०—नपुं० लङ् कृदन्ती कर्माणि √दी, सं० √जि, अवे० √.ज़ि, बल पूर्वक लेना=जीता, तु० सं० जितम् ।

५०. चखिया—अन्य पु० एक व० पूर्ण इच्छासूचक कर्तृवाच्य (Perfect Optative Active) √कर=(वह) कर सका तु० वे० चक्रियाः (मध्यम पु० एक व०), सं० चक्रियात् ।

५०. कारशिम—<कार, प्र० एक व० पु०=लोग, सेना+शिम, द्वि० एक व० निश्चय वाचक सर्व० स, उसको, तु० सं० *कारः+*शिम् ।

५०. हृचा—(देखिये नं० ७) ।

५०. दरशम—क्रियाविशे० (द्वि० एक व० नपुं० दरश) <√दरश्, सं० √धृष्=बहुत अधिक, तु० वै० धृषः, सं० धृषम् ।

५०-५१. अतरस—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √त्रस्, सं० √त्रस्, अवे० √तँरँस् (tərəs-) आ० फा० √तरसीदन=(वह) डर गया, तु० सं० *अत्रस्यत्, *अत्रसत्, आ० फा० तरसद ।

५१. कारम—द्वि० एक व० पु० कार शब्द से=लोगों को, सेना को (देखिये नं० ३३) ।

५१. वसिय—(देखिये नं० ३४) ।

५१. अवाजनिया—अन्य० पु० एक व० इच्छासूचक कर्तृवाच्य √जन्, सं० √हन्+अव+आ=(वह) मारेगा, तु० सं० अवाहन्यात् ।

५१. ह्य—प्र० एक व० पु० (देखिये नं० २१) ।

५१. परनम—द्वि० एक व० नपुं० क्रियाविशे०=पहले की तरह, तु० सं० *पुरा, अवे० पर, परा, परो (parō) देखिये दुवितापरनम नं० १० में) ।

५१. बर्दियम—(देखिये नं० ३१) ।

५१. अदाना—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवाच्य √ख़्शॅ्ना, सं० √ज्ञा, आ० फा० √दानस्तन 'जानना'=(वह) जान गया, तु० सं० अजानात्, आ० फा० दानद ।

५१-५२. अवह्यरादिय—(देखिये नं० ६-७) ।

५२. अवाजनिया—(देखिये नं० ५१)

५२. मात्यमाम्—संबंध कारक <मा निषेधात्मक+संबंध कारक त्य+माम्, मे (द्वि० एक व०)=मुझको कभी नहीं, तु० सं० मा-त्यत् माम् ।

५२. ख़्शानासातिय—अन्य पु० एक व० लेट् कर्तृवाच्य √ख़्श्ना, सं० √ज्ञा, आ० फा० √दानस्तन=(वह) जानेगा, तु० सं० *ज्ञाच्छाति ।

५२. त्य—(देखिये नं० २७)

५२. अदम—(देखिये नं० १)

५२. नइय—(देखिये नं० ३२)

५२-५३. बर्दिय—(देखिगे नं० ३०)

५३. अमिय—(देखिये नं० १२)

५३. कूरउश—(देखिये नं० २८)

५३. पुरस—(देखिये नं० ३)

५३. कश्चिय—(देखिये नं० ४९)

५३. नइय—(देखिये नं० ३२)

५३. अदरशनउश—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √द्रृश् या √दर्श् 'साहस करना', अवे० √दॅरॅश् (dərəš), सं० √धृष्=(उसने) साहस किया, तु० सं० अधृष्णोत् ।

५३. चिश्चिय—द्वि० एक व० नपुं० <चिश् प्र० द्वि० नपुं० एक व० प्रश्नवाचक सर्वनाम का तालव्य रूप है चि+चिय् पश्चाश्रयी निपात्=जो कुछ, तु० सं० चित्-चित् ।

५३-५४. थस्तन—च० या स० एक व० क्रियार्थक रूप √थह् 'कहना' अवे० √सह्, सं० शंस् 'कहना' तु० सं० शस्तने ।

५४. परिय-पूर्वसर्ग द्वि० के साथ=विषय में; तु० अवे० पइरि, सं० परि ।

५४. याता—(देखिये न० २५)

५४. अरसम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √अर् 'हिलना, आगे आना' तु० सं० √ अर्, √ऋ, आ० फा० √रसीदन=(मैं) पहुँचा, तु० सं० आर्च्छम् ।

५४. पसाव—(देखिये नं० २७)

५४-५५. अउरम.ज्दाम—द्वि० एक व० पु० तु० सं० असुरमेधाम्, (देखिये नं० १२)

५५. पतियावह्यइय—प्र० पु० एक व० लङ् कर्मणि √अवह्य, एक नामधातु क्रिया है *अवह शब्द से, अवे० √अवङ्ह्, सं० √अवस् 'सहायता' और पतिय, अवे० 'पइति, सं० प्रति, तु० सं० प्रत्यावस्ये=सहायता के लिये बुलाया ।

५५. अउरम.ज्दामझ्य—(देखिये नं० २४-२५)

५५. उपस्ताम्—(देखिये नं० २५)

५५. अबर—(देखिये नं० २५)

५५. बागयादइश—ष० एक व० पु०=बागयादि का, एक महीने का नाम है <बाग अर्थात् बग शब्द की वृद्धि हो गयी, सं० भग, भाग+√यद्, सं० √यज्, लम्बे किये हुए स्वर के साथ और -इ-, तु० सं० *भागयाजेः

५६. माह्या—(देखिये नं० ३७-३८)

५६. X—संख्या=दस (देखिये नं० १७,३६,३८)

५६. रउचविश—(देखिये नं० ३८)

५६. थकता—(देखिये नं० ३८)

५६. आहू—(देखिये नं० ८)

५६. अवथा—(देखिये नं० २४)

५६. अदम—(देखिये नं० १)

५६. हदा—पूर्वसर्ग तृतीया के साथ "साथ"<भारो० *संधे, अवे० हदा, सं० सह=साथ

५६. कम्नइबिश—तृ० ब० व० पु० कम्न शब्द से विशे०=छोटा, थोड़ा; तु० अवे० कम्न, सं० *कम्न, आ० फा० कम=थोड़े के साथ, कुछ के द्वारा, तु० सं० *कम्नेभिः ।

५६-५७. मर्तियइबिश—तृ० ब० व० पु० मर्तिय शब्द से, सं० मर्त्य=आदमियों के साथ, तु० सं० मर्त्येभिः (देखिये नं० २१)

५७. अवम—(देखिये नं० २१)

५७. गउमातम—(देखिये नं० ४९-५०)

५७. त्यम—(देखिये नं० ५०)

५७. मगुम—(देखिये नं० ५०)

५७. अवाजनम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ √जन्, अवे० √.जन्, सं० √हन्, आ० फा० √.जदन, अव=(मैंने) मारा, तु० सं० अवाहनम् ।

५७. उता—(देखिये नं० ३४)

५७. त्यइशइय—<त्यइ=वे, प्र० ब० व० पु० निश्चय वाचक सर्व० त्य+शइय, उसको, उसका, च०-ष० एक व० निश्चय वाचक सर्व० स=उनका, तु० सं० त्ये-*से ।

५७. फ्रतमा—प्र० ब० व० पु० विशे० <फ्र, सं० प्र+उत्तमावस्था का उपसर्ग तम तु० अवे० फ्रतेम, सं० प्रथमाः

५७-५८. मर्तिया—प्र० ब० व० पु०=बहुत से व्यक्ति, तु० सं० मर्त्याः (देखिये नं० २१)

५८. अनुशिया—प्र० ब० व० पु० <अनु या अनुव+उपसर्ग त्य=अनुगामी, तु० सं० *अनुत्याः ।

५८. आहता—(देखिये नं० १९)

५८. सिकयउवतिश—प्र० एक व० स्त्री० सिकयउवति शब्द से मिडिया में एक किले का नाम । तु० सं० *शिकयस्वती

५८. नामा—क्रिया विशे० या प्र० एक व० स्त्री०=नाम से, तु० सं० नाम (देखिये नं० २८)

५८. दिदा—प्र० एक व० स्त्री०=किला, दृढ़ मज़बूत, तु० सं० देहि–,देह–, देहलि; अवे० दएज (daēza), आ० फ़ा० दिज, सं० *दिघा ।

५८. निसाय प्र० एक व० पु० निसाय, मिडिया में एक जिले का नाम, तु० सं० निसायः ।

५८-५९. नामा—(देखिये नं० २८)

५९. दह्याउश - प्र० एक व० स्त्री=जिला, तु० सं० *दस्युः ।

५९. मादइय—स० एक व० पु०=मीडिया में, तु० सं० *मादै (देखिये नं० ३४)

५९. अवदशिम—<अवद, क्रियाविशे० अव+idā=तब, वहाँ+द्वि० एक व० पु० निश्चय वाचक सर्वनाम स का=वहाँ उसको, तु० सं० *अवध-सिम ।

५९. अवाजनम्—(देखिये नं० ५७)

५९. .ख्शास्समशिम—.ख्शास्सम–द्वि० एक व० नपु०, अवे० क्षथ्रम, सं० क्षत्रम्= राज्य +द्वि० एक व० पु० निश्चय वाचक सर्वनाम स का=उसको राज्य, तु० सं० *क्षत्रं-सिम् ।

५९. अदम—(देखिये नं० १)

५९. अदीनम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वाच्य √दी, सं०√जि 'जीतना' =(मैंने) जीता तु० सं० अजिनम् ।

५९-६०. वश्ना—(देखिये नं० ११)

६०. अउरम.ज्दाह –(देखिये नं० ११-१२)

६०. अदम—(देखिये नं० १)

६०. .ख्शार्य.थय—(देखिये नं० १)

६०. अबवम्—(दखिये नं० २८)

६०. अउरम.ज्दा—(देखिये नं० १२)

६०. .ख्शास्सम—देखिये नं० १२)

६०. मना—(देखिये नं० ४)

६०-६१. फ्राबर—(देखिये नं० १२)

६१. थातिय—(देखिये नं० ३)

६१. दारयवउश—(देखिये नं० १)

६१. .ख्शार्य.थय—(देखिये नं० १)

६१. .ख्शास्सम—(देखिये नं० १२)

६१. त्य –(देखिये नं० १९,२७)

६१. हचा—(देखिये न० ७)

६१. अमा.खम—(देखिये नं० ८)

६१-६२—तउमाया—पं० एक व० स्त्री०=हमारे परिवार से, तु० सं० तोक्मनः (देखिये नं० ९) ।

६२. पराबर्तम—प्र० पु० एक व० नपुं० लङ् कृदन्तों कर्मणि √बर, अवे०

√बर, सं० √भृ, उपसर्ग परा=ले गया, तु० सं० पराभृतम्, तु० आ० फा० फराबुर्द।

६२. आह—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवा० √अह 'होना' (देखिये नं० ८, १०)।

६२. अव—देखिये नं० २०।

६२. अदम—(देखिये नं० १)।

६२. पतिपदम—द्वि० एक० व० नपुं०, <पति+पदम द्वि०=उचित स्थान पर या अपने स्थान पर, तु० सं० प्रतिपदम्।

६२. अकुनवम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ √कर=(मैंने) किया, तु० सं० अकृणवम्।

६२. अदमशिम्—द्वि० एक व० नपुं० <अदम, प्र० एक व० पु० प्रथम पुरुष सर्व०+शिम, द्वि० एक व० पश्चाश्रयी (enclitic) अन्य पुरुष वाचक सर्व० तु० सं० अहम्-*सिम्।

६२-६३. गाथवा—स० एक व० पु० गा.थु शब्द से, सं० गातु-<गाथउ+आ,=गद्दी पर, स्थान पर। तु० अवे० गातवा, सं० गातौ+आ, पह्० गास, आ० फा० गाह्।

६३. यवास्तायम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृवा० √स्ताय (√स्ता का णिजन्त रूप)+उपसर्ग अव=मैं स्थापित किया; तु० सं० *अवास्थापयम्, *अवास्थायम्।

६३. यथा—(देखिये न० २७)।

६३. परुवमचिय—∠परुवम द्वि० एक व० नपुं० क्रियाविशे० के रूप में+चिय बलात्मक पश्चाश्रयी क्रियाविशे०=पहले से भी; तु० सं० पूर्वम्-चित्; (देखिये नं० ९)।

६३. अवथा—(देखिये नं० २४)।

६३. अदम—(देखिये नं० १)।

६३. अकुनवम्—(देखिये नं० ६२)।

६३-६४. आयदना—द्वि० ब० व० नपुं० <√यद, अवे० √य.ज् 'पूजा करना'+आ पूर्वसर्ग=पूजा का स्थान; तु० सं० आयजना।

६४. त्या—देखिये नं० १३)।

३४. गउमात—(देखिये नं० ३६)।

६४. ह्य—(देखिये नं० २१)।

६४. मगुश—(देखिये नं० ३६)।

६४. वियक—अन्य पु० एक व० लुङ् कर्तृवा० √कन, तु० अवे० √कन, सं० √खन्, आ० फा० √कन्दन+क्रियापूर्व प्रत्यय विय=(उसने) नष्ट किया, तु० सं० *व्यखनत्।

३४. अदम—(देखिये नं० १)।

६४. नियस्सारयम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृवा० स्सारय शब्द से, √स्सय का णिजन्त रूप, अवे० √स्रय, सं० √श्रि+निय,=(मैंने) इकट्ठा किया, तु० सं० *न्यश्राययम्।

६४. कारह्या—(देखिये नं० ३१-३२)।

६४-६५. अबिचरिश—द्वि० एक व० नपुं० <√ चर 'जाना'+अबि=चरागाह या मैदान तु० सं० *अभिचरिः।

६५. गइ.थाम्चा—द्वि० एक व० स्त्री० गइ.था शब्द से=व्यक्तिगत सम्पत्ति तु० अवे० गएथा, पह० गेहान, आ० फा० जहान, गीती+चा, तु० सं० *गेथाम्-च।

६५. वि.थबिश्च—तृ० ब० व० स्त्री०, पं० ब० व० स्त्री० के लिये प्रयुक्त है=गाँव, घर; तु० अवे० वीस, सं० विश, लै० वीकुस, ग्रीक ओइकोस, तु० सं० *विड्भिश्च।

६५. त्यादिश—त्या, द्वि० ब० व० नपुं० और दिश् द्वि० ब० व० पुं० (पश्चाश्रयी सर्व० अन्य पुरुष)—शिश के सादृश्यीकरण पर बना है। प्राचीन फारसी में केवल शिश और दिश ही द्वि० बहुवचनान्त के ऐसे रूप हैं जो

विभक्ति से भिन्न हैं। अन्य सभी द्वि० ब० व० प्राचीन फारसी में प्र० ब० व० के समान होते हैं। या तो ध्वनि सादृश्य के द्वारा या सादृश्यीकरण (analogy) के द्वारा।

६५. गउमात—(देखिये नं० ३६)।

६५. ह्य—(देखिये नं० २१)।

६६. मगुश—(देखिये नं० ३६)।

६६. अर्दीना—(देखिये नं० ४४-४५)।

६६. अदम—(देखिये नं० १)।

६६. कारम—(देखिये नं० ५१ ।

६६. गा.थवा—(देखिये नं० ६२-६३)।

६६. अवास्तायम—(देखिये नं० ६३)।

६६. पार्सम चा—पार्सम्, द्वि० एक व० पु० और समुच्चय बोधक निपात चा, तु० सं० *पार्सम्-च; (देखिये नं० १४ और ४६)।

६६-६७. मादम चा—मादम द्वि० एक व० पु० और समुच्चय बोधक निपात चा=और, तु० सं० *मादम-च (देखिये नं० १५,४१,४७)।

६७. उता—(देखिये नं० ३४)।

६७. अनिया—(देखिये नं० ४१)।

६७. दह्याव—देखिये नं० १३)।

६७. य.था—देखिये नं० २७)।

६७. परुवमचिंय—देखिये नं० ९,६३)।

६७. अवथा—देखिये नं० २४)।

६७. अदम—(देखिये नं० १)।

६७. त्य—देखिये नं० १९,२७,३२)।

६७-६८. पराबर्तम—(देखिये नं० ६२)।

६८. पतियाबरम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √बर, अवे० √बर्, सं०

√भृ+पतिय+आ=(मैं) वापस लाया, पुनः लाया, तु० सं० प्रत्या-भरम् ।

६८. वश्ना—देखिये नं० ११) ।

६८. इम—(देखिये नं० २७) ।

६८. अकुनवम—(देखिये नं० ६२) ।

६८. हमतख़शइय—प्र० पु० एक व० लङ् कर्मणि √तख़.श 'स्फूर्त होना', सं० √तक्ष् 'लड़ना, मोड़ना'+हम=(मैंने) भगाया, तु० सं० समतक्षे ।

६९. याता—(देखिये नं० २५) ।

६९. वि.थम—द्वि० एक व० स्त्री० वि.थ शब्द से, तु० अवे० वीस, सं० विश्, लै० वीकुस=घर, तु० सं० विशम् ।

६९. त्याम्—द्वि० एक व० स्त्री० निश्चय वाचक-सम्बन्ध वाचक सर्व० त्य=उनको; तु० सं० त्याम् ।

६९. अमा.खम—(देखिये नं० ८) ।

६९. गा थवा—(देखिये नं० ६२-६३) ।

६९. अवास्तायम्—(देखिये नं० ६३) ।

६९. यथा—(देखिये नं० २७) ।

६९. परुवमचिय—(देखिये नं० ६३) ।

७०. अव.था—(देखिये नं० २४) ।

७०. वश्ना—(देखिये नं० ११) ।

७१. विथम—द्वि० एक व० स्त्री० वि.थ शब्द से, तु० अवे० वीस्, सं० विश् (देखिये नं० ६९) ।

७१. त्याम्—(देखिये नं० ६९) ।

७१. अमा.खम—(देखिये नं० ८) ।

७१. नइय—(देखिये नं० ३२) ।

७१. पराबर—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवा० √बर, परा उपसर्ग=(वह) ले गया, तु० सं० पराभरत् ।

७२. अकुनवम्—(दखिये नं० ६२) ।
७३. अवाजनम—(देखिये नं० ५७) ।
७४. आस्सिन—प्र० एक व०, पु०, नाम है, तु० सं० *आत्रिणः ।
७४. उपदर्मह्या—ष० एक व० पु० उपदर्म शब्द से, नाम है; तु० सं० *उपदर्मस्य ।
७४. उदपतता—(देखिये नं० ३६) ।
७४-७५. ऊव्जइय—स० एक व० पु०, तु० सं० *सुवजे ।
७५. अवथा—(देखिये नं० २४) ।
७५. अ.थह्—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृवा० √.थह्, अवे० √सह्, सं० √शंस् 'कहना'=कहा, तु० सं० अशंसत् ।
७५-७६. ऊवजीया—प्र० ब० व० पु०, तु० सं० *सुवज्याः ।
७६. हमिस्सिया—प्र० ब० व० पु०=शत्रु; तु० सं० *समिथ्याः (देखिये नं० ४०) ।
७६. आस्सिनम—द्वि० एक व० पु० तु० सं० *आत्रिणम् (देखिये नं० ७४) ।
७७. उता—समुच्चय बोधक=और (देखिये नं० ३४) ।
७७. बाबिरुविय—प्र० एक व० पु० <बाबिरुव+इय, तु० सं० *बावेरुव्यः ।
७७. नदितबइर—प्र० एक व० पु०, नाम है; तु० सं० *नदित्तबेरः ।
७७-७८. अइनइरह्या—ष० एक व० पु०, नाम है; तु० सं० *एनेरस्य ।
७८. अदुरुजिय—(देखिये नं० ३९) ।
७८-७९. नबुकुद्रचर—प्र० एक व० पु०, नाम है, तु० सं० *नबुकुद्रचरः ।
७९. नबुनइतह्या—ष० एक व० पु०, नाम है, तु० सं० *नबुनेतस्य ।
८०. अशियव—(देखिये नं० ३३)
८०. बाबिरुश—प्र० एक व० पु० स्त्री०, एक देश का नाम, तु० सं० *बावेरुः ।
८१. बाबिरउव—स० एक व० पु० स्त्री०=बेबीलोन में, तु० सं० *बावेरौ ।
८१. अगरबायता—(देखिये नं० ४२) ।

८२. फ्राइशयम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ √इशय णिजन्त रूप है √इश् का, फ्रा उपसर्ग=मैंने भेज दिया; तु० सं० प्रैषयम् ।

८२. उवजम—द्वि० एक व० नपु० (देखिये नं० १४) ।

८२. हुउव—(देखिये नं० ३६) ।

८२. आस्सिन—(देखिये नं० ७४) ।

८२. बस्त—प्र० एक व० पु० भूतकाल कृदन्तो √बन्द, सं० √बन्ध, आ० फा० √बन्दीदन, 'बाँधना'=बाँधा, तु० सं० बन्धः, आ० फा० बन्देह् ।

८२. अनयता—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √नो=लाया गया था, तु० सं० अनीयत ।

८२-८३—माम—द्वि० एक व० प्र० पु० वाचक सर्व० मुझको', तु० सं० माम् ।

८३. अदमशिम—(देखिये नं० ६२) ।

८३. अवाजनम—(देखिये नं० ५७) ।

८४. अशियवम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √शियु, सं० √च्यु 'हिलना, चलना'=मैं गया; तु० सं० अच्यवम्; (देखिये नं० ३३) ।

८४. नबुकुद्रच र—(देखिये नं० ७८-७९) ।

८४. अगउबता—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √गुब्र, आ० फा० √गुफ्तन, तु० सं० *अगोभत (called oneself) ।

८५. नदितबइरह्या—ष० एक व० पु०=नदितबैर का, तु० सं० *नदित-बेरस्य; (देखिये नं० ७७) ।

८५. तिग्राम—द्वि० एक व० स्त्री० तिग्रा शब्द से=तिगरिस नदी, तु० अवे० तिग्रिस, तु० सं० *तिग्राम ।

८५. अदारय—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √दारय, णिजन्त रूप √दर से, अवे० √दर्, सं० √धृ, आ० फा० √दाशतन=(उसने) पकड़ा, तु० सं० अधारयत्, आ० फा० दारद ।

८५. अवदा—क्रियाविशे० <अव+इदा=तब, वहाँ; तु० सं० अवध ।

८५. अइशतता—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √स्ता, अवे० √स्ता, सं० √स्था, आ० फा० √हस्तीदन, √इस्तादन=(वह) हुआ, तु० सं० अतिष्ठत ।

८५. उता—(देखिये नं० ३४) ।

८६. अबिश—क्रियाविशे०, यहाँ श क्रियाविशेषणात्मक परसर्ग है=पास, पास में; तु० अवे० अइबि, अइवि, सं० *अभिः, अभि ।

८६. नाविया—प्र० एक व० स्त्री०, छोटी नौका; तु० अवे० नावय, सं० नाव्या ।

८६. मश्काउवा—स० ब० व० स्त्री० मश्का शब्द से+परसर्ग=(floats of skin) तु० सं० *अवाखनम ।

८६. अवाकनम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √कन+अव उपसर्ग=(मैंने) रखा, तु० सं० *अवाखनम ।

८६. अनियम—द्वि० एक व० पु० विशे०=दूसरा, तु० अवे० अइन्य, सं० अन्यम् ।

८६-८७. उशबारिम—द्वि० एक व० पु० विशे० उश शब्द से, अवे० उश्ट्र-और बारि <√बर 'बर 'सहन करना, ले जाना', तु० सं० *उष्ट्र-भारिम् ।

८७. अकुनवम—(देखिये नं० ६२) ।

८७. अनियह्या—ष० एक व० पु० विशे०=दूसरे के लिये, तु० सं० अन्यस्य, (देखिये नं० ८६) ।

८७. असम—द्वि० एक ब० पु० अस शब्द से घोड़ा, तु० अवे० अस्प, सं० अश्वम्, प्रा० फा० अस्स ।

८७. फ्रानयम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √नय, फ्र उपसर्ग=आगे लाया; तु० सं० प्राणयम् ।

८७. उपस्ताम—(देखिये नं० २५) ।

८८. वियतरयामा—प्र० पु० व० व० लङ् कर्तृ √तरय (√तर् का णिजन्त रूप) विय उपसर्ग=(हम) पार हो गये; तु० सं० व्यतरयाम ।

८८. अवदा—(देखिये नं० ८५)।

८९. अजनम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √जन, अवे० √.जन, सं० √हन्=(मैंने) मारा; तु० सं० अहनम् ।

८९. वसिय—(देखिये नं० ३४)।

८९—आस्सियादियह्य—ष० एक व० आस्सियादिय, प्राचीन फारसी के एक महीने का नाम; तु० सं० *आत्रियाज्यस्य ।

९०. हमरनम—द्वि० एक व० नपुं० <हम+√अर, तु० अवे० √अर, सं० √ऋ, अवे० हमरॅन, सं० समरणम्=संघर्ष, लड़ाई।

९०. अकुमा—प्र० पु० व० व० लुङ् कर्तृ वा० √कर, अवे० √कर, सं० √कर्=(हमने) बनाया, (हमने) किया; तु० सं० अक्रम ।

९१. अ.िथम—पूर्वसर्ग=पास; तु० सं० अथ, *अध; सं० अधि का सजातीय शब्द हो सकता है ।

९१-९२—उपायम—प्र० पु० एक व० लङ् कर्तृ० वा० √अय 'जाना, पहुँचना' सं० √इ उप उपसर्ग है=(मैं) आया, (मैं) पहुँचा; तु० सं० उपायम् ।

९२. .जा.जान—प्र० एक व० पु०, बेलीलोनिया में एक कस्बे का नाम है; तु० सं० *जाजानः ।

९२. वर्दनम—प्र० एक व० नपुं०=गाँव या कस्बा, अवे० वॅरॅजॉन (vərəzə̄na varəzāna), सं० वृजन; तु० सं० वर्धन ।

९२. अनुव—पूर्वसर्ग है, तु० अवे० अनु, सं० अनु ।

९२. उफ्रातुवा—तृ० एक व० पु० उफ्रातु शब्द से; तु० सं० *सुप्रातौ+आ। इसको व्युत्पत्ति अनिश्चित है ।

९२. अवदा—(देखिये नं० ८५)।

९३. आइश—अन्य पु० एक व० लङ् कर्तृ वा० √अय 'जाना', अवे० √अय, सं० √इ=वह गया; तु० सं० ऐत् ।

९३. हदा—(देखिये नं० ५६) ।

९३. कारा—तृ० एक व० पु० कार शब्द से=लोगों के द्वारा (देखिये नं० ३३) ।

९३. पतिश—क्रियाविशे०, श पूर्व प्रत्यय है पूर्वसर्ग पति के साथ जुड़ा हुआ है । (देखिये अबिश नं० ८६) ।

९४. चर्तनइय—च० तुमुनन्त क्रिया चर से √कर का तालव्य रूप है=करना, बनाना; तु० सं० *चर्तने ।

९५. अनिय—प्र० एक व० पु० विशे०=दूसरा; अवे० अइन्य, सं० अन्यः (देखिये नं० ८६) ।

९५. आपिया—स० एक व० स्त्री० आपि शब्द का, अवे० आप, सं० प्र० व० व० आपः—आ० फा० आब=पानी में; तु० सं० *आप्याम् ।

९५. आहृता—अन्य पु० एक व० लङ् कर्मणि √अह 'फेंकना' तु० अवे० √अह, सं० √अस्=फेंका गया था ।

९५-९६. आपिशिम—आपिश=पानी (प्र० एक व० स्त्री०) और शिम=उसको (द्वि० एक व० पु०), तु० सं० *आपी *सीम् ।

९६. पराबर—अन्य पु० लङ् कर्तृ वा० √बर, परा उपसर्ग=ले गया (carried away), तु० सं० पराभरत्, आ० फा० फेरबुर्द ।

९६. अनामकह्या—ष० एक व० पु०-नपुं० अनामक शब्द से=अनामक महीने का, तु० सं० *अनामकस्य ।

●

English Translation :

Line 1-3. I am Darius, the mighty king, king of kings, king of Persia, king of countries, son of Vistaspa, grandson of Arsama, the Achaemenian.

Line 3-6. Says Darius, the ruler, my father is Vistaspa and Vistaspa's father is Arsama, Arsama's father is Ariyaramna, Ariyaramna's father is Cispis, Cispis's father is Haxamanis.

Line 6-8. Says Darius, the king, for this reason we are called Achaemenian. From yore we are well born. From past our dynasty was ruler.

Line 9-11. Says Darius the king, formerly (eight) 8 were rulers in my dynasty. I am the ninth. We were rulers successi vely.

Line 11-12. Says Darius the king, by the desire of Ahuramazda I am the King. Ahuramazda granted me the kingdom.

Line 13-17. Says Darius the king, these countries came to me (literally came to my rule) by the will of Ahuramazda. I became ruler of these : Persia, Susian, Bebilonia, Assyria, Arabia, Egypt, Sardis, Yavanā, Media, Armania, Cappadocia, Parthia, Drangiana, Aria, Chorasmia, Bactria, Sogdiana, Gandara, Scythia, Sattagydia, Sarasvatiḥ, Arachosia, Maka. These are the 23 Kingdoms ruled by Darius,

Line 17-19. Says Darius the king, these countries were granted to me by the will of Ahuramazda.

Line 19-20. These countries which were submissive to me they give me my tributes. The words which I told them at night or at day times they are followed by them.

Line 20-24. Says Darius the king in these countries the men who is watchfull (faithful), I bestow him best rewards (awards) again, who is enemical I punish him with appropriate punishment. By the desire of Ahuramazda these countries were came over (given) to me from him. The words which were told from me to them were followed accordingly.

Line 24-26. Says Darius, the king this kingdom was granted to me by Ahuramazda, Ahuramazda also bestowed me help till I bear kingdom, I bear it by the will of Ahuramazda.

Line 27-30. Says Darius the king (the works) which I did (for those works) I became king afterwards. Cambyses the son of (Kuru) Cyrus in our dynasty, was a king. Smerdis (Barhya) was the own brother of Cambyses, having the same mother as well as the same father.

Line 30-33. Afterwards Cambyses killed this Smerdis, When Cambyses killed Smerdis people did not know that Smerdis was killed. Afterwards Cambyses went away to Egypt and when Cambyses went away to Egypt people became hostile.

Line 34-40 Afterwards there were rebellion ramphant in the country whether in Persia and in Media as well as in other countries. Says Darius the king, afterwards one man who was a Magian and named as Gometes rebelled from Pesyaubādaya from a mountain called Arkadri in the month

of Viyakhna when fourteenth days had passed. Thus he deceived the people by saying 'I am Smerdis' son of Cyres and brother of Cambyses.

Line 41-43. Afterwards all the people from Cambyses's side became hostile and went forward (towards Smerdis) whether in Persia or in Media or in other countries. He seized the country in the month of Garmapada when ninth day had passed. After that Cambyses died self-death.

Line 43-48. Says Darius the king this kingdom was over by Gometes a magian from Cambyses, this kingdom from yore was in our dynasty. After that Gometes who was a magian won over Cambyses as well as Persia and Media and other countries. He controlled (the kingdom) and made self-possession as well as became king.

Line 48-51. Says Darius the king there was no man either in Persia or in Media or in our dynasty who could make that Gometes bereft of kingdom. He feared people excessively and abundantly killed those who knew Smerdis previously,

Line 51-55. For this reason he killed the people that they might not be able to recognise me that I am not Smerdis, the son of Cyrus. No one dared to tell anything to Gometes the Magian till I came. Afterwards I asked Ahuramazda for help, Ahuramazda helped me or gave me award.

Line 55-60. In the month of Bagayadi ten days had passed when I with a few men killed Gometes, the Magian and his chief followers in the fort of Sikayauvati in the province of Nisaya, in the country of Media, there I killed.

I conquered the country from him and by the will of Ahuramazda I became the king.

Line 60-68. Ahuramazda granted me the kingdom. Says Darius the king, the kingdom which went away from our dynasty I reinstated that in proper place. I restored them in proper place as it was before Gometes, the Magian destroyed the sanctuaries I restored them. Gometes, the Magian took away by force the pastures, properties, estates, villages etc. of the people. I replaced the people in proper place even in Persia in Media as well as is other countries. I restored the taken away things as it was before.

Line 68-72. I did it by the grace of Ahuramazda, I strove till I restore our royal house in its proper place as it was before I strove by the grace of Ahuramazda so that Gometes the Magian may not take away our royal house. Says Darius the king I did this after I became the king.

Line 72-75. Says Darius the king when I defeated Gometes the Magian after that there arose a man called Assina, son of Upadarma in Sussiana. He told the people I am king in Sussiana.

Line 75-80. After that Susians became hostile and went over to that Asina. He became king in Sussiana. After that one man who was in Babylonian and whose name was Naditabaira, son of Ainara went over in Babylonia. He deceived the people 'I am Nabakudracara, Son of Nabunaita. After that all the people went over to that Naditabaira, who was a Babylonian. Babylonia became hostile.

Line 80-85. He seized the kingdom in Babylonia. Says Darius the king afterwards I went forth (an expedition) to Sussiana. That Asina was conducted bound to me. I killed him. Says Darius the king after that I went to Babylon against that Naditabaira who called himself Nabukudracara. The people of Naditabaira held the Tigrris and there he stayed.

Line 85-90. There was a flotilla nearby. After that I put some men on that floats of skin and made some men to ride on the camel and for others I brought some horses. Ahuramazda helped me. We crossed the river Tigris by the will of Ahuramazda. We killed the people of Naditabaira profusely on the month of Assiyadiya when 26 days had passed we fought the battle.

Line 90-96. Says Darius the king afterwards I went to Babylon. When I had not entered Babylon Naditabaira who called himself Nabukudracara went to a town called Zazana near Euphrates with his people and made a war with me. After that we made war. Ahuramazda helped me and by the will of Ahurmazda I killed the people of Naditabaira utterly and others were thrown into the water and water carried them away. In the month of Anamaka when two days had passed we fought a fight.

प्राचीन-फारसी-शब्दानुक्रमणिका

शब्दों के आगे दी हुई संख्याएँ यह सूचित करती हैं कि अमुक शब्द इन-इन लाइनों में आया है।

(Corrigendum) शुद्धिनिर्देशः

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धियाँ	शुद्धियाँ
५	३	૭u	૭̃u
८	३,१८,२०	र७	ख
१५	११	अस्मे	अस्मै
१९	१८	ardiance	radiance
२०	५	वइयम्	वइर्यम्
२०	८	जरथुन्त्र	जरथुश्त्र
३१	१५	वङ्हीम्	वङ्हीम्
४०	१९	घर्म	धर्म
४२	२६	अ	अवे०
४३	१९	स०	सं०
४३	२१	गात्र	गोत्र
५२	१	स०	सं०
५५	७	त०	तु०
६०	६	प्रा०	प्र०
६२	८	ह्व०	ह्व
७२	१६	अघ्रो	अघ्र्वो
७९	१६	परों	पैरों
१०१	११	गेथाम्यः	गेथाभ्यः
१०७	६	.फ्रदथॅम्	.फ्रदथॅम्
१३७	लाइन नं० ७	शस्याममि	शस्यामसि
१४९	१०	वे०	वे
१५१	२२	सं०	स०
१५२	२७	देखें	देखें
१५७	२	देखिगे	देखिये
१६५	१४	स०	सं०

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

श्रुतम् मे गोपाय